छठा नवीन संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण वर्ष १९८३



डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद

मिलिन्द—द्वारा लिखित

लोकप्रिय ऐतिहासिक नाटक

प्राचीन वैशाली के

जनतांत्रिक गणराज्य के संबंध में

जय स्वतंत्र जनतंत्र

समता प्रकाशन,

ग्वालियर-झाँसी-धौलपुर

डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द साहित्य माला—तीसरा पुष्प

अधिकृत प्रकाशक :

समता प्रकाशन,

- **नवीन भवन**, दाल बाज़ार, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)
- **श्री देवकीनन्दन कंचन भवन**, २७ गुसाईंपुरा, खत्रियाना मार्ग, झाँसी (उत्तरप्रदेश)
- **सर्वश्री मन्नीलाल गोपालदास भवन**, पुराना शहर बाजार, धौलपुर (राजस्थान)

प्रमुख विक्रेता :

क्रान्ति प्रकाशन,

- **डॉक्टर मिलिन्द भवन**, पश्चिम सदर बाजार, मुरार, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

मूल्य : पन्द्रह रुपए (सजिल्द पुस्तकालय संस्करण)

प्रथम संस्करण सन् १९६७ द्वितीय संस्करण सन् १९६७

तृतीय संस्करण सन् १९६९ चतुर्थ संस्करण सन् १९७१

पंचम संस्करण सन् १९७५

षष्ठ नवीन संशोधित एवं परिवर्धित संस्करण मई सन् १९८३

जय स्वतंत्र जनतंत्र (ऐतिहासिक नाटक)

मुद्रक :

सर्वोदय प्रिंटिंग प्रेस, बालाबाई बाजार, ग्वालियर (म. प्र.)

श्री लालाराम उपाध्याय की स्मृति में,

जिन्होंने मेरे प्रथम नाटक के पहले अभिनय में

प्रमुख पात्र की भूमिका ग्रहण की थी ।

भूमिका

प्राचीन भारत में वृष्णियों, कठों, शाक्यों, वैशालों, गांधारों आदि के अनेक महत्त्वपूर्ण जन-तांत्रिक गणराज्य हो चुके हैं, किंतु, हिंदी के प्रमुख ऐतिहासिक नाटकों में उनका उचित रूप में उल्लेख नहीं किया गया है।

प्राचीन भारत के वैशालिक लिच्छवियों के वज्जी-गणराज्य के संबंध में लिखित मेरा यह नाटक उपर्युक्त अभाव की पूर्ति की दिशा में मेरा एक विनम्र प्रयास है। आशा है, इसे मेरी अनधिकारचेष्टा न समझा जायगा, क्योंकि, मैं विगत पचास वर्षों से अधिक से नाटक-लेखक का कार्य करता आ रहा हूँ और यह मेरा छठा नाटक है।

चारित्र्यवान्, साहसी, वीर, भावुक तथा बुद्धिमान् मानवों के लिए जनतंत्र वैसी ही स्वाभाविक स्थिति है, जैसी मछलियों के लिए जल की स्थिति। किंतु, भारतीय इतिहास तथा इतिहासाधारित साहित्य में जनतंत्र को संस्कृति के प्रमुख आधार के रूप में उचित मात्रा में निरूपित नहीं किया जा सका है। अंग्रेजी साम्राज्यवाद की दासता के युग में भारतीय इतिहास-कारों का विदेशी इतिहासकारों से आवश्यकता से अधिक प्रभावित रहना स्वाभाविक ही था तथा विदेशी इतिहासकारों का ऐसे व्यक्तियों से अनु-प्राणित होना, जो प्रायः यह सोचते थे कि जनतंत्रव्यवस्था भारत के लिए अनुपयुक्त, विदेशी, अस्वाभाविक एवं विजातीय व्यवस्था है। इसका दुष्परि-णाम यह हुआ कि उस युग में ऐसे ऐतिहासिक अनुसंधानों को उचित प्रोत्साहन प्राप्त न हो सका, जिनकी उपलब्धियाँ निष्पक्ष भाव से भारत के प्राचीन जनतांत्रिक गणराज्यों का न्यायपूर्ण चित्र अभीष्ट परिमाण में तथा स्वस्थ परिप्रेक्ष्य के साथ प्रस्तुत करतीं।

मेरी संमति में, स्वतंत्र भारत में भी अभी तक इतिहासकारों को इसके लिए संतोषजनक प्रोत्साहन प्राप्त न हो सका है। फलतः, प्राचीन भारत की जनतांत्रिक व्यवस्था का इतिहास उचित विस्तार तथा स्पष्टता-

के साथ संसार के सामने न आ सका है। इतिहास-संगत सर्जनात्मक भारतीय साहित्य भी इस अभाव से पीड़ित है तथा युग के अनुरूप सांस्कृतिक आधार नहीं पा रहा है।

बीच के कुछ समय में नृपतंत्र-व्यवस्था को जो अतिरंजित महत्त्व प्राप्त हो गया, उसने प्राचीन भारत के जनतांत्रों के अवशेषों को धूमिल करने का प्रयत्न किया। साहित्य ने भी इस दृष्टि से इतिहास का अंधानुसरण किया। फलतः, स्थिति इतनी अधिक असंतोषजनक हो गई कि ऐतिहासिकता के नाम पर एकतांत्र, नृपतंत्र, चक्रवर्तित्व, साम्राज्यतंत्र आदि से प्रभावित साहित्य का स्वतंत्र भारत में भी अभी तक भारी बोलबाला नजर आता रहा।

प्रसन्नता का विषय है कि इधर कुछ इतिहासकारों ने भारतीय इतिहास के जनतांत्रिक अंग को उचित महत्त्व देना आरंभ किया है। इसका प्रभाव साहित्य पर पड़ना भी स्वाभाविक है तथा आशा है कि निकट भविष्य में इतिहासाधारित सर्जनात्मक साहित्य भी प्राचीन भारतीय जनतांत्रों की आभा से नया सांस्कृतिक आलोक ग्रहण करने लगेगा, अपनी एकांगिता की सीमा तोड़ेगा तथा परिणामतः उचित जनसमर्थन प्राप्त करेगा।

भविष्य की आशा की भावना ही से अनुप्राणित होकर मैंने अपना यह प्रयास, उचित प्रोत्साहन की स्वाभाविक आकांक्षा के साथ, साहित्य के अध्येताओं, समीक्षकों एवं अभिनय-प्रेमियों की सेवा में प्रस्तुत किया था।

इस नाटक का मूलाधार निस्संदेह ऐतिहासिक है। किंतु, मेरा यह दावा नहीं है कि इसका प्रत्येक पात्र तथा उसका प्रत्येक वाक्य पूर्णतया इतिहाससिद्ध है। इसमें कल्पना का भी सहारा लिया गया है।

अपने कुछ अन्य नाटकों की भाँति इस नाटक में भी मैंने केवल तीन अंकों का अवतरण किया है तथा प्रत्येक अंक में केवल एक दृश्य का। पात्रों की संख्या भी चौदह से अधिक नहीं होने दी है, जिनमें छह महिलाएँ हैं तथा आठ पुरुष। किसी भी दृश्य में ऐसी कोई सामग्री या क्रिया-कलाप प्रदर्शित नहीं किया है, जिसे कोई अल्प साधनोंवाली अभिनय-समिति एकत्रित या प्रदर्शित करने में असमर्थ रहे। मंचनिर्देशों के संबंध में भी मैंने अभिनयनिर्देशकों-

को लगभग पूर्ण स्वतंत्रता दे दी है, जिससे वे अपने साधनों तथा परिस्थितियों के अनुरूप व्यवस्था कर ले सकें। प्रकाशन के पूर्व इसका अवलोकन कुछ अभिनेता-मित्रों-से, अभिनेयता की दृष्टि से, करा लिया है। अभिनेयता का पूरा ध्यान रखते हुए भी इस नाटक का साहित्यिक तथा भाषासंबंधी स्तर इस योग्य रखा गया है कि यह साहित्यिक अध्ययन की सामग्री भी बन सके। किंतु, इसके भावी अभिनयआयोजकों को यह स्वतंत्रता देने में मुझे कोई आपत्ति नहीं है कि अभिनय के समय अपने-अपने क्षेत्र की आवश्यकता के अनुरूप वे इसकी भाषा में परिवर्तन कर लिया करें। उनसे इतनी आशा तो मैं रखूँगा ही कि वे अभिनय के पूर्व मेरी अनुमति ले लिया करेंगे।

नाटकों के पात्रों तथा पात्राओं की भाषा के संबंध में मैं अपना यह मंतव्य दोहराना चाहता हूँ कि देश, काल आदि की विभिन्नता को देखते हुए उनकी या दर्शकों की भाषा को नाटक की भाषा नहीं बनाया जा सकता; सुविधाजनक यही रहता है कि समूचा नाटक नाटककार ही की भाषा में लिखा जाय।

जैसा कि मैं अपने कुछ पिछले नाटकों की भूमिकाओं में स्पष्ट कर चुका हूँ, राष्ट्रीय रंगमंच के संबंध में मेरा स्वप्न ग्राम-ग्राम तथा नगर-नगर में व्याप्त विकेन्द्रीकृत जनमंच को विकसित देखने का है, जिसके संचालन की पूर्ण स्वतंत्रता प्रत्येक क्षेत्र के सांस्कृतिक-सुरुचि-संपन्न अभिनयमर्मज्ञों को हो तथा वे साधनों की आडंबरपूर्णता के कारण अर्थसंपन्न अरसिकों के दास न बनें। ऐसे रंगमंच के उपयुक्त वही नाटक हो सकता है, जिसके अभिनय में यथासंभव न्यूनतम धनव्यय हो। अधिकतर इसी दृष्टिकोण से मैं अपने नाटक लिखने का यत्न करता हूँ। साथ ही मैं अपने प्रत्येक नाटक में भारत के अपने सांस्कृतिक नैतिक मूल्यों का भी ध्यान रखता हूँ।

मैंने इस नाटक को एक राष्ट्रीय आवश्यकता की पूर्ति के एक विनम्र प्रयास के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया। उचित सांस्कृतिक स्तरवाले अभिनय-आयोजक, साहित्यिक अध्येता तथा समीक्षकों ने इसे भी अपना

स्वाभाविक स्नेह उसी प्रकार प्रदान करने की कृपा की, जिस प्रकार वे मेरे कतिपय पिछले नाटकों को करते आए।

इतिहासाधारित सर्जनात्मक साहित्य में भारत के प्राचीन राजतंत्रों के प्रति जितना आकर्षण दृष्टिगोचर होता है, उतना प्राचीन भारतीय जनतंत्रों के प्रति नहीं। इस एकांगिता का रूढ़िभंजन एक साहसपूर्ण कार्य था, जिसे मैंने नम्रतापूर्वक करने का प्रयास किया। मेरा यह 'जय स्वतंत्र जनतंत्र' नाटक इस दिशा में मेरा एक साहित्यिक चरण है। इसके अनेक संस्करणों का प्रकाशन मेरे इस प्रयास के प्रति पाठकों की सद्भावना व्यक्त करता है। उससे प्रोत्साहित होकर मैंने इस नाटक के नवीनतम संस्करण में प्रचुर संशोधन, परिवर्तन तथा परिवर्धन करके इसे अद्यतन स्वरूप देने का प्रयास किया है। आशा है, वर्तमान तथा भावी स्वतंत्र भारतीय जनतंत्र के रक्षक भारतीय युवक तथा युवतियाँ इससे अपने अतीत के जनतांत्रिक गौरव का अनुभव करेंगे।

एक मानव के नाते मैंने इसे अपना नैतिक कर्तव्य माना कि मैं स्वतंत्रता और समता, दोनों, के लिए इस देश में हुई दो महान् जनक्रांतियों में सक्रिय भाग लेकर, जेलों की, सन् १९४२ से सन् १९६८ तक, छह वार यातनाएँ सहन करूँ, अर्थकष्ट सहन करूँ और प्रायः स्वतंत्र लेखन के अतिरिक्त आजीवन और कोई जीवननिर्वाह का साधन नहीं पा सकूँ। किंतु, इन सब यंत्रणाओं में से स्वाभिमानी आत्मसंतोष का कुछ अमृत-नवनीत निकला। एक उपलब्धि यह हुई कि कुछ महापुरुषों का कुछ संपर्क मुझे प्राप्त हो सका और दूसरी यह कि मैं बाईस ऐसी पुस्तकें लिख सका, जिनमें से प्रायः प्रत्येक के अनेक संस्करण प्रकाशित हो सके। यदि उनमें से प्रत्येक की विक्रीत प्रतियों की ठीक संख्या मुझे ज्ञात हो सकी होती और उन सब पर मुझे निर्धारित दर से पूर्ण स्वत्वशुल्क प्राप्त हो सका होता, तो, स्वतंत्रता-संग्राम-सैनिक की प्राप्य पेन्शन लेना अस्वीकार कर चुकने पर भी, मेरी आर्थिक स्थिति ऐसी होती कि मैं आर्थिक दृष्टि से यंत्रणामुक्त होता।

साहित्यसाधना को संपूर्ण जीवन समर्पित करने के कारण मेरी समस्त पुस्तकें लोकप्रिय हुईं। किंतु, मैं अनेक वर्षों तक कतिपय पुराने प्रकाशकों की शोषणवृत्ति का शिकार बना रहा। लेखन के अतिरिक्त अन्य जीवन-धारण-साधन नहीं होने के कारण मुझे आर्थिक कष्ट सहने पड़े। किंतु, वह स्थिति अब बदलने लगी है। अभिनव प्रकाशन-योजना का आरंभ हुआ है। इसके अन्तर्गत अल्प समय ही में समता प्रकाशन ग्वालियर तथा क्रांति प्रकाशन मुरार ग्वालियर ने पाठकों की अश्लीलता से तथा मेरी शोषण से रक्षा करने के अपने संकल्प की पूर्ति में सफलता प्राप्त की है। अतः, समता प्रकाशन ग्वालियर तथा क्रांति प्रकाशन मुरार ग्वालियर को मैंने अपनी समस्त पुस्तकों का अधिकृत प्रकाशक नियुक्त किया है।

श्री आनंदविहारी जी मिश्र तथा श्री हरनारायण जी उपाध्याय ने शोषणमुक्ति के इन प्रयासों में उदारतापूर्वक जो सहायताएँ दीं, उनके लिए मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

लेखकों के हितों की रक्षा की दृष्टि से लोकशिक्षण-संचालनालय मध्यप्रदेश के द्वारा नियम निर्धारित किया जा चुका है। इसके अन्तर्गत विशेष क्रय पर पुस्तकों के मुद्रित मूल्य पर बीस प्रतिशत रॉयल्टी लेखकों को देना अनिवार्य कर दिया गया है। समाज-शिक्षा, राजस्थान ने भी लेखकों को रॉयल्टी देना अनिवार्य कर दिया है। ग्वालियर-विश्वविद्यालय की कार्य-परिषद् ने श्री रामकृष्ण जी दीक्षित के संयोजकत्व वाली समिति के प्रतिवेदन को मान्य करके उस समिति के सुझावों को कार्यान्वित करने का निर्णय किया है, जिसमें लेखकों को रॉयल्टी का पूरा भुगतान किया जाना आवश्यक बताया गया है। इन निर्णयों से लेखकों को शोषण से मुक्त कराने में सहायता मिली है।

ग्वालियर, —जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

१७ मई सन् १९८३

पात्र-सूची

महिलाएँ

आम्रपाली—वैशाली (वृजि) के जनतांत्रिक गणराज्य की श्रेष्ठ नृत्य-गान-कला-सुंदरी

अजिता—जनतंत्र के प्रधान सेनापति की पुत्री

कोकिला—आम्रपाली की सहचरी

शोभा, **कमला**—मगध-साम्राज्य की राजनर्तकियाँ और गायिकाएँ

दुर्गा—मगध सैनिक सूर्यपाल की पत्नी

पुरुष

सुनंद—वैशाली के लिच्छवि-गणतंत्र का राष्ट्राध्यक्ष

सुमन—वृजि (वज्जी) प्रदेश के उक्त लिच्छवि-गणराज्य का प्रधान-सेनापति

रणवीर—आम्रपाली का रक्षाध्यक्ष

बिंबसार—मगध-साम्राज्य का सम्राट्

वर्षकार—बिंबसार का महामंत्री

चंडभद्र—बिंबसार का प्रधानसेनापति

सुवीर—चंडभद्र का पुत्र

सूर्यपाल—मगध सेना का एक सैनिक

प्रथम अंक

[प्राचीन भारत के वृजि (वज्जी) गणसंघ के लिच्छवि-जनतंत्रराज्य की राजधानी वैशाली के एक प्रमुख भाग में संगीत-सुंदरी आम्रपाली का नृत्य-गान-कला-साधना-कक्ष । प्रातःकाल । आम्रपाली और कोकिला साधना-उपासना की मुद्रा में । आम्रपाली गौरवर्णा और कोकिला किंचित् श्यामल-वर्णा सुंदरी है । कोकिला का गान ।]

कोकिला—जय हो जन की, जय जन-गण की,
जय गणतंत्र-संघ-शासन की,
साम्राज्यों के आक्रमणों के
शूल न नष्ट जिसे कर पाते,
शतदल-कमल-सदृश सब जन-दल
जिसके निज छवि हैं दिखलाते,
जिसमें मुक्ति सुरक्षित सबकी,
रक्षा तन-मन-धन-जीवन की,
जय हो जन की, जय जन-गण की,
जय जनतंत्र-संघ-शासन की,
उच्चादर्शों की रवि-किरणें
जिसको प्रतिदिन बल देती हैं,
बहुजन-हित-आशाएँ जिससे
प्रबल प्रेरणाएँ लेती हैं,
जिसपर प्राण निछावर करना
सार्थकता उज्ज्वल यौवन की,
विश्वशांति—जगमंगल—कांक्षा
जिसके जीवन का गौरव है,

न्याय-सत्य-आस्था चिर-अविचल
जिसके प्राणों का वैभव है,
जय हो जन की, जय जन-गण की,
जय जनतंत्र-संघ-शासन की !

आम्रपाली—सखी कोकिला, तुम्हारे इस नियमित तथा उज्ज्वल-प्रेरणादायक प्रभात-संगीत से मेरा हृदय प्रतिदिन पुष्प की भाँति खिल उठता है; मेरे प्राणों का प्रत्येक अणु प्रोत्साहित हो उठता है। प्रकृति ने तुम्हारे शरीर के रंग पर कोयल के रंग की किंचित् छाया डालकर जहाँ तुम्हारे साथ कुछ अन्याय किया है, वहाँ उसने तुम्हें कोयल का स्वर देकर पर्याप्त न्याय भी किया है।

कोकिला—केवल नाम-साम्य से स्वर-साम्य कैसे संभव है ?

आम्रपाली—मेरे कथन में सत्य है। तुम्हारे संगीत में न केवल सरस माधुर्य है, वरन्, आत्मा को जाग्रत करने की प्रखर उद्‌बोधक शक्ति भी है। वह गणतंत्र-प्रेम की स्वाभाविक भावना को, जनतंत्र के ममत्व-गौरव को प्रेरक प्रोत्साहन देता है। कोयल की आत्मगोपन की प्रवृत्ति, उसका शील और उसका दूसरों की दृष्टि से ओझल रहकर गाने में व्यक्त संकोच भी तुम्हें उचित मात्रा में प्राप्त हुआ है। मैं तुम्हें संगीत की अनुपम रस-वर्षा के लिए हार्दिक साधुवाद देती हूँ।

कोकिला—जनपद-कल्याणी महादेवी आम्रपाली, यह मुझपर आपकी असीम कृपा है कि आप ऐसा कह रही हैं। आपने वास्तव में मुझे अपने उदार हृदय का निश्छल स्नेह और वात्सल्य देकर कृतार्थ कर दिया ; अन्यथा, मगध-साम्राज्य की राजधानी राजगृह के अपने दासता के जीवन से ऊबकर वृजि-गणराज्य-संघ के लिच्छवि-जनतंत्र की राजधानी इस वैशाली में शरण लेकर भी मैं जीवनभर यहाँके किसी महत्त्वहीन घर में परिचारिका का कार्य ही करती रहती।

आम्रपाली—यह कैसे हो सकता था !

कोकिला—आपने मुझे स्नेह ही नहीं दिया, शिक्षा भी दी, संस्कार भी दिए और इस प्रकार मुझे धरती की धूल से उठाकर एकदम आकाश में चढ़ा दिया। मैं आपके ऋण से कभी उऋण नहीं हो सकती।

आम्रपाली—मुझे इसका कोई श्रेय नहीं है कोकिला! तुमपर प्रकृति के वरदान की उदार वर्षा और तुम्हारी सतत और कठोर साधना ही ने तुम्हें वैशाली की महती संगीतकलांगना बनाया है। कभी-कभी किंचित्-श्यामल वर्ण का रत्न अत्यंत श्वेत वर्ण के रत्नों से कई गुना अधिक मूल्यवान् होता है। तुम्हारे साथ भी यही हुआ है।

कोकिला—किसी रत्न से मेरी क्या तुलना हो सकती है!

आम्रपाली—अपनी प्रबल आत्मप्रेरणा ही ने तुम्हें मगध-साम्राज्य के दासता के घृणित और कठोर बंधनों के जीवन से मुक्ति दिलाई और अपने महान् गुणों ही ने तुम्हें वैशाली में परिचारिका की वृत्ति की सीमा से मुक्त करके अभिन्नहृदय सखी का स्थान दिलाया। मैं गौरवान्वित हूँ कि मैंने तुम्हारे रूप में अपने इस आवास में संसार का एक अत्यंत मूल्यवान् नारी-रत्न पाया।

कोकिला—इस प्रकार मुझे लज्जित न कीजिए महादेवी! यह लिच्छवि-गणतंत्र की महत्ता है, इस जनतंत्र की उदार भावना है कि उसने मगध की मुझ-जैसी एक दासकन्या को भी अपनी शरण में लेकर मुक्त बनाया और यह आपकी कृपा है कि आपने मुझे परिचारिका के स्तर से उठाकर अपनी विश्वस्त सखी का पद प्रदान किया। मुझे संगीत और शील के जो थोड़े-से लघु कण प्राप्त हुए हैं, वे सब आप ही के तो दिए हुए हैं, आप ही की कृपा के फल हैं। मैं आज जो कुछ हूँ, आपकी सृष्टिमात्र हूँ। मेरी प्रशंसा करके आप अपनी ही प्रशंसा करती हैं।

आम्रपाली—तुमने अपने श्रेष्ठ संगीत को, अपने शील-संकोच के कारण, इतना दुर्लभ और बहुमूल्य बना लिया है कोकिला, कि उसे मेरे अतिरिक्त और कोई कभी सुन ही नहीं पाता, शत-शत मुद्राएँ प्रस्तावित करके

भी नहीं, अनेक चाटुवचन कहकर भी नहीं। तुमने अपनी कला के रसास्वादन का एकाधिकार केवल मुझे दिया है। इससे मेरा गौरव बहुत अधिक बढ़ गया है।

कोकिला—गौरव तो मेरा बढ़ा है।

आम्रपाली—प्रतिदिन प्रातःकाल इस एकांत में अपने प्रेरक गीत सुनाकर तुम मुझे जो आनंद, प्रोत्साहन और प्रेरणा देती हो, उससे मेरे जीवन का प्रत्येक दिन वास्तविक रूप में आनंदमय हो उठता है। तुम मेरी प्रेरणा-स्रोत हो कोकिला; तुम्हारे कंठस्वर से प्रमुदित होकर मैं अपना प्रतिदिन का कर्तव्यपालन सम्यक् रूप में करती हूँ। दीर्घकाल तक अहर्निश एकांत साधना-कक्ष में तुमने जो संगीत का सतत अभ्यास किया है, उसके कारण तुमने वैशाली की समस्त संगीत-पारंगत महिलाओं को पीछे छोड़ दिया है।

कोकिला—आप ही मेरी कलागुरु हैं महादेवी ! मैं पुनः कहती हूँ कि संगीतकला के क्षेत्र में मेरा जो कुछ है, वह सब आप ही का है। आपके अतिरिक्त और किसीके सामने मेरा कंठस्वर नितांत अवरुद्ध हो जाता है। वह केवल एकांत में मुखरित होता है और एकमात्र आप ही के सामने। एकमात्र आपका प्रोत्साहन ही मेरी चरम कला-सीमा है। उसे लाँघने का साहस मुझमें नहीं है।

आम्रपाली—इस एकांत साधना-कक्ष में प्रत्येक प्रभात में तुम्हारी प्राणप्रद स्वरज्योति से ज्योतित होकर मैं अपने गानों और नृत्यों से प्रतिदिन अपने सभाभवन की संध्या की सार्वजनिक सभाओं में जो शत-शत लिच्छवि-वीरों को प्रमुदित और प्रोत्साहित करती हूँ, वह केवल इसलिए कि वे अपने प्रिय वैशाली-गणतंत्र की, अपने मूल्यवान् जनतंत्र की रक्षा और उन्नति के लिए अपना सर्वस्वबलिदान करने का उत्साह, आह्लाद और उन्माद अपने अंदर अक्षय, अजर और अमर बनाए रहें।

कोकिला—यह आपका महान् वरदान है !

आम्रपाली—अपने इस कर्तव्यपालन से मुझे जो आनंद मिलता है, वह अनिर्वचनीय है, संसार की समस्त संपदा से अधिक मूल्यवान् है और मेरे

जीवन की सबसे बड़ी सार्थकता है। इस सबकी प्रेरणा के मूल में प्रत्येक प्रभात की तुम्हारी इस कला-उपासना का प्रोत्साहन है, तुम्हारे गान का संबल है। इसे क्षुद्र नहीं समझा जा सकता। मैं पुनः कहती हूँ कि यह मेरा वास्तविक शक्तिस्रोत है।

कोकिला—आपने मुझे एकांत में जलनेवाला साधना का एक छोटा-सा दीपक बनाया है और उसे लज्जित करने के लिए आप उसकी प्रशंसा करती हैं। आप एक महान् प्रकाश-पुंज हैं, ज्योति की महिमामयी मशाल हैं, जिससे आज इस लिच्छवि-गणतंत्र के सहस्र-सहस्र बलिदानी वीरों के हृदय ज्योतित, प्रोत्साहित और प्रफुल्लित हैं। मानवता के एक महान् रत्न के रूप में आपनेवैशाली को वास्तवमें गौरवान्वित किया है। कितने वीरों को आपने इस स्वतंत्र जनतांत्रिक गणतंत्र की रक्षा के लिए स्वेच्छा से आत्म-त्याग और सर्वस्वबलिदान करने को तत्पर रहने को प्रोत्साहित किया है! यदि आप न होतीं, तो चारों ओर के लोलुप और दुष्ट एकतंत्र राज्यों से घिरा हुआ यह महान् गणतंत्र कभी का नष्ट हो जाता, उनकी भीषण साम्राज्यलिप्सा का भक्ष्य बन जाता।

आम्रपाली—वास्तविक जनतंत्र कभी नष्ट नहीं हुआ करते हैं कोकिला! वे उस कृषि की भाँति होते हैं, जो भीषण वज्रपात का आघात सहन करने पर भी समय पाकर फिर लहराने लगती है। इसके विपरीत, एकतंत्र राज्य उस गिरिशिखर के समान होते हैं, जो वज्राघात से चूर्ण होने के बाद पुनः कभी पूर्वस्थिति को प्राप्त नहीं कर पाते। वैशाली के वीर तरुणों में अपने गणराज्य की रक्षा करने की अजेय और गंभीर शक्ति है। उनकी एक और अपनी विशेषता है।

कोकिला—वह क्या?

आम्रपाली—वह यह कि उनके हृदय अत्यंत भावुक हैं। वे अपनी कठोर रणवीरता की भावना को कला के रस से सरस बनाए रहना चाहते हैं। इसमें मैं उनकी कुछ सहायता करने का यत्न करती हूँ। यही मेरी उपा-

देयता है, यही मेरी कृतकृत्यता है, यही मेरी सार्थकता है, यही अपने प्रिय लिच्छवि-जनतंत्र के चरणों में मेरी आराधना का एक विनम्र लघु पुष्प है। मेरे पास और कुछ नहीं है। अपने इस सारे धनवैभव के रहते हुए भी, जो वैशाली के नागरिकों ही का उदार दान है, मैं एक अकिंचन नारी-मात्र हूँ। मेरा जीवन भीतर और बाहर, सर्वत्र, एक महाशून्य की भाँति है। जीवन के एकांत क्षणों में मैं अपने को त्रस्त और अभिशप्त अनुभव करती हूँ।

कोकिला—अभिशप्त ?

आम्रपाली—हाँ, अभिशप्त ! यह अभिशाप नहीं, तो, क्या है कि मेरे केवल सर्वश्रेष्ठ सुंदरी समझी जाने ही के कारण मेरे गणराज्य ने, अपनी अनुचित परंपरा के अनुसार, मुझे व्यक्तिगत विवाहित-गृहस्थजीवन के सात्त्विक-स्वाभाविक सुख से सदा के लिए वंचित करके केवल सार्वजनिक संगीतकलाप्रदर्शन के कर्तव्यपाश में आबद्ध कर दिया ? यह बंधन मेरे हृदय को आरंभ में इतना असह्य हुआ कि मैंने आत्महत्या तक करने की इच्छा की।

कोकिला—आत्महत्या ?

आम्रपाली—हाँ ! किंतु, मैंने किसी प्रकार आत्मसंवरण कर लिया, महाश्रमण तथागत गौतम बुद्ध के सिद्धांतों के उपदेशों की ख्याति सुनकर मैंने उनकी तितिक्षा की साधना का नीरव व्रत ग्रहण कर लिया और उसके माध्यम से अपने व्यक्तिगत अभाव की वेदना के हलाहल-विष को, कालक्रम से, पूर्णतया पचा लिया। किंतु, जीवन में एक शून्य तो रह ही गया है, जिसे तुम पूर्ण करती हो। मैं सत्य कहती हूँ, मेरी प्रिय कोकिला, कि तुम्हीं मेरे जीवन का एकांतजनित भीषण शून्य अपने सरस और पावन संगीत से भरती हो। यदि तुम न होतीं, तो, मेरा क्या होता, मैं नहीं जानती !

कोकिला—यह न भूलिए महादेवी, कि मैं इस योग्य न थी। मगध में मैं एक दासी-मात्र..........................

आम्रपाली—दासी ? दासी अकेली तुम न थीं। मगध-साम्राज्य की सीमा में निवास करनेवाली प्रत्येक स्त्री और प्रत्येक पुरुष दासी और दास

था और है, क्योंकि, उन्हें अपने शासक चुनने की स्वतंत्रता नहीं है। एकतंत्र साम्राज्य में केवल एक ही व्यक्ति स्वतंत्र होता है और वह होता है सम्राट्; शेष सभी वहाँ दास होते हैं। वास्तव में तो वहाँ सम्राट् भी दास ही होता है।

कोकिला—सम्राट् किसका दास होता है ?

आम्रपाली—सम्राट् अपनी लिप्साओंका दास होता है, अपने सामंतों के कुचक्रों और चाटुकारिता का दास होता है। साम्राज्य के प्रजाजनों में वे लोग दोहरे दास होते हैं, जिनके, शरीर ही नहीं, आत्माएँ भी, दासता के कर्दम में डूब चुकी होती हैं। किंतु, जिनकी आत्माएँ बंधनों में भी मुक्ति के लिए निरंतर छटपटाती रहती हैं, वे शरीर से दास होकर भी आत्मा से मुक्त होते हैं। दास जीवन में भी तुम्हारी आत्मा में स्वतंत्रता-प्राप्ति की आकांक्षा की वास्तविक तड़पन थी, जो जनतंत्र का मूलाधार होती है।

कोकिला—केवल आकांक्षा से क्या होता है ?

आम्रपाली—केवल आकांक्षा ही नहीं, प्रयत्न भी थे। तुमने प्रयत्नपूर्वक मगध का परित्याग करके वैशाली को अपनाया, साम्राज्य को छोड़कर जनतंत्र का वरण किया। अपने वैशाली-निवास को भी तुमने अपनी निष्ठा से जगमगा दिया है ! आज तुमसे बढ़कर वैशाली-गणतंत्र का वास्तविक हितैषी और कौन है ?

कोकिला—गणतंत्र की जनपदकल्याणी, वैशाली की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी, सर्वोपरि कलानेत्री, कुशलतम और सरसतम गायिका और अद्वितीय नृत्यांगना के रूप में आपको जो विपुल यश, वैभव और संपदा प्राप्त हुई है, उसका आपकी आत्मा पर कोई अशिव प्रभाव नहीं पड़ा प्रतीत होता है। आपकी भावनाएँ बहुजनहित और बहुजन-सुख की ओर उन्मुख तथा जन-कल्याणमयी हैं और आपकी प्रवृत्ति त्यागमयी है। वैशाली-जनतंत्र की आप इतनी अचल और अक्षय शक्ति हैं कि भविष्य में इतिहास ही आपका उचित मूल्यांकन कर सकेगा। आपकी उदारता ने आपके सारे सद्गुणों पर तिलक लगा दिया है। तभी आप मुझ-जैसी अकिंचन को इतना प्रोत्साहन देती हैं !

आम्रपाली—सच कहती हूँ कोकिला, कभी-कभी मेरे मन में आता है कि मैं अपनी इस समस्त संपत्ति का दान करके क्षण-भर में सदा के लिए महाश्रमण तथागत गौतम बुद्ध के धर्म के संघ की शरण में चली जाऊँ और एक भिक्षुणी के रूप में प्रव्रजन के महासागर में अपने को विलीन कर दूँ। किंतु, फिर सोचती हूँ कि अभी इसका समय नहीं आया है। मगध-साम्राज्य भूतकाल में वैशाली-गणतंत्र से अनेक बार पराजित होकर भी अभी तक सदा के लिए हमारी ओर से युद्धविरत नहीं हो पाया है। मेरा कार्य अभी शेष है।

कोकिला—क्या पुनः वैशाली पर मगध के आक्रमण की संभावना है ?

आम्रपाली—हाँ, है। और जब तक मगध के सम्राट् बिंबसार के द्वारा वैशाली-गणराज्य पर आक्रमण की संभावना है, तब तक मैं प्रव्रज्या ग्रहण नहीं कर सकती; अपने गणतंत्र के वीर तरुणों को नीरस, निराश, निरुत्साह, निर्बल और निरानंद नहीं बना सकती। मुझे सर्वश्रेष्ठ सुंदरी मानकर, मेरे राष्ट्र ने जब मुझे इस कार्य के लिए चुना है कि मैं आजीवन अविवाहित रहकर राष्ट्र के नागरिकों को अपनी कला से प्रोत्साहित और प्रमुदित करती रहूँ, तब मुझे यह कर्तव्यपालन अभी तो करना ही है। हाँ, सम्राट् बिंबसार के आक्रमण की आशंका से मुक्ति पाते ही मैं, अपने जनगण की अनुमति लेकर, अवश्य ही बौद्ध भिक्षुणी बन जाऊँगी। यह मेरा दृढ़ निश्चय है। मैं सर्वबंधनमुक्त होने का यत्न तभी कर सकती हूँ, जब किसी प्रकार सम्राट् बिंबसार की साम्राज्यलिप्सा शांत हो।

[बिंबसार का प्रवेश।]

बिंबसार—यह बिंबसार स्वयं यहाँ उपस्थित है देवि आम्रपाली ! आप मेरी साम्राज्य-लिप्सा की चर्चा कर रही थीं। किंतु, वह बात अब पुरानी पड़ गई है। अब न तो आपको और न वैशाली को मुझसे कोई भय या आशंका होनी चाहिए। अब मैं स्वयं भी तथागत गौतम बुद्ध का अनुयायी बन चुका हूँ। अब मैं किसीपर कभी कोई आक्रमण नहीं कर सकता।

आम्रपाली—आप यहाँ कैसे पहुँच सके मगध के सम्राट् बिंबसार ?

बिंबसार—मैं इस समय नितांत निश्शस्त्र हूँ। आप मेरी इस स्थिति को देखकर मुझपर विश्वास कीजिए और मुझे एकांत में अपने इस प्रश्न का उत्तर देने का अवसर दीजिए !

[आम्रपाली बिंबसार की ओर देखकर कोकिला को प्रस्थान का संकेत करती है। संकेत को समझकर कोकिला का प्रस्थान।]

आम्रपाली—सत्य तो यह है कि सम्राट् और सर्प कभी विश्वास के योग्य हो ही नहीं सकते।

बिंबसार—विशेष स्थिति में हो सकते हैं। दंतरहित और विषहीन सर्प और शस्त्रास्त्रहीन एवं निष्कांचन सम्राट् पर तो विश्वास किया ही जा सकता है। आप भी मुझपर विश्वास कर सकती हैं।

आम्रपाली—अपने आकस्मिक आगमन का अभिप्राय बताइए और मुझे यह भी जानने दीजिए कि रणवीर-जैसे मेरे अत्यंत विश्वस्त रक्षाध्यक्ष के नेतृत्व में रक्षा-प्रहरियों की बड़ी संख्या के मेरे इस भवन के चारों ओर सन्नद्ध होते हुए भी आप निश्शस्त्र रूप में इसमें कैसे आ सके मगध-सम्राट् !

बिंबसार—इस समय यह भूल जाओ, आम्रपाली, कि मैं सम्राट् हूँ। इस निष्ठुर संबोधन को बार-बार न दोहराओ ! इस समय तुम्हारे सामने मैं एक मानव-मात्र हूँ, सम्राट् या सेनानायक नहीं। मैंने मानवता के नाते तुमपर विश्वास किया है। यह विश्वास मेरा महान् संबल है। महाश्रमण तथागत भगवान् गौतम बुद्ध पर आस्था और स्थानकालातीत कला की महादेवी आम्रपाली पर विश्वास, इन्हीं दो पाथेयों ने मुझे प्रेरित किया है कि मैं तुम्हारे संमुख इस रूप में उपस्थित हूँ।

आम्रपाली—किंतु, किसलिए ?

बिंबसार—बताता हूँ !

आम्रपाली—शीघ्र बताइए !

बिंबसार—सुनो आम्रपाली ! मैं बहुत वर्षों से सुनता आ रहा था कि तुम कला, संगीत, संस्कृति और सौंदर्य की मूर्तिमती देवी हो। तुम्हारे

अलौकिक सौंदर्य के मात्र दर्शन, संगीत के श्रवण, नृत्य के अवलोकन और उच्च संस्कृति के सौरभ के निर्मल संपर्क की इच्छाएँ मेरे जीवन की अदम्य आकांक्षाएँ बन गई थीं। अपने साम्राज्य की समस्त संपदा और शक्ति के द्वारा भी मुझे अपनी उन आकांक्षाओं की पूर्ति संभव नहीं प्रतीत होती थी। वैशाली जनतंत्र के लक्षावधि वीर और राष्ट्रभक्त तरुणों के रक्षा-कवच से सम्यक् रूप में परिवेष्टित आम्रपाली मेरे लिए नितांत दुर्लभ थी। अतः, मैंने इसके लिए साधना का पथ अपनाने का निश्चय किया।

आम्रपाली—'साधना' शब्द को क्यों कलंकित करते हो सम्राट् !

बिंबसार—फिर कहा 'सम्राट्' ! मुझे इस प्रकार बार-बार सम्राट् कहना छोड़ो ! क्या तथागत गौतम बुद्ध के धर्म का अनुयायी होना साधना नहीं है ? क्या अपने प्राणों की रक्षा का कोई उपाय न करते हुए नितांत निश्शस्त्र होकर कला के एक उपासक के मानवीय रूप में यहाँ पहुँचना साधना नहीं है ? मैं तुम्हें आश्वासन देता हूँ, आम्रपाली, कि मैं अब कभी वैशाली पर आक्रमण न करूँगा, सच्चे हृदय से भगवान् बुद्ध के धर्म का अनुसरण करूँगा और तुम्हारी इच्छा के विरुद्ध कोई ऐसा आचरण न करूँगा, जिसे तुम अनुचित समझो।

आम्रपाली—अच्छा, यह तो बताओ कि तुम यहाँ कैसे पहुँच सके !

बिंबसार—यह भी दीर्घ साधना की एक मार्मिक कहानी है। अनेक वर्षों से मैं अपने अत्यंत विश्वासपात्र शिल्पियों द्वारा, प्रचुर धन व्यय करके, एक ऐसे भूगर्भ-मार्ग का गुप्त रूप से निर्माण करा रहा था, जो राजगृह-नगर के मेरे वासस्थान को वैशाली के तुम्हारे इस वासस्थान से जोड़ दे और किसीको उसका किंचित् भी पता न चलने पावे। अंततः, मैं उसमें सफल हुआ और उसीसे रातों-रात चलकर चुपचाप अकेला यहाँ आ पहुँचा हूँ।

आम्रपाली—वैशाली की एक सामान्य नारी के लिए भूगर्भ-मार्ग के गुप्त निर्माण में मगध-साम्राज्य के कोष के इतने धन का दुरुपयोग भविष्य में इतिहास में तुम्हारा अक्षम्य अपराध माना जायगा।

बिंबसार—न तो तुम सामान्य नारी हो और न नारी के प्रति कलुषित आकर्षण से प्रेरित होकर मैंने यह दुस्साहस किया है । मैं यह भली-भाँति जानता हूँ कि मैं एकाकी और निश्शस्त्र रूप में इस समय तुम्हारे ऐसे भवन में उपस्थित हूँ, जो चारों ओर से सशस्त्र, सशक्त और वीर रक्षाप्रहरियों द्वारा एक सुदृढ़ दुर्ग की भाँति घिरा हुआ है । यदि तुम चाहो तो, मैं, राजगृह लौटने के लिए भूगर्भ-मार्ग में प्रविष्ट होने के पहले ही क्षण-भर में मौत के घाट उतार दिया जा सकता हूँ । मैं एक आदर्श बौद्ध बनना चाहता हूँ, सच्चे हृदय से तथागत के मैत्री, करुणा और शांति के मार्ग पर चलना चाहता हूँ । साम्राज्य-विस्तार के लिए आक्रमण की नीति मैं छोड़ना चाहता हूँ । मैं, अपने इसी संकल्प से प्रेरित होकर, निर्मल हृदय लेकर ही, यहाँ आया हूँ !

आम्रपाली—सत्य कह रहे हो ?

बिंबसार—पूर्णतया सत्य ! यह अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य है आम्रपाली ! तुम इस कार्य में मेरी प्रेरक शक्ति बन सकती हो । तुम इसमें मेरी सहायता करो ! मेरे इस विश्वास का मूल्यांकन करो कि मैं अपने प्राणों को हथेली पर रखकर अत्यंत असुरक्षित रूप में तुम्हारे साधना-कक्ष में आ खड़ा हुआ हूँ । एक साधक ही ऐसा कर सकता है; कोई सम्राट्, सेनापति या आक्रमण-कारी नहीं । यदि तुम अधिक सतर्क निरीक्षण करना चाहो, तो, भूगर्भ-मार्ग का परीक्षण करा सकती हो । उसमें एक भी सैनिक नहीं है !

आम्रपाली—क्या तुम मुझे बिलकुल सच्चे हृदय से विश्वास दिला सकते हो कि तुम तथागत गौतम बुद्ध के वास्तविक अनुयायी बन चुके हो, साम्राज्य-विस्तार की आकांक्षा को तुमने बिलकुल छोड़ दिया है और तुम अब कभी वैशाली-गणतंत्र पर आक्रमण करने का विचार न करोगे !

बिंबसार—ऐसा ही है आम्रपाली ! आक्रमण करने से कोई लाभ भी तो नहीं होता । मगध के एकराजतंत्र ने वैशाली के स्वतंत्र जनतंत्र पर भूतकाल में भी अनेक आक्रमण किए थे, किंतु, मागध सैनिक वैशालिक वीरों-

से सदा पराजित ही हुए । यदि गणतंत्र का लक्ष्य भी राज्य-विस्तार ही होता, तो, मगध अभी तक कभीका वैशाली में विलीन होकर अस्तित्वहीन हो चुका होता । वैशाली के गणतंत्र ने विजय प्राप्त करके भी पराजित मगध के राजतंत्र की सीमा को बिलकुल अक्षुण्ण छोड़ दिया । वैशाली ने यह कार्य अपने उस गौरव के अनुरूप ही किया, जो उसे भगवान् वर्धमान महावीर स्वामी की जन्म-भूमि और महाश्रमण तथागत गौतम बुद्ध की स्नेह-भूमि के रूप में प्राप्त हुआ है ।

आम्रपाली—तुम्हारी इन बातों से तुमपर विश्वास करने की इच्छा होती है । देखो, विश्वासघात न करना ! विश्वासघात मानव का सबसे बड़ा पातक होता है ।

बिंबसार—पूर्ण आश्वस्त रहो आम्रपाली ! मैं इन दिनों प्रतिदिन अपनी राजधानी राजगृह के निकटवर्ती गृध्रकूट पर्वत के तल से पैदल चलकर उसके शिखर पर जाकर वहाँ भगवान् गौतम बुद्ध के दर्शन करता हूँ और उनका पवित्र आशीर्वाद और अनुशासन प्राप्त करता हूँ । शास्ता का कल्याणकारी करपल्लव मेरे मस्तक का प्रतिदिन स्पर्श करता है । तुम्हारे और वैशाली के साथ विश्वासघात करना तथागत और उनके सिद्धांतों के साथ विश्वासघात करना होगा । भूतकाल में मुझसे भूलें हुई हैं । मैं स्वीकार करता हूँ कि मैंने वैशाली के गणतंत्र पर आक्रमण करके भयानक अपराध किया था । किंतु, उस अपराध पर पश्चात्ताप और उसका प्रायश्चित्त मैं भगवान् बुद्ध की शरण में जाकर कर चुका हूँ । सब जानते हैं कि तथागत वैशाली गणतंत्र के प्रशंसक हैं । वैशाली पर आक्रमण करने पर वह मुझे कभी क्षमा नहीं करेंगे ।

आम्रपाली—अच्छा, अब तुम अपनी इस गुप्त यात्रा का वास्तविक प्रयोजन बताओ ! बिलकुल सत्य कहो ! असत्य को मैं लेशमात्र भी सहन नहीं कर सकती ।

बिंबसार—मैं कह तो चुका कि तुम्हारा निर्मल सौंदर्यदर्शन, संगीत-

श्रवण, नृत्य-अवलोकन और तुम्हारे द्वारा विकीर्ण उच्च संस्कृति के सौरभ का पावन संपर्क ही मेरी इस गुप्त यात्रा का एकमात्र प्रयोजन है । मैं किसी कलुषित इच्छा, विकृत आकांक्षा को लेकर कला के इस साधना-केंद्र में नहीं आया हूँ । मैं विलकुल सत्य कह रहा हूँ । तुम मुझपर सच्चे हृदय से विश्वास करो आम्रपाली !

आम्रपाली—मैं तुमपर विश्वास करके अपने एक कक्ष में इसी प्रभात-वेला में तुम्हारे संमुख नृत्य और गीत का एक नितांत एकांत प्रदर्शन कर कर सकती हूँ ।

बिंबसार—यह मेरा वहुत वड़ा सौभाग्य होगा ।

आम्रपाली—सामान्यतः प्रातःकाल मेरी साधना का समय होता है, प्रदर्शन का नहीं । प्रदर्शन तो रात्रि में होते हैं और उनपर वैशाली के लिच्छवि-वीरों का एकाधिकार होता है, जो मेरी कला के सार्वजनिक प्रदर्शन से प्रमुदित और प्रोत्साहित होकर अपने प्रिय गणतंत्र की रक्षा और उन्नति का सुदृढ़ संकल्प करते हैं । यदि तुम्हारा प्रवल आग्रह है, तो, अपनी साधना का आज का एक प्रभात मैं तुम्हें, विशेष रूप से, अर्पित करूँगी, तुम्हारे संमुख अपनी कला का प्रदर्शन करूँगी । उसका प्रतिदान तुम्हें देना होगा ।

बिंबसार—आज्ञा करो आम्रपाली ! मैं तुम्हें प्रत्येक प्रतिदान देने को तत्पर हूँ !

आम्रपाली—प्रतिदान केवल यह होगा कि तुम मेरे समक्ष यह प्रतिज्ञा करोगे कि तुम शुद्ध हृदय से वैशाली और मगध की मैत्री के लिए प्रयास करोगे और वैशाली पर कभी आक्रमण न करोगे ।

बिंबसार—मैं ऐसा ही करूँगा, महादेवी ! प्रतिज्ञापालन पर सदा सुदृढ़ रहूँगा ।

आम्रपाली—अच्छा तो पहले कुछ क्षण विश्राम कर लो ! उसके पश्चात् मैं तुम्हारा पवित्र मनोरथ पूर्ण करूँगी । **[आह्वान के स्वर में]** रणवीर !

[शस्त्रास्त्रसज्जित रणवीर का प्रवेश ।]

रणवीर—आज्ञा महादेवी ?

[**रणवीर बिंबसार को देखकर आश्चर्य करता है ।**]

आम्रपाली—आश्चर्य करने की आवश्यकता नहीं है । यह मेरे एक अत्यंत संमानित अतिथि यात्री हैं ।

रणवीर—किंतु, महादेवी, मुझे क्षमा कीजिए ; यह, मेरे जाने विना, यहाँ कैसे आ सके ?

आम्रपाली—यह फिर बताऊँगी । पहले इनके सम्यक् आतिथ्य का प्रबंध कराओ ! इनके विश्राम की उचित व्यवस्था कराओ ! ध्यान रखना कि इन्हें कोई असुविधा न होने पावे !

रणवीर—[**बिंबसार से**] पधारिए महानुभाव !

[**रणवीर और बिंबसार का प्रस्थान ।**]

आम्रपाली—[**आह्वान के स्वर में**] कोकिला !

[**कोकिला का प्रवेश ।**]

कोकिला—आज्ञा महादेवी ?

आम्रपाली—बैठो, कोकिला !

[**कोकिला आम्रपाली के निकट बैठती है ।**]

कोकिला—यहाँ असमय में अकस्मात् यह कौन असाधारण अतिथि आ गए थे महादेवी, जिन्होंने अपना नाम बिंबसार बताया था ?

आम्रपाली—यह रहस्य अत्यंत गोपनीय है । किंतु, इस नितांत एकांत साधनाकक्ष में कोकिला-जैसी अपनी अत्यंत विश्वासपात्र सखी को यह बताने में मुझे कोई हानि नहीं प्रतीत होती कि यह मगध-सम्राट् बिंबसार ही थे !

कोकिला—[**आश्चर्य के स्वर में**] सचमुच मगध-सम्राट् बिंबसार !

आम्रपाली—आश्चर्य न करो ! वास्तव में वही थे !

कोकिला—वह यहाँ कैसे आ सके ?

आम्रपाली—उन्होंने अपने अत्यंत विश्वासपात्र शिल्पियों को प्रचुर धन देकर उनसे अनेक वर्षों तक गुप्त रूप से काम लेकर ऐसे भूगर्भ-मार्ग का निर्माण करा लिया, जिसने राजगृह के उनके वासस्थान को वैशाली के मेरे

वासस्थान से जोड़ दिया और किसीको उसका पता नहीं चला। उसी मार्ग से वह गुप्त रूप से नितांत एकाकी, अत्यंत अरक्षित और पूर्णतया निश्शस्त्र रूप में आज यहाँ आ पहुँचे।

कोकिला—किंतु, मेरी विनम्र संमति में, वृजि-देश के लिच्छवि-गण-राज्य की राजधानी वैशाली का एकतंत्र मगध-साम्राज्य की राजधानी राजगृह से इस प्रकार गुप्त भूगर्भ-मार्ग द्वारा जुड़ जाना इस जनतंत्र के जीवन की सबसे भयानक राजनीतिक घटना है, महादेवी !

आम्रपाली—भयानक घटना !

कोकिला—हाँ ! आपको इस घटना की गंभीरता समझनी चाहिए ! एक उच्च-महत्त्वपूर्ण विदेशी राजपुरुष का इस प्रकार अत्यंत गुप्त रूप से यहाँ आकर वैशाली की ऐसी सर्वोपरि कलासुंदरी के घर में आश्रय पाना आरंभ करना, जिसके यहाँ वैशाली के सर्वश्रेष्ठ अधिकारसंपन्न व्यक्तियों का आवागमन होता हो, राजनीतिक रहस्यों के उद्भेदन की संभावना की दृष्टि से इस जनतंत्र की जीवन-नौका के तल में भारी छिद्र कर देगा !

आम्रपाली—यह तुम्हारी अतिरंजित धारणा, अनावश्यक आशंका है, कोकिला !

कोकिला—नहीं ; यह विशुद्ध और ध्रुव सत्य है, महादेवी ! आप मुझे स्पष्ट कथन के लिए क्षमा कीजिए ! यदि आपने तत्काल इस रहस्य की सूचना लिच्छवि-गणतंत्र के अध्यक्ष गणपति सुनंद तथा प्रधान सेनानायक सेनापति सुमन को नहीं दी, तो, आप देशद्रोह की अपराधिनी सिद्ध होंगी और आपको सार्वजनिक नृत्य-गीत-कला-सभा के मंच के आदर के वदले सार्वजनिक स्थान पर फाँसी की वेदी पर चढ़ना पड़ेगा। वैशाली-गणतंत्र की एक निष्ठावती नारी तथा आपकी कृपा की आश्रिता सेविका के रूप में मैं इस अवसर पर आपको सावधान करने का अपना कर्तव्यपालन करना चाहती हूँ।

आम्रपाली—शांत हो सखी कोकिला, वज्जी-भूमि के लिच्छवि-गणतंत्र-

के प्रति अटूट निष्ठा मेरे रक्त के प्रत्येक कण में शैशव से ओत-प्रोत है। इसमें किसी को अणु-मात्र भी संदेह नहीं हो सकता, नहीं होना चाहिए। मैं मृत्यु का वरण कर सकती हूँ, किंतु अपने प्रिय राष्ट्र के साथ विश्वासघात कदापि नहीं कर सकती। मैं अभी, एक क्षण में, गणाध्यक्ष तथा गण-सेनापति को सूचित करके मगध-साम्राज्य के वर्तमान एकमात्र स्वामी बिंबसार को मृत्यु-दंड दिला सकती हूँ। किंतु, इससे मेरे प्रिय वैशाली-जनतंत्र की भयानक हानि ही होगी।

कोकिला—हानि ?

आम्रपाली—हाँ, निश्चित हानि। वैशाली-गणतंत्र के प्राणदंड के द्वारा बिंबसार की मृत्यु होते ही उनका पुत्र अजातशत्रु, जो अत्यंत हृदयहीन, क्रूर, कुरूप और साम्राज्यलिप्सु है, मगध-साम्राज्य का अदम्य-निरंकुश शासक बनकर तत्काल वैशाली-गणतंत्र पर ऐसा भयानक आक्रमण करेगा, जैसा आज तक इतिहास को ज्ञात नहीं हुआ। उसके क्रूरतम आक्रमण के फलस्वरूप, लिच्छवि-सैनिकों की वीरता में कोई संदेह न होते हुए भी, साधनों की अपेक्षाकृत न्यूनता के कारण, वैशाली-गणतंत्र की पराजय होगी। इससे अजातशत्रु की नृशंसता और बढ़ेगी। अपने प्राणप्रिय जनतंत्र के सैनिकों और नागरिकों को उस भीषण विनाश से बचाने के लिए मैं आज बिंबसार को मृत्युदंड से बचाकर तथा उनसे वैशाली पर कभी आक्रमण न करने की शपथ लेकर, उन्हें तत्क्षण विदा कर देना चाहती हूँ।

कोकिला—क्या आप राष्ट्र के शत्रु को यों ही निकल जाने देंगी ?

आम्रपाली—हाँ। इतना ही नहीं; यदि अपने राष्ट्र के इतने बड़े हित के बदले मुझे अभी कुछ क्षण बिंबसार के समक्ष अपने एकांत कक्ष में शुद्ध हृदय से अपने गान और नृत्य का कला-प्रदर्शन भी करना पड़े, तो भी, उसमें मुझे कोई हानि नहीं दिखाई देती।

कोकिला—यह तो विषधर सर्प को दूध पिलाना होगा, महादेवी ! मैं आपको पुनः सावधान करना चाहती हूँ !

आम्रपाली—तुम पूर्णतः निश्चिंत रहो, कोकिला ; मेरे द्वारा अपने राष्ट्र का कोई भी अहित कभी न होगा। बिंबसार यदि चाहते, तो, अपने विपुल साधनों और विशाल सेना के बल पर वैशाली पर प्रबल आक्रमण करके, प्रकट रूप में उद्धत विजेता की भाँति, मेरे इस प्रासाद को अधिकृत करने का यत्न कर सकते थे। किंतु, उन्होंने ऐसा न करके रातों-रात गुप्त भूगर्भ-मार्ग से नितांत एकाकी और निश्शस्त्र मानव के रूप में यात्रा करके, शांतिपूर्वक मेरे साधना-कक्ष में आकर, मुझसे विशुद्ध नृत्य-गीत के एक संक्षिप्त तथा एकांत प्रदर्शन की विनम्र प्रार्थना की है।

कोकिला—इससे क्या होता है ?

आम्रपाली—इससे उनके हृदय-परिवर्तन और शांतिप्रियता का परिचय मिलता है। वह तथागत गौतम बुद्ध के अनुयायी भी बन चुके हैं। फिर भी, मैं उन्हें अपनी अतिथि-सत्कार-भावना का दुरुपयोग कदापि न करने दूँगी ! मैं अभी उनके समक्ष अपना एक अल्पकालिक कला-प्रदर्शन करके उन्हें राजगृह की ओर तत्क्षण लौटाकर आती हूँ। तुम यहीं मेरी प्रतीक्षा करो !

[आम्रपाली का प्रस्थान। कोकिला चिंतातुर होती है। रणवीर का प्रवेश।]

रणवीर—आप इस समय अत्यंत चिंतामग्न प्रतीत हो रही हैं, कोकिलादेवी ! क्या कारण है इसका ? मैं अनेक वर्षों से आपको निकट से जानता हूँ, पर, आपको इतना चिंतातुर मैंने कभी नहीं देखा !

कोकिला—चिंता का गंभीर कारण है रणवीर जी ! वैशालिका न होते हुए भी मैंने शुद्ध हृदय से वैशाली को अपनी अचल निष्ठा अर्पित की है। उसे अपनी माता का स्थान दिया है। मैं देख रही हूँ कि आज अचानक वैशाली के लिच्छवि-गणतंत्र पर संकट के घनघोर बादल घिर आए हैं। उन्हींसे मेरा हृदय खिन्न और मन चिंतामग्न हो गया है।

रणवीर—संकट के बादल ? कैसे संकट के बादल ? आप यह अस्वीकार नहीं कर सकतीं कि वर्षों के लंबे परिचय के कारण आप मुझे अपने

विश्वासभाजन होने का गौरव प्रदान कर चुकी हैं। अतएव, क्या मैं आपकी इस खिन्नता और चिंता का वास्तविक कारण विस्तार से जान सकता हूँ ?

कोकिला—रहस्य अत्यंत गोपनीय है, किंतु, मैं इसे अस्वीकार नहीं कर सकती कि आप उससे अधिक विश्वसनीय हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि आपके द्वारा रहस्य-भेद न होगा। बात यह है कि, बिना जाने, महादेवी आम्रपाली के हाथों आज राष्ट्र-द्रोह का एक कार्य हो रहा है। उन्होंने वैशाली-जनतंत्र के शत्रु मगध-सम्राट् बिंबसार को, जो गुप्त भूगर्भ-मार्ग से राजगृह के अपने प्रासाद से जनपदकल्याणी आम्रपाली के इस भवन में अभी आ पहुंचे हैं, आश्रय दिया है और वह अपने नृत्य और गान के कला-प्रदर्शन से एकांत में उनका मनोरंजन करने में लग गई हैं।

रणवीर—सम्राट् बिंबसार का मनोरंजन ? क्या नवागंतुक वही थे ?

कोकिला—हाँ ! महादेवी आम्रपाली को इसकी कोई चिंता नहीं है कि इस प्रकार वैशाली में उसके शत्रुओं के षड्यंत्रपूर्ण आगमनों का गुप्त द्वार खुल गया है। महादेवी का कथन है कि भगवान् बुद्ध का धर्म ग्रहण कर लेने के कारण बिंबसार अहिंसक बन गए हैं और एकाकी तथा निश्शस्त्र रूप में इस भवन में आकर उन्होंने उनपर विश्वास प्रकट किया है, इससे उनके हृदय-परिवर्तन का पता चलता है। वह उनसे वैशाली पर आक्रमण न करने की शपथ लेकर अपने राष्ट्र का हित ही करेंगी। महादेवी आम्रपाली अपने इस निश्चय पर दृढ़ प्रतीत होती हैं।

रणवीर (सस्मित)—यदि यह समाचार कोई बुद्धिमान् विदूषक सुनता, तो, कहता कि यह तो बड़े आनंद का समाचार है।

कोकिला—आनंद ! आनंद कैसा ?

रणवीर—असुंदर पुत्र अजातशत्रु के सुंदर पिता बिंबसार अपने राज्य के लिए, उस असुंदर को छोड़कर, नया सुंदर उत्तराधिकारी पाने का यत्न करने आज सर्वोत्तम सौंदर्य की नई एवं पावन खान वैशाली की यात्रा पर पधारे प्रतीत होते हैं ! यदि उन्हें अपनी इस यात्रा के फलस्वरूप भविष्य-

में सुंदर उत्तराधिकारी मिल गया, तो, विदूषकों को यह कहने का अधिकार मिल जायगा कि इससे हमारी और तुम्हारी, दोनों की, पाँचों उँगलियाँ घी में हो जायँगी।

कोकिला (सस्मित)—कैसे ?

रणवीर—वैशाली पर तो हम लोगों का अधिकार इसलिए रहेगा कि हम वैशाली के निवासी हैं; मगध पर हमारा स्तत्व इसलिए हो जायगा कि वैशाली का दौहित्र, अर्थात् आम्रपाली और बिंबसार का भावी पुत्र, मगध का आगामी सम्राट् बन जायगा !

कोकिला—अच्छा ! यह तो बड़ी दूर की कौड़ी हुई !

रणवीर—इससे विशेषतः आपको तो और भी अधिक प्रसन्नता होगी, क्योंकि, इससे एक-राजतंत्र के हृदय पर जनतांत्रिक गणतंत्र का अधिकार हो जायगा। इस प्रकार आपके प्रिय जनतंत्र के सिद्धांत की महत्त्वपूर्ण विजय हो जायगी।

कोकिला—यह कैसे ?

रणवीर—मगध-साम्राज्य के सम्राट् बिंबसार के हृदय पर वैशाली-गणराज्य की जनपद-कल्याणी आम्रपाली का अधिकार क्या राजतंत्र के हृदय पर जनतंत्र का अधिकार न समझा जायगा ? आप यही तो चाहती थीं कि आपका पुराना वास-स्थान मगध भी आपके नए वास-स्थान वैशाली की भाँति ही जनतंत्र बन जाय। नए ढंग से यह बड़ी सरलता से हो सकेगा। पुराने ढंग से ऐसा होने में तो बड़ी भारी झंझटें थीं।

कोकिला—कैसी झंझटें ?

रणवीर—उस दशा में वैशाली के वीरों को, जो केवल प्रतिरक्षाशूर माने जाते हैं और किसी अन्य राज्य पर आक्रमण करके उसकी भूमि को अधिकृत करने के विषय में बौद्ध अथवा जैन भिक्षुओं की भाँति अहिंसक समझे जाते हैं, आपकी प्रेरणा पर मगध के जनतंत्रीकरण के लिए, अपने सिद्धांत और नीति के विरुद्ध, मगध पर भारी सशस्त्र आक्रमण करना पड़ता।

इस लक्ष्य की सिद्धि के लिए आपको उनकी प्रेरक सेनाध्यक्षा बनने के लिए पुरुष-वेश में समस्त शस्त्रास्त्र और अभेद्य कवच धारण करने पड़ते !

कोकिला—मुझे ?

रणवीर—हाँ, आपको ! और वैशाली की उस विशाल सेना के प्रचंड प्रयाण से पृथ्वी और आकाश धूलि-धूसरित हो उठते । उसके प्रस्थित सैनिकों के प्रबल पदचापों से पाताल भी हिल उठता । माताओं की गोद के बालक भयभीत होकर रोने लगते । ये सब क्या साधारण झंझटें होतीं ?

कोकिला—इसे आप पुराना ढंग कहते हैं ! अच्छा, नए ढंग पर भी सविस्तर प्रकाश डालिए !

रणवीर—नया ढंग तो स्वयं प्रकाशित है । वह तो विश्वविख्यात है ! उसे कहते हैं प्रेम ! केवल प्रेम ! विश्वविजयी प्रेम ! और कोई झंझट नहीं ! सम्राट् बिंबसार महादेवी आम्रपाली के प्रेम से प्रसन्न होकर उन्हें शपथपूर्वक वरदान देंगे कि वह वैशाली पर कभी आक्रमण न करेंगे तथा भगवान् बुद्ध का अनुसरण करेंगे और महादेवी आम्रपाली सम्राट् के इस आश्वासन से संतुष्ट होकर उनसे अनुरोध करेंगी कि सम्राट् बौद्ध-भिक्षु बन जायँ और महादेवी को बौद्धधर्मसंघ को अपनी वैशाली की समस्त संपत्ति का दान करके बौद्ध भिक्षुणी बनते देखकर आत्मिक तृप्ति प्राप्त करें !

कोकिला—यह तो जानती हूँ कि कल्पना के लिए प्रतिबंध की आवश्यकता नहीं होती । किंतु, मैं यह समझने में असमर्थ हूँ कि इस प्रक्रिया-से मगध-राज्य का जनतंत्रीकरण कैसे होगा !

रणवीर—सुनिए ! देवी आम्रपाली के इस अनुरोध के उत्तर में संभवतः सम्राट् बिंबसार कहेंगे कि उनके और महादेवी आम्रपाली के तत्काल तथा एक ही साथ प्रव्रज्या ग्रहण कर लेने से तो वैशाली और मगध के दोनों मैत्री-सूत्र टूट जायँगे, उनका अप्रिय, क्रूर, अनभीष्ट और असुंदर पुत्र अजात-शत्रु वैशाली पर भीषण आक्रमण कर देगा और महादेवी आम्रपाली के सौंदर्य और कला के अनुशासन-सूत्र में बंधे हुए और उनकी प्रेरणा से अनु-

प्राणित वैशाली के सैनिक मगध पर उससे भी भीषण प्रत्याक्रमण करेंगे। वैर से वैर की ज्वाला का शमन कदापि न होगा।

कोकिला—तो फिर बिंबसार महादेवी आम्रपाली को क्या सुझाव देंगे ?

रणवीर—वह संभवतः महादेवी को सुझाव देंगे कि वह उन्हें अवसर दें कि वह उनके सौंदर्य, उदारता, कला-प्रेम, संस्कृति, शांतिप्रियता तथा जनतंत्रप्रेम के प्राणवान् प्रतीक-स्वरूप भावी राजकुमार को मगध का भावी सम्राट् बना सकें; इसके लिए महादेवी आम्रपाली सम्राट् बिंबसार से गांधर्व-विवाह करें, उनकी वैशाली-यात्रा के प्रिय माध्यम गुप्त भूगर्भ-मार्ग को बंद न कराएँ और उनके भावी पुत्र की वात्सल्यमयी माता बनकर उन्हें गौरवान्वित करें; उस पुत्र की, जिसे वह निश्चित रूप से मगध का सम्राट् बनाएँगे।

कोकिला—बस ?

रणवीर—बस कैसे ? आगे सुनिए ! सम्राट् बिंबसार यह सुझाव भी देंगे कि उनकी वीरता और आम्रपाली के कलाप्रेम का संमिलित प्रतिनिधि और उन दोनों का भावी पुत्र जब, उनके आदेश पर, मगध-साम्राज्य का सम्राट् बन जाय, तब बिंबसार और आम्रपाली दोनों प्रव्रज्या ग्रहण करके बौद्ध भिक्षु और भिक्षुणी बनें और भावी मगध-सम्राट् से अनुरोध करें कि वह मगध में भी भगवान् बुद्ध की प्रिय वैशाली की जनतंत्रव्यवस्था स्थापित और प्रभावशील करें।

कोकिला—और इस बीच उनका ज्येष्ठ पुत्र अजातशत्रु क्या करेगा ?

रणवीर—इन क्रांतिकारी व्यवस्थाओं का अजातशत्रु पर भी प्रभाव पड़ेगा और वह भी बौद्ध भिक्षु बनेगा। उसके करने को फिर और क्या बच रहेगा ?

कोकिला—अजातशत्रु कोई गीली कच्ची मिट्टी का लोंदा नहीं है, जिसे बिंबसार सरलता से अपनी इच्छा के साँचे में ढाल लेंगे। इन सब निरर्थक कपोल-कल्पनाओं से किसी महान् लक्ष्य की सिद्धि नहीं हो सकती। कोई विदूषक विद्वान् भले ही ऐसी कल्पनाएँ करे, आप-जैसे वीर को तो ये

शोभा नहीं देतीं । आपको तो आसन्न संकट का तत्काल सक्रिय प्रतिकार करना चाहिए। इस प्रकार व्यंग्य करने से तो काम नहीं चलेगा।

रणवीर—सैनिक में यदि हास्यव्यंग्य की किंचित् सहृदयता भी हो, तो, उसे उसका अक्षम्य अपराध नहीं माना जा सकता। मानवों को कुछ मनोरंजन भी चाहिए। अच्छा, आप बताइए कि आप क्या चाहती हैं!

कोकिला—मैं चाहती हूँ कि वैशाली-जनतंत्र को उस महान् विश्वास-घात से बचाया जाय, जो बिंबसार का कपट, आम्रपाली की उदारता का दुरुपयोग करके, अत्यंत निकट भविष्य ही में, वैशाली गण-राज्य के साथ करना चाहता है । इसके लिए, आप ही को नहीं, मुझे भी प्राण-पण से प्रयत्न करना होगा । किंतु, मुझे खेद है कि अपने पूर्व-इतिहास के कारण मुझे अपने इस प्रयत्न में वैशाली के महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों की हार्दिक सहायता प्राप्त न हो सकेगी ।

रणवीर—आपका पूर्व-इतिहास ?

कोकिला—हाँ; जन्म लेने की विवशता के कारण, भूतकाल में मैं मगध में रह चुकी हूँ, इसका संदेह-कीट उनके हृदयों को मेरी ओर से पूर्णतया निश्शंक न होने देगा । वे मेरे प्रयासों को स्वभावतः अविश्वास की दृष्टि से देखेंगे ।

रणवीर—आपको उनकी शंका के प्रतिरोध का उचित उपाय अवश्य करना चाहिए, भले ही वह शंका निर्मूल ही क्यों न हो । जनतंत्र में शंका-समाधान की सक्रियता का बड़ा महत्त्व होता है ।

कोकिला—उनके समाधान का क्या उपाय हो सकता है ?

रणवीर—आप वैशाली की असंदिग्ध नागरिकता ग्रहण कर लीजिए !

कोकिला--वैशाली की नागरिकता तो मैं बहुत पहले ही ग्रहण कर चुकी हूँ ।

रणवीर—किंतु, आप ही के कथन के अनुसार, उससे संभवतः वैशालिकों के संदेह का पूर्ण उच्छेद नहीं हो सकता । अपनी नागरिकता-

को पूर्ण संदेह-मुक्त बनाने के लिए आपको कोई नया और अचूक उपाय अपनाना होगा, कुछ अतिरिक्त प्रयास करना होगा।

कोकिला—आप ऐसा कोई अमोघ उपाय नहीं सुझा सकते ?

रणवीर—क्यों नहीं ?

कोकिला—तो सुझाइए !

रणवीर—मैं इसका एक अत्यंत प्रभावशाली उपाय सुझा सकता हूँ। किंतु, इसके पूर्व आपको मुझे एक आश्वासन देना होगा।

कोकिला—क्या ?

रणवीर—यह कि आप मेरी धृष्टता के लिए मुझे उदारतापूर्वक क्षमा कर देंगी और मुझपर क्रुद्ध न होंगी।

कोकिला—अच्छा, मैं आपको यह आश्वासन देती हूँ। बताइए, आपका क्या सुझाव है, आप क्या उपाय बताते हैं !

रणवीर—मैं जो उपाय बताना चाहता हूँ, वह बहुत सरल है। सुनिए ! उधर शकुंतला और दुष्यंत के चरण-चिह्नों पर चलकर महादेवी आम्रपाली और सम्राट् बिंबसार परस्पर गांधर्व-विवाह करें और इधर आप बिंबसार के कपट-षड्यंत्र से वैशाली-जनतंत्र की रक्षा करने के लिए अपना राजनयिक विवाह कर लीजिए !

कोकिला— राजनयिक विवाह ? यह कैसा होता है ?

रणवीर—यह ऐसा विवाह होता है, जिसका तत्कालफलदायी उद्देश्य राष्ट्रहित की दृष्टि से राजनीतिक कूटनीति के किसी विशिष्ट लक्ष्य की सिद्धि होता है। आप वैशाली के समस्त नर-नारियों की दृष्टि में अपनी वैशाली की नागरिकता और वैशाली-गणराज्य के प्रति अपनी निष्ठा को पूर्णतया संदेह-मुक्त बनाने के लिए अविलंब किसी ऐसे व्यक्ति से विवाह कर लीजिए, जो स्वयं भी जन्मजात वैशालिक हो, लिच्छवि हो और जिसके पूर्वज भी विशुद्ध लिच्छवि और वास्तविक वैशालिक रहे हों। इससे यह ऐतिहासिक सत्य विस्मृति के गर्भ में पूर्ण रूप से विलुप्त हो जायगा कि आप कभी मगध-

साम्राज्य में रही थीं। विवाह के पश्चात् नारी की पूर्व-नागरिकता पर कोई ध्यान नहीं देता।

कोकिला—वैशाली-जनतंत्र की रक्षा के लिए मैं अविलंब प्रभावशाली प्रयास करना चाहती हूँ और आप मुझे विलंब का रास्ता बता रहे हैं। वर की खोज और विवाह में मुझे बहुत समय लग सकता है।

रणवीर—एक क्षण से अधिक नहीं। विशिष्ट-राजनीतिक-उद्देश्यपूर्ण राजनयिक विवाह अत्यंत शीघ्र हुआ करता है और उसके लिए समान उद्देश्यवाले वर और वधू भी तत्काल प्राप्त हो जाते हैं। राजनयिक विवाह गांधर्व-विवाह का नवीनतम, विशुद्ध और अत्यंत द्रुतगामी स्वरूप है!

कोकिला—अत्यंत द्रुतगामी?

रणवीर—हाँ; उसमें वर या वधू की स्वीकृति शब्दों में प्राप्त करने की आवश्यकता नहीं होती। शब्दगत स्वीकृति तो स्वीकृति का पुराना और असंस्कृत प्रकार है। उसमें समय भी अधिक लगता है। राजनयिक विवाह के संदर्भ में तो केवल एक निश्शब्द भ्रूकुंचन अस्वीकृति और एक नीरव मंदस्मित स्वीकृति प्रकट कर देता है। क्षमाप्रार्थना के साथ, मैं अत्यंत विनम्रतापूर्वक अपने को आपकी सेवा में आपके वर के रूप में प्रस्तुत करता हूँ। आप मुझे अनेक वर्षों से जानती हैं। मैं विशुद्ध और असंदिग्ध वैशालिक-लिच्छवि हूँ। मैं आपके क्रांतिकारी राजनीतिक लक्ष्य की पूर्तिमें भी आपका सहायक सिद्ध हो सकता हूँ। मैं पूर्ण निष्ठा के साथ आपसे इसी समय राजनयिक विवाह करने के लिए प्रस्तुत हूँ। यदि आप सहमत हों, तो, कृपया इसी क्षण केवल एक मंदस्मित द्वारा मेरे इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लीजिए!

[कोकिला मुसकराती है।]

रणवीर—हार्दिक धन्यवाद! आपने अपने मंदस्मित से अपनी स्वीकृति दे दी! मैं अपनी पूर्व-स्वीकृति दे ही चुका हूँ। इस क्षण से हम दोनों एक-दूसरे के, पति-पत्नी हैं, जीवन-सहचर हैं। आशा है, हमारा विवाहित जीवन सदा उज्ज्वल-आदर्शोन्मुख रहेगा।

[आम्रपाली का प्रवेश।]

आम्रपाली—क्यों, क्या बात है ? तुम दोनों इतने प्रसन्न क्यों दिखाई दे रहे हो ? क्या मैं जान सकती हूँ कि तुम दोनों के वर्तमान वार्तालाप का प्रमुख विषय क्या था ?

रणवीर—क्षमा कीजिए महादेवी ! आदरणीय व्यक्तियों को नव-विवाहित वर-वधू अपने प्रथम वार्तालाप का विषय नहीं बताया करते, भले ही वह विषय गोपनीय न हो।

आम्रपाली--वर-वधू ?

रणवीर—हाँ, महादेवी; कोकिलादेवी ने इसी क्षण मुझसे राजनयिक विवाह किया है।

आम्रपाली—राजनयिक विवाह क्या ?

रणवीर—राजनयिक विवाह नवीनतम तथा पवित्रतम उपलब्धि है। वह गांधर्व-विवाह का सबसे द्रुतगामी प्रकार है। गांधर्व-विवाह में जहाँ मूल-प्रेरकशक्ति केवल प्रेम होती है, वहाँ राजनयिक विवाह में, प्रेम के साथ, राष्ट्रभक्ति तथा राजनीतिक लक्ष्य-सिद्धि भी प्रमुख प्रेरणा-स्रोत होता है। राजनयिक विवाह में एक क्षण का अर्धांश ही ख़र्च होता है। केवल एक निश्शब्द मंदस्मित में स्वीकृति मिल जाती है और विशिष्ट राजनीतिक-लक्ष्य की पूर्ति में सहायक हो सकनेवाले वर या वधू को तत्काल विवाह-बंधन में आवद्ध कर लिया जाता है।

आम्रपाली—अच्छा, तो, तुम दोनों ने परस्पर विवाह कर लिया है ? क्यों कोकिला ?

कोकिला—जी हाँ, महादेवी !

आम्रपाली—मेरे यहाँ तुम दोनों अनेक वर्षों से हो। एक-दूसरे के गुणों से अच्छी तरह परिचित हो चुके हो। तुम दोनों के हृदय के अंतराल में गत वर्षों में जो स्नेह-भावना की पावन लता धीरे-धीरे विकसित होती गई, उसीने इस विवाह के रूप में पूर्ण सफलता प्राप्त की है। मुझे विश्वास है कि तुम दोनों का यह निश्चय एक क्षण का निराधार निश्चय नहीं है। इसके

पीछे जनहित, साधना, आत्मसंवरण और लंबी प्रतीक्षा की पृष्ठभूमि है। अच्छा; जो हुआ, वह अत्यंत उचित ही हुआ है । क्या वास्तव में इसी क्षण विवाह हुआ है और इसी स्थान पर हुआ है ?

रणवीर—हाँ, इसी क्षण और इसी पावन तथा मंगलमय संगीत-साधना-कक्ष में। औपचारिकता और आडंबर की कोई आवश्यता ही नहीं थी। यह हमारा अहोभाग्य था कि हमें यह स्थल उपलब्ध हो सका। जनपद-कल्याणी महादेवी आम्रपाली के इस विशिष्ट कक्ष में तो किसी का प्रवेश हो ही नहीं सकता, महादेवी के इस विशाल प्रासाद में जो प्रशस्त नृत्य-गीत-सभा-भवन है, उससे भी महादेवी से विवाह करने के इच्छुक अनेक अनभिज्ञ महापुरुषों को नितांत निराश होकर लौटना पड़ता है । इस प्रासाद में कभी किसी विवाह का वधू-मण्डप नहीं बन सकता था । हम दोनों अकिंचन सेवकों ने, आपकी महती कृपा के भरोसे, आज इसकी पुरानी परंपरा को भंग करके इस प्रासाद में अपना विवाह कर लिया है । इसके लिए हम दोनों आपसे अत्यंत विनम्र भाव से क्षमाप्रार्थी हैं।

कोकिला—हम दोनों को क्षमा कर दीजिए, महादेवी !

आम्रपाली—अच्छा, अच्छा; कर दिया मैंने तुम दोनों को क्षमा; किंतु, विवाह का विधिवत् सामाजिक संस्कार भी तो होना चाहिए और शीघ्र ही होना चाहिए।

रणवीर—हम दोनों का यह विवाह एक प्रकार का गांधर्व-विवाह ही तो था, महादेवी ! यह सभीको विदित है कि गांधर्व-विवाह अपने अंदर पूर्ण और सर्वथा वैध माना जाता है । उसके पश्चात् और किसी औपचारिक सामाजिक विधि की आवश्यकता नहीं होती।

आम्रपाली—इसका कारण यह होता है कि गांधर्व-विवाह का वर और वधू दोनों के द्वारा गुप्त रखा जाना अनिवार्य होता है । तुम दोनों के साथ ऐसा नहीं है।

रणवीर—गुप्त रखा जाना तो दूर, हम दोनों के इस विवाह का तो वैशाली-भर में अधिक से अधिक प्रचार होना आवश्यक है।

आम्रपाली—क्यों ?

रणवीर—इसलिए कि इसका राजनयिक उद्देश्य यही है कि प्रत्येक विशुद्ध वैशालिक-लिच्छवि कोकिलादेवी को वज्जी-गणराज्य की असंदिग्ध रूप से पूर्णतया विश्वसनीय नागरिका के रूप में जाने, स्वीकार करे और सच्चे हृदय से स्वीकार करे। हम दोनों के प्रिय राजनीतिक लक्ष्य की सिद्धि तभी हो सकती है, जब कोई भी इस तथ्य का कभी स्मरण न करे कि यह किसी काल में मगध-राजतंत्र में थीं ; इनके प्रति किसीके हृदय में शंका का लेश-मात्र भी न रहे !

आम्रपाली—यह तो तभी हो सकता है, जब कोकिला का विवाह रणवीर के साथ सार्वजनिक रूप से आम्रपाली के भवन में बड़ी धूमधामसे, परंपरागत धार्मिक विधि के साथ, संपन्न हो और उसमें वैशाली-गणराज्य के समस्त महत्त्वपूर्ण स्त्री-पुरुष पधारकर वर-वधू को हार्दिक आशीर्वाद दें।

कोकिला—हम अकिंचनों पर इतना धन-व्यय न कीजिएगा, महादेवी !

आम्रपाली—तू मुझे रोकनेवाली कौन होती है री ? मैं मुक्त हृदय से तेरा विवाह करूँगी और इतने धन-वैभव के साथ करूँगी कि वृजि-गणराज्य के गणाध्यक्ष और गणसेनापति की कन्याएँ भी तुझे ईर्ष्या की दृष्टि से देखें और यह अनुभव करें कि त्रैलोक्य की संपदा भी कला के चरणों की धूल के समान है। संगीत-कला के क्षेत्र की तुझ-जैसी श्रेष्ठ साधिका का विवाह कलापीठ के उच्च गौरव के अनुरूप रूप ही में होना चाहिए ! वर भी कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है। आम्रपाली के प्रधान रक्षाध्यक्ष वीरवर रणवीर का विवाह भी उनके पद के गौरव के अनुरूप रूप ही में होना चाहिए। वीरों के संमान का स्थान समाज में सर्वोपरि होना चाहिए। रणवीर का विवाह अपने समस्त आर्थिक साधनों के साथ आयोजित कराकर मैं यह सिद्ध करूँगी कि धनाढ्य श्रेष्ठियों और अधिकारारूढ़ राजपुरुषों ही ने संपन्न विवाहों का एकाधिकार नहीं प्राप्त कर रखा है।

रणवीर—क्षमा कीजिए, महादेवी ! हमारे विवाह की सूचना-मात्र से

आपके उदार हृदय में हम दोनों के प्रति स्नेह और वात्सल्य की इतनी भारी बाढ़ आ गई कि उसमें सब कुछ बह गया ।

आम्रपाली—क्या वह गया ?

रणवीर—आपने अभी तक यह पूछने की आवश्यकता नहीं समझी कि हम दोनों के इस अत्यंत शीघ्रता में किए गए राजनयिक विवाह का वास्तविक राजनीतिक लक्ष्य क्या है ; वह कौन-सा अत्यंत महत्त्वपूर्ण राजनीतिक प्रयोजन है, जिसकी सिद्धि के लिए हम दोनों ने संसार की सबसे तीव्र-गतिवाली नवीन वैवाहिक प्रणाली का अवलंबन करके अपने को विवाहवद्ध कर लिया है । इसमें किंचित्-मात्र भी संदेह नहीं है कि हम दोनों का वास्तविक विवाह तो हो चुका है ; अब जो कुछ होगा, वह तो जनपद-कल्याणी महादेवी आम्रपाली का हम दोनों के प्रति स्वाभाविक उदार स्नेहप्रदर्शन-मात्र होगा ।

आम्रपाली—अच्छा, बताओ कि तुम दोनों के विवाह का राजनीतिक उद्देश्य क्या है ?

रणवीर—यह तो आपकी सेवा में निवेदन किया ही जा चुका है कि कोकिलादेवी की वैशाली की पूर्णनिष्ठायुक्त नागरिकता को नितांत असंदिग्ध बनाना इस विवाह का प्रथम उद्देश्य है । इसका दूसरा उद्देश्य है वैशाली-जनतंत्र की रक्षा एवं उन्नति के लिए नए उत्साह से हम दोनों का विशेष तथा संमिलित प्रयत्न और इसके लिए जीवन-अर्पण । इस प्रयत्न में, यदि आवश्यकता हुई, तो, हम दोनों अपने प्राणों की आहुति भी दे देंगे और समय पड़ने पर अपने कठोर कर्तव्य के पालन में अपने सबसे अधिक कृपालु व्यक्तियों के कोप-भाजन बनने को भी तैयार हो जायँगे, उनसे भी संघर्ष करने को सन्नद्ध हो जायँगे ।

आम्रपाली—सबसे महान् उद्देश्य है यह । इसकी पवित्रता सर्वोपरि है । वास्तविक जनतंत्र मानव-जीवन की चरम उपलब्धि है । जनतंत्र की रक्षा के लिए प्राणोत्सर्ग, सर्वस्वबलिदान और निजी स्नेहपाश का उच्छेद करनेवाले तरुण-तरुणी विश्व के गौरव हैं । मैं भाग्यशालिनी हूँ कि मेरे स्नेह

और सहयोग से शक्तिशाली बनकर तुम दोनों विश्वगौरव के इस पथ पर और अधिक उत्साह के साथ आगे बढ़ना चाहते हो। जनतंत्र की रक्षा और सर्वतोमुखी उन्नति के लिए अपना सर्वस्वबलिदान करने की शपथ ग्रहण करने-वालों में तुम दोनों वास्तव में सर्वोपरि स्थान पाने योग्य हो।

कोकिला—आपके ये उदार उद्‌गार आपकी महती अनुकंपा के द्योतक हैं, महादेवी! आप हम दोनों को अपना मंगलमय आशीर्वाद दीजिए कि अपने परमप्रिय वैशाली-गणराज्य की रक्षा और उन्नति के लिए हम दोनों न केवल अपने सर्वस्व और प्राणों का बलिदान करने को तैयार रहें, वरन्, अपने जीवन का प्रत्येक क्षण पूर्ण निष्ठा के साथ इसी महान् लक्ष्य की सिद्धि के निरंतर प्रयत्नों में अविरत उत्सर्ग करते रहें, अक्षय दीप की भाँति निरंतर निर्धूम जलते रहने का प्रयास करते रहें।

आम्रपाली—मेरे हृदय की समस्त शुभकामनाएँ तुम दोनों के साथ हैं।

रणवीर—जनतंत्र की सेवा के और अधिक कठिन कार्यों में अहर्निश लगने के लिए हम दोनों को आपसे तत्काल पृथक् होना पड़ेगा महादेवी !

आम्रपाली—पृथक् होना पड़ेगा ?

रणवीर—हाँ। गरुड़ जब तक शिशु रहता है, तब तक अपनी जननी के स्नेह-नीड़ में सीमित रहता है। जब वह तरुण हो जाता है और उसके पंखों, चोंच और पंजों में पूरी शक्ति आ जाती है, तब वह अपनी जननी के स्नेह-नीड़ से निकलकर साहसपूर्वक भयानक विषधर सर्पों का संहार करने संसार के विस्तृत और कठिन कर्म-क्षेत्र में चला जाता है। हम दोनों को भी अब अपने नए जीवन में अपने संकल्प को अधिक परिपक्व करके अपने प्राण-प्रिय जनतंत्र के आंतरिक और बाह्य शत्रुओं पर, जो भीषण विषधर सर्पों से भी अधिक हानिकारक हैं, प्रचंड आक्रमण करने के लिए शीघ्र ही आपके स्नेह की छाया के बाहर जाना पड़ेगा और समय पड़ने पर अपने सर्वाधिक प्रिय व्यक्तियों से भी संघर्ष करना पड़ेगा। आशा है, आप हमारे वियोग से खिन्न न होंगी।

आम्रपाली– खिन्न न हूँ ? यह कैसे हो सकता है ? खिन्न तो मैं हूँगी ही। तुम दोनों मेरे रक्षक ही नहीं थे, मेरे वंचित और शून्य प्राणों के आधार, मेरे अकृत्रिम वात्सल्य के पात्र भी थे। मैं नहीं जानती कि मैं तुम दोनों का वियोग कैसे सहन कर पाऊँगी। किंतु, मुझे जब यह स्पष्ट ज्ञात हो हो चुका है कि तुम दोनों मुझे छोड़कर शीघ्र ही राष्ट्र-सेवा के अधिक विस्तृत कार्य-क्षेत्र में पदार्पण करोगे, तब मैं अपने हृदय की इस गंभीर वियोग-व्यथा को हलकी करने के लिए तुम दोनों के विवाह के आयोजन को इतने उत्साहपूर्ण, संमानपूर्ण और वैभवपूर्ण ढंग से संपन्न करना चाहती हूँ कि मैं कुछ समय के लिए उसकी व्यवस्था में आकंठ डूब जाऊँ। यदि तुम दोनों इसे अनुचित समझते हो, तो, मुझे क्षमा करो !

कोकिला—यह कहकर आप हमें लज्जित कर रही हैं।

आम्रपाली—मैं तुम्हें यह भी बता देना चाहती हूँ कि मैं मानवी हूँ, अतः, मेरे जीवन में भूलें अवश्य हो सकती हैं, किंतु, अपने आराध्य जनतंत्र को प्यार करने में मैं किसीसे पीछे नहीं हूँ। मेरे प्रिय वैशाली-गणराज्य ने मेरे साथ भीषण अन्याय किया है, किंतु, उसे मैंने अपने सर्वोपरि पूज्य जन-देवता का वरदान समझकर सहन कर लिया है। आज मेरे जीवन, प्राण और रक्त के प्रत्येक कण में अपने गणतंत्र का प्रबल प्रेम व्याप्त है।

कोकिला—आपका राष्ट्र प्रेम महान् है।

आम्रपाली—मेरी कला भी मेरे हृदय के उस जयघोष की प्रतिध्वनि है, जो प्रति-क्षण मेरे स्वतंत्र जनतंत्र के समर्थन में गुंजित हुआ करता है। मुझे प्रसन्नता है कि तुम दोनों स्वतंत्र जनतंत्र की जय के पथ पर मुझसे आगे बढ़ना चाहते हो। अपने पवित्र कर्तव्य-पथ से कभी विचलित न होना ! यदि मैं भी तुम्हारे पथ की बाधा बनना चाहूँ, तो, मुझे भी क्षमा न करना ! दृढ़ता से मेरा भी प्रतिकार करना ! मैं उससे अपने को कृतकृत्य मानूँगी। तुम दोनों मेरे हृदय का समस्त स्नेह स्वीकार करो ! आओ, इस पावन

संकल्प-ग्रहण के अवसरपर, मेरे साथ, मुक्त कंठ से प्राण-प्रिय जनतंत्र का जयघोष करो ! [**उद्घोष के स्वर में**] जय जनतंत्र ! जय गणराज्य !

कोकिला और रणवीर—जय जनतंत्र ! जय गणराज्य !

[कोकिला और रणवीर का एक पार्श्व से प्रस्थान। अजिता का दूसरे पार्श्व से प्रवेश।]

अजिता—प्रणाम महादेवी !

आम्रपाली—स्वस्ति अजितादेवी ! तुम यह जानती हो कि मैंने यह प्रबंध करा रखा है कि मेरे वास-स्थान में तुम्हारा प्रवेश प्रत्येक क्षण अरुद्ध रूप में हो सके। फिर भी, तुम अपने इस अधिकार का अल्प उपयोग करती हो। कितने दिनों बाद यहाँ आई हो !

अजिता—क्षमा कीजिए ! मुझे इन दिनों अत्यंत त्रस्त रहना पड़ा।

आम्रपाली—क्यों ?

अजिता—इसलिए कि मैं वैशालिक-लिच्छवियों के जनतांत्रिक गण-राज्य के प्रधानसेनापति की पुत्री हूँ।

आम्रपाली—यह तो अत्यंत गौरव का विषय है।

अजिता—मेरी गौरव की परिभाषा विभिन्न है।

आम्रपाली—उसे मुझे भी बताओ !

अजिता—मैं लघुता के गौरव को सबसे अधिक महान् गौरव मानती हूँ।

आम्रपाली—लघुता का गौरव कैसा ?

अजिता—राष्ट्र के लघुतम व्यक्ति के साथ अपना अधिकतम संभव साम्य स्थापित करने की साधना ही सबसे बड़ा गौरव है। मैं अपने शरीर, मन, प्राण और आत्मा को राष्ट्र के तल के मानवों के उत्थान के प्रयासों में समर्पित कर देना चाहती हूँ। उन्हींको मैं राष्ट्र का दृढ़तम आधारस्तंभ मानती हूँ। परंपरागत गौरव की दृष्टि से आपका गौरव अत्युच्च है। किंतु, क्या उससे आपको वास्तविक आत्मसंतोष है ?

आम्रपाली--यह न पूछो अजिता ! किंतु, मैं विवश हूँ । मुझे अपने राष्ट्र की परंपरा का संमान करना ही पड़ता है ।

अजिता--किसी भी अन्यायपूर्ण परंपरा के आगे आत्मसमर्पण करना उचित नहीं है । गौरव के मूल्यों के संबंध में मेरा अपने पिताजी से मतभेद है । मेरी गतिविधियों पर उन्होंने प्रतिबंध नहीं लगाया है, किंतु, वह उनसे असंतुष्ट रहते हैं । इस असंतोष के कारण मेरा हृदय संत्रस्त रहता है ।

आम्रपाली– वह क्या चाहते हैं ?

अजिता--वह चाहते हैं कि मैं राष्ट्र के सर्वाधिक गौरवसंपन्न व्यक्तियों में से अपने लिए वर चुनूँ और विवाह के उपरांत अपने पति के साथ मिलकर राष्ट्र सेवा करूँ । तब तक मैं अपने को सर्वगुणसंपन्न बनाने के प्रयास में लगाए रहूँ, जिससे उपयुक्त व्यक्ति मुझसे विवाह करने को उत्सुक हो । मैं इससे सहमत नहीं हूँ । इसके कारण मुझे अत्यंत्र संत्रस्त रहना पड़ता है । मैं सोचती हूँ कि यदि मेरा जन्म किसी राष्ट्रभक्त कृषक के घर में हुआ होता, तो, मुझे अधिक संतोष प्राप्त होता और मैं अपने आराध्य जनदेवता की अधिक स्वतंत्रतापूर्वक सेवा कर पाती । मैं अनुचित परंपराओं का दृढ़तापूर्वक विरोध करती और उस परंपरा का भी उच्छेद करने का अपने राष्ट्र से प्रबल आग्रह करती, जिसके कारण आपको अपना आबद्ध जीवन बिताने को विवश होना पड़ रहा है ।

आम्रपाली--यदि मैं भिक्षुणी बनकर तथागत गौतम बुद्ध के उपदेशों के अनुसार जीवन व्यतीत कर सकती, तो, मुझे वास्तव में अधिक आत्मसंतोष होता ।

अजिता--मैं प्रत्येक अनुचित परंपरा के विरुद्ध विद्रोह करूँगी । राष्ट्र के बहुजन को अपने साथ लेने का प्रयास करूँगी । आपको भी मैं गौरव के बंधन से मुक्त कराऊँगी । मेरी दृढ़ धारणा है कि केवल सेना की शस्त्रास्त्र-शक्ति से राष्ट्र की स्वतंत्रता की रक्षा नहीं की जा सकती । इसके लिए राष्ट्र की जनता में, कृषकों में, श्रमिकों में, सामान्य-जनों में, तल के मानवों

तक में आत्मशक्ति और राष्ट्र-भक्ति की प्रबल भावना उत्पन्न कराने की आवश्यकता है ।

आम्रपाली--इसके लिए तुम क्या करोगी ?

अजिता--अपने को सामान्य मानवी मानकर राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति तक राष्ट्र-भक्ति की भावना पहुँचाकर मैं अपने राष्ट्र को इतना सुदृढ़ और न्यायनिष्ठ बनाने का प्रयास करूँगी कि हमारे जनतंत्र की स्वतंत्रता को नष्ट करने की कल्पना तक कोई शत्रुराष्ट्र न कर सके और राष्ट्र का प्रत्येक व्यक्ति अपने को समान सुख-सुविधाका पूर्ण अधिकारी समझ सके ।

आम्रपाली—मैं तुमसे सहमत हूँ ।

अजिता—जिस राष्ट्र का प्रत्येक मानव, आबालवृद्ध नर-नारी, अपने हृदय में अजेय राष्ट्रप्रेम का अनुभव करता हो, वही राष्ट्र वास्तव में चिर-अजेय हो सकता है । मेरे पिताजी सैन्यसंगठन को सुदृढ़ बनाकर जनतंत्र की रक्षा करना चाहते हैं; मैं इसीको पर्याप्त नहीं समझती । मैं सामान्य व्यक्ति बनकर सामान्य व्यक्तियों में जनतंत्र की रक्षा की सार्वजनिक तथा सार्वभौम इच्छा-शक्ति, संकल्प और दृढ़-आत्मविश्वास उत्पन्न करने के कार्य में अपना जीवन लगा दूँगी ।

आम्रपाली—राष्ट्र की सर्वाधिक आत्म-गौरवशालिनी महिला, मैं तुम्हें श्रद्धापूर्वक प्रणाम करती हूँ । तुम्हारे आगे मैं अत्यंत खर्व हूँ !

[पटाक्षेप ।]

द्वितीय अंक

[मगध-साम्राज्य की राजधानी राजगृह-नगर में सम्राट् विंबसार के प्रासाद का एक विशेष अंतः-कक्ष। प्रातःकाल। विंबसार की दो राजनर्तकियाँ एवं गायिकाएँ, शोभा और कमला, परस्पर वार्तालाप कर रही हैं।]

शोभा——सखी कमला, तुम भी इस गौरव का अनुभव करती हो कि मगध-सम्राट् विंबसार की विशेष कृपा-पात्र नर्तकियों और गायिकाओं के रूप में हम दोनों ने इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त की है कि हमें यह अधिकार दिया गया है कि हम प्रत्येक प्रातःकाल की मंगलवेला में इसी प्रकार सम्राट् के इस विशेष अंतः-कक्ष में आकर अपनी संगीत-कला द्वारा उनका सर्वप्रथम वंदन-अभिनंदन किया करें। इसके अतिरिक्त, हमें धन भी विपुल मात्रा में मात्रा मिलता है। इसका एक-मात्र कारण यही है कि सम्राट् विंबसार से बढ़कर संगीत-प्रेमी समूचे जंबूद्वीप में नहीं है और हमारी संगीतसाधना मगध की इस राज-धानी राजगृह-नगर में आज कला के चरम शिखर पर पहुँच चुकी है। किंतु, यह मेरी समझ में नहीं आता कि हमारी इस प्रतिष्ठा से मगध की सम्राज्ञियाँ क्यों ईर्ष्या करने लगी हैं।

कमला—बात यह है, सखी शोभा, कि सम्राज्ञियों का सौंदर्य तो श्वेत, सुचिक्कण एवं बहुमूल्य प्रस्तर से निर्मित प्रतिमाओं के सौंदर्य की भाँति जड़ होता है, कला-साधना के सौरभ की दृष्टि से तो वह नितांत शून्य ही होता है और हम-जैसी संगीतकला-साधिकाओं का सौंदर्य नैसर्गिक कला-प्रतिभा और सतत-साधना की प्राण-प्रेरणा से चेतन एवं सुरभित मानव-सौंदर्य का उज्ज्वल प्रतिमान माना जाता है। इसलिए, सम्राज्ञियों का हमसे ईर्ष्या करना अत्यंत स्वाभाविक ही है।

शोभा—किंतु, हम दोनों में परस्पर ईर्ष्या-द्वेष क्यों नहीं है ?

कमला—क्योंकि हम दोनों जानती हैं कि युगल-गान और युगल-नर्तन सम्राट् की सबसे प्रिय संगीत-कला-विधाएँ हैं और उनका उत्कृष्ट प्रदर्शन हम दोनों अपने ईर्ष्या-द्वेष-मुक्त सक्रिय सहयोग के द्वारा ही कर सकती हैं।

शोभा—और सम्राज्ञियाँ आपस में इतना ईर्ष्या-द्वेष क्यों रखती हैं ?

कमला—क्योंकि वे जानती हैं कि तुलनात्मक रूप में उनमें से प्रत्येक का संमान दूसरी के असंमान के आधार ही पर खड़ा हो सकता है और वे परस्पर-पूरक नहीं हैं।

शोभा—सम्राट् की इतनी अधिक महारानियाँ क्यों हैं ?

कमला—इसलिए कि एकतंत्र-नृपतंत्र-शासन में साम्राज्य का प्रत्येक प्रजाजन सब प्रकार से सम्राट् का दास होता है और सम्राट् को अधिकार होता है कि वह जिस नारी को अपने विशाल अंतःपुर में संमिलित करना चाहे, उसे निस्संकोच होकर तत्काल संमिलित कर ले। इस मगध-साम्राज्य की राजधानी राजगृह-नगर के सबसे अधिक संपन्न उद्यान में जिस प्रकार अगणित पुष्प हैं, उसी प्रकार मगध-सम्राट् के समृद्ध अंतःपुर में भी अनेक महारानियाँ हैं। किंतु, वे सब नाम ही की महारानियाँ हैं; वास्तविक सम्राज्ञी के पद के लिए तो इस समय केवल दो ही में प्रतिस्पर्धा चल रही है। एक अपने सौंदर्य के कारण अपने को इस योग्य समझती है और दूसरी युवराज की माता होने के कारण; किंतु, उन दोनों की प्रतिष्ठा भी अब अस्त होने-वाले सूर्य की आभा की भाँति प्रति-क्षण क्षीण होती जा रही है।

शोभा—क्यों ?

कमला—इसलिए कि केवल पार्थिव-सौंदर्य तो मृग-मरीचिका की भाँति मिथ्या एवं अस्थिर होता है और युवराज अपनी अनुशासनहीनता के कारण सम्राट् का कोप-भाजन बनने लगता है तथा उस कोप का प्रभाव उसकी माता पर भी पड़ता है।

शोभा—क्या सम्राट् बिंबसार इसीलिए अपनी दोनों पट्टराजमहिषियों से मन-ही-मन असंतुष्ट हैं ?

कमला—हाँ !

शोभा—आश्चर्य है कि सम्राट्, इसके विपरीत, हम दोनों पर इतने अधिक कृपालु हैं।

कमला—इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है। यह अत्यंत स्वाभाविक है। इसका कारण यही है कि हमारा आधार ऐसी साधना-संस्कृत कला का चरम विकास है, जो कभी धूमिल नहीं हो सकती और हम दोनोंने अपनेको उस पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष के विष से भी सर्वथा मुक्त कर रखा है, जो कला-साधकों के पतन का कारण होता है। यदि संसार के समस्त कलाकार इसी प्रकार परस्परसहिष्णु बन जायँ, तो, यह विश्व स्वर्ग से भी बढ़कर सुखद और सरस बन जाय।

शोभा—क्या हमसे अधिक योग्य कलांगना से परिचय होने पर सम्राट् हमें भी असंमान एवं उपेक्षा के गर्त में न ढकेल देंगे ?

कमला—उस स्थिति में वह अवश्य ऐसा करेंगे; किंतु, यदि हम अपनी कला-साधना की तंत्री के तारों को निरंतर अध्यवसाय के द्वारा शिथिल होने से रोकती रहें, तो, मगध-साम्राज्य में तो हमें अपदस्थ करा सकनेवाली कोई कलांगना न मिल सकेगी।

शोभा—और मगध-साम्राज्य के बाहर ?

कमला—बाहर का विश्व तो बड़ा विस्तृत है। हमारे पड़ोसी लिच्छवि-जनतंत्र की राजधानी वैशाली-नगरी ही में आम्रपाली ऐसी गायिका और नर्तकी है कि त्रिभुवन में उसका प्रतिमान मिलना आज तो संभव नहीं है; किंतु उससे सम्राट् बिंबसार का परिचय होना अत्यंत कठिन है।

शोभा—मगध-सम्राट् के लिए क्या दुर्लभ है ?

कमला—सम्राट् के लिए भी संसार में बहुत कुछ दुर्लभ है। उदाहरणार्थ, किसी भी सम्राट् को, केवल सम्राट् होने के कारण, किसी वास्तविक स्वाभिमानिनी नारी का आंतरिक हार्दिक स्नेह कभी प्राप्त नहीं हो सकता।

वास्तविक सर्वश्रेष्ठ सौंदर्य और वास्तविक विशुद्ध एवं सर्वोच्च कला से साक्षात्कार भी उसके लिए प्रायः दुर्लभ ही है। जब वह यह समझता है कि उसे संसार का प्रत्येक बहुमूल्य पदार्थ प्राप्त है, तब वह सबसे बड़ी आत्म-वंचना के पाश में बद्ध होता है।

शोभा—क्या आम्रपाली के अप्रतिम सौंदर्य और सर्वोच्च नृत्य-गीत-कला-साधना की ख्याति सम्राट् बिंबसार तक नहीं पहुँची है ?

कमला—अवश्य पहुँची है और वह आम्रपाली को प्राप्त करने के लिए लालायित भी हैं।

शोभा—तब वह उसे प्राप्त करने का प्रयास क्यों नहीं करते ?

कमला—पुष्ट काष्ठ-कोष में छिपी हुई भ्रमरी का मोहक गुंजन सुनने के लिए पहले उस काष्ठ का भेदन करना पड़ता है। उसके पश्चात् भी यह निश्चित नहीं रहता कि भ्रमरी काष्ठ-भेदक को अपने गुंजन के श्रवण के रसास्वादन का अवसर देगी या तत्काल किसी अन्य क्षेत्र की ओर उड़ जायगी। आम्रपाली का सौंदर्य और कला वैशाली के स्वतंत्र जनतांत्रिक लिच्छवि-गणराज्य के साहसी तरुणों की ऐसी गौरवास्पद एवं पावन निधि है, जिसकी रक्षा के किए वे अपने प्राण तक दे सकते हैं। वैशाली-विजय के बिना सम्राट् बिंबसार का आम्रपाली के सौंदर्य और कला के निकट पहुँच सकना असंभव है और वैशाली-विजय के बाद भी सम्राट् के लिए आम्रपाली की उपलब्धि अत्यंत कठिन है।

शोभा—क्यों ?

कमला—इसलिए कि साम्राज्यों की कला-सुंदरियों की अपेक्षा गण-राज्यों की कला-सुंदरियों की आत्माएँ स्वाभिमान और आत्मगौरव से अधिक दीप्त होती हैं। साम्राज्यों की कला-सुंदरियाँ पद-पद पर सम्राटों के संमुख संपूर्ण आत्मसमर्पण के लिए बाध्य होती हैं; किंतु, जनतंत्र-राज्यों की कला-सुंदरियाँ परंपराओं के द्वारा भी केवल सार्वजनिक कला-प्रदर्शन ही के लिए विवश की जा सकती हैं, वह भी अत्यंत संमान के साथ।

शोभा—ऐसी स्थिति में क्या हो सकता है ?

कमला—ऐसी स्थिति में, उद्धत सम्राट् के संमुख अपनी कला के गौरव से उन्नत मस्तक झुकाने की अपेक्षा आम्रपाली आत्मघात-द्वारा मृत्यु का वरण करना अधिक उचित समझेगी । प्रथम तो सम्राट् बिंबसार के लिए वैशाली-विजय अत्यंत असंभव है, दूसरे, यदि उन्हें वैशाली में विजेता की भाँति प्रवेश करने का अवसर मिल भी गया, तो भी, वहाँ उन्हें जीवित आम्रपाली के बदले आत्माहुति दे सकनेवाली आम्रपाली का शव ही मिलेगा ।

शोभा—तब तो समस्या बड़ी जटिल है ।

कमला—निस्संदेह । यह सर्वविदित है कि मगध-सम्राट् बिंबसार ने वैशाली के स्वतंत्र लिच्छवि-गणराज्य पर भूतकाल में अनेक बार आक्रमण किए; किंतु उन्हे प्रत्येक बार असफल होना पड़ा । अब वह उस दिशा में नितांत निराश हो गए प्रतीत होते हैं । संभवतः, अब वह आम्रपाली को पाने का प्रयत्न न करेंगे । उनके लिए अब वैशाली अत्यंत अजेय है । यह दूसरी बात है कि भविष्य में कभी युवराज अजातशत्रु मगध-साम्राज्य के सम्राट् के पद पर आसीन होने के उपरांत वैशाली-विजय के लिए सफल अभियान कर सकें ।

शोभा—मेरा अनुमान है कि सम्राट् बिंबसार अब सैन्य-आक्रमण के स्थान पर किसी अन्य माध्यम से आम्रपाली को पाने का प्रयत्न करेंगे ।

कमला—अन्य माध्यम क्या हो सकता है ?

शोभा—मैंने सम्राट् बिंबसार के स्वभाव का निकट से अध्ययन करने का प्रयत्न किया है । मुझे आश्चर्य न होगा, यदि सम्राट् किसी दिन बौद्ध भिक्षु का वेश धारण करके प्रव्रजन करते हुए वैशाली जा पहुँचें और आम्रपाली की विशुद्ध, हार्दिक, आंतरिक एवं गंभीर बुद्धभक्ति का लाभ उठाकर उसके अतिथि बनकर एकांत में उससे अत्यंत नम्रतापूर्वक प्रेम-निवेदन करें ।

कमला—यदि इससे रुष्ट होकर आम्रपाली उन्हें तत्क्षण अपने प्रासाद से निकलवा दे तो ?

शोभा—आरंभ में अपने 'प्रेम' के पहले 'पवित्र' शब्द लगाना सम्राट् नहीं भूलेंगे, अतः, एकदम निकाला जाना संभव नहीं होगा। धीरे-धीरे आम्रपाली को क्रमशः अपने चाटु-वचनों से प्रसन्न करके तथा उसकी अतिरंजनापूर्ण प्रशंसा करके संभवतः सम्राट् भविष्य में किसी दिन उससे कहेंगे कि यदि वह उनसे गांधर्व-विवाह कर ले, तो, वह उससे प्राप्त होनेवाले अपने भावी पुत्र को मगध-साम्राज्य का युवराज बना देंगे।

कमला—अपने भ्रांतिपूर्ण मूल्यांकन पर आधारित इस प्रलोभन-प्रस्ताव पर क्या आम्रपाली और अधिक रुष्ट न हो उठेगी ?

शोभा—संभव है। किंतु, आम्रपाली के रोष के उस आवेग का शमन सम्राट् यह कहकर कर सकेंगे कि युवराज अजातशत्रु को पदच्युत करके उनके स्थान पर आम्रपाली से प्राप्त होनेवाले अपने भावी पुत्र को मगध का युवराज बनाए बिना वैशाली और मगध में चिरस्थायी मैत्री स्थापित न हो सकेगी, वैशाली पर मगध के भावी आक्रमणों की संभावना निर्मूल न हो सकेगी और दोनों राज्यों में तथागत भगवान् गौतम बुद्ध के धर्म का प्रचार एवं उनकी मंगलमय उपसंपदा की प्रतिष्ठा भली भाँति न हो पाएगी।

कमला—मुझे इसमें संदेह है कि आम्रपाली सम्राट् के इस कपट-पाश में फँस सकेगी। तुम्हारी कल्पना का आधार सुदृढ़ नहीं है।

शोभा—कपट जब तक कपट सिद्ध न हो जाय, तब तक, उसे कपट कैसे समझा जा सकता है ? मुझे तो विश्वास है कि सम्राट् का यह अभिनव उपाय अवश्य सफल हो सकता है, क्योंकि, तथागत भगवान् बुद्ध का दर्शन और तथागत के गणसंघ के सिद्धांतों पर चलनेवाला लिच्छवियों का जनतांत्रिक वैशाली-गणराज्य आम्रपाली को अपने प्राणों से भी अधिक प्रिय है। ऊपर से संगीतकला की गरिमा तथा उसके अनुगत विभव-विलास में मग्न दिखाई देनेवाली आम्रपाली अपने हृदय के अंतराल में सात्त्विक साधिका,

निष्ठावती बौद्धा और प्रबल जनतांत्रिका है । अपने हृदय की इन कोमल एवं आंतरिक भावनाओं के लिए सर्वस्व-बलिदान करने में आम्रपाली को एक क्षण का भी समय नहीं लग सकता ।

कमला—आम्रपाली की इन उत्कट प्रवृत्तियों को देखते हुए उसका भविष्य क्या हो सकता है ?

शोभा—वज्जी-राज्य की जनता के हित-साधन की दृष्टि से कुछ समय के लिए वह भले ही सम्राट् बिंबसार से सौहार्द का अभिनय करे, किंतु, अंततः, उसका भविष्य कुछ और ही होकर रहेगा ।

कमला— वह क्या ?

शोभा—या तो जनतंत्र के लिए प्राणों का बलिदान या बुद्ध को अपनी संपत्ति के सर्वस्व-दान के पश्चात् बौद्ध-भिक्षुणी का तपोमय जीवन ।

कमला—और उनके संगीत-कलांगना के स्वरूप के संबंध में तुम्हारी क्या कल्पना है ?

शोभा—वह भी अस्थायी है । उनका वह वर्तमान स्वरूप उनकी ऐसी वाह्य विवशता है, जिसे उन्होंने केवल कुछ समय के लिए, लिच्छवि-वीरों को स्वतंत्र जनतांत्रिक वैशाली-गणराज्य की रक्षा और उन्नति के लिए बड़े से बड़े बलिदान करने को प्रेरित, प्रोत्साहित और प्रमुदित करने के लिए, अपने राज्य की परंपरा के अनुसार, अंगीकार कर रखा है । अपने इस कर्तव्य-पालन में भी उन्होंने अभी तक किसी कल्मष को अपनी निर्मलता का स्पर्श नहीं करने दिया है ।

[नागरिक वेश में सूर्यपाल और दुर्गा का प्रवेश ।]

दुर्गा—सम्राट् बिंबसार कहाँ हैं ?

कमला—वह अभी तक अपने इस कक्ष में नहीं पधारे हैं । कुछ ही क्षणों में पधारनेवाले हैं । क्या तुम्हें उनसे कोई विशेष निवेदन करना है ?

दुर्गा—हाँ, मैं उनके संमुख एक विशेष अभियोग प्रस्तुत करने आई हूँ ।

शोभा—तुम्हारा नाम ?

दुर्गा—मेरा नाम दुर्गा है।

कमला—[सूर्यपाल से] और तुम्हारा नाम ?

सूर्यपाल—मेरा नाम सूर्यपाल है।

शोभा—तुम कौन हो ?

सूर्यपाल—अच्छा हो, यदि आप दोनों में से कोई एक ही प्रश्न करने का कष्ट करें। दोनों के प्रश्न तो दुधारी तलवार की भाँति दोहरा प्रहार करते हैं।

कमला—प्रश्न का उत्तर दो ! असंबद्ध बात क्यों करते हो ?

सूर्यपाल—अच्छा, क्षमा कीजिए ! देखिए, मैंने तत्काल क्षमा-प्रार्थना-की ढाल आगे करके प्रश्नों की दुधारी तलवार के प्रहार के साथ-साथ आपके रोष के बाण से भी अपनी रक्षा कर ली !

शोभा—फिर असंबद्ध बात की ! शीघ्र वास्तविक प्रश्न का उत्तर दो !

सूर्यपाल—तीर-तलवार के प्रहारों में वास्तविक प्रश्न तो भूल ही गया। कृपया क्षमा कीजिए ! क्या प्रश्न था ?

कमला—तुम कौन हो ?

सूर्यपाल—हाँ, यही प्रश्न था। पहले यही प्रश्न आपकी इन सखी ने किया था; अब आपने भी कर दिया। अच्छा, तो, कृपया सुनिए ! मैं दुर्गा का पति हूँ।

शोभा—नाता-रिश्ता नहीं; अपना व्यवसाय बताओ !

सूर्यपाल—अच्छा, इस प्रकार बारी-बारी से आप दोनों प्रश्नों के बाण छोड़ेंगी ! तब तो धैर्य का सुदृढ़ कवच भी मेरी रक्षा न कर सकेगा।

कमला—अपना व्यवसाय बताओ ! व्यर्थ की बातें न करो !

सूर्यपाल—आश्चर्य है कि मेरी बातों से अभी तक आप दोनों में से एक भी मेरा व्यवसाय न जान सकीं। ढाल, तलवार, बाण और कवच की बात वही कर सकता है, जो स्वयं भी इनका उपयोग करना जानता हो। यद्यपि मैं इस समय सैनिक वेश में नहीं हूँ, तथापि, मेरी बातों से आप दोनों-

में से कम से कम एक को तो यह समझ ही लेना चाहिए था कि मैं सैनिक हूँ। इस प्रकार सूझ-बूझ और विवेक की दोनों आँखों का एक-साथ बंद हो जाना उचित नहीं है; कम से कम एक तो खुली रहनी चाहिए !

शोभा—अपनी अभद्रता को संयत करो ! मगध-साम्राज्य के सैनिक अपनी वीरता के लिए प्रसिद्ध हैं, वाचालता के लिए नहीं । सैनिक होकर तुम्हें इस प्रकार व्यर्थ की बातें न करनी चाहिए ! अच्छा, अपने इस कक्ष में उपस्थित होने का प्रयोजन बताओ !

सूर्यपाल - मैं सम्राट् के संमुख अपना एक विशेष प्रति-अभियोग प्रस्तुत करने आया था; किंतु, आप दोनों के युगल-न्यायालय ने मुझपर बारी-बारी से प्रश्नों के प्रहार कर-करके मुझे क्षुब्ध कर दिया ।

कमला—फिर वही असंबद्ध बात ! यह बताओ कि तुम इस समय यहाँ आ कैसे सके ! क्या द्वार पर प्रहरी नहीं था ?

सूर्यपाल—प्रहरी था क्यों नहीं ? किंतु, उसने मेरे प्रवेश में कोई अवरोध उपस्थित नहीं किया ।

शोभा—क्यों नहीं किया ?

सूर्यपाल—क्योंकि मैंने उसे उसी प्रकार अपने वश में कर लिया, जिस प्रकार चतुर भक्त उदार देव को अपने अनुकूल कर लिया करता है ।

कमला— अर्थात् ?

सूर्यपाल – अर्थात् मैंने जब भक्त की भाँति उसके चरणों में मोहक मुद्राओं का अर्घ्य अर्पित कर दिया, तब वह स्वभावतः देव की भाँति मुझपर प्रसन्न हो गया और उसने मुझे तत्काल यहाँ आने का वरदान दे दिया ।

शोभा —अच्छा ! [**दुर्गा से**] और तुम कैसे आ सकीं दुर्गा ?

सूर्यपाल—यह भी मुझीसे पूछिए ! यह मेरे विरुद्ध असत्य अभियोग प्रस्तुत करने आ रही थीं और मैं इनके अभियोग के विरुद्ध अपना सत्य प्रति-अभियोग प्रस्तुत करने आ रहा था। असत्य के चरण शिथिल हुआ करते हैं और सत्य के तीव्र । अतः, इस कक्ष के द्वार पर भी मैं इनके आगे था और

यह मेरे पीछे । मैंने प्रथम श्रेणी के ब्रह्मास्त्र का प्रयोग करके अर्थात् मोहक मुद्राओं का अर्पण चरणों में चढ़ाकर जब प्रहरी-देव को प्रसन्न करके यहाँ पहुँचने की अनुमति उनसे प्राप्त कर ली, तब इन्होंने उनपर द्वितीय ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर दिया । आख़िर, यह हैं तो मेरी ही पत्नी !

कमला— द्वितीय ब्रह्मास्त्र क्या ?

सूर्यपाल— द्वितीय ब्रह्मास्त्र यह कि इन्होंने प्रहरी-देव के संमुख दंडवत् प्रणाम करके, हाथ जोड़कर, बहुविध चाटु-वचन कहकर, स्तुति-पाठ करके और खीसें निपोरकर यह भी इंगित कर दिया कि यह मेरी पत्नी हैं । इसपर इन्हें भी प्रहरी-देव ने यहाँ आ जाने दिया । यह सर्वविदित तथ्य है कि नृप-तंत्रीय साम्राज्य के प्रशासन में उत्कोच और चाटुकारी ही कार्य-साधन के रथ के दो चक्र होते हैं । वैसे तो यह मेरे विरुद्ध अभियोग प्रस्तुत करने यहाँ आई थीं ; किंतु, यहाँ आने के लिए इन्होंने मेरी पत्नी होने की घोषणा का अस्त्र भी चला दिया । ऐसी मायाविनी महिला के अभियोग में सत्य कहाँ तक हो सकता है, इसका निर्णय सम्राट् अनायास ही कर लेंगे ।

दुर्गा—मेरा अभियोग पूर्णतया सत्य है । मेरा इनके विरुद्ध अत्यंत गंभीर अभियोग है । उसका सार्वजनिक महत्त्व भी है । मैं सम्राट् की सेवा में उसे निवेदित करके न्याय पाने की प्रार्थना करना चाहती हूँ ।

शोभा—क्या अभियोग है ? हम भी तो सुनें !

सूर्यपाल—पुरुष के स्थान पर नारियों के न्यायालय में नारी का अभियोग प्रस्तुत होने पर न्याय की तुला का पलड़ा स्वभावत: नारी ही की ओर अधिक झुकेगा । कर दो प्रस्तुत इन्हींके संमुख अपना अभियोग दुर्गा ! ये मुझसे रुष्ट भी हो चुकी हैं । अत:, इनके संमुख अपना अभियोग प्रस्तुत करने में तुम्हारा अधिक हित ही होगा । ये कोई सामान्य महिलाएँ भी प्रतीत नहीं होतीं । यदि ऐसा होता, तो, प्रात:काल के इस महत्त्वपूर्ण मुहूर्त में सम्राट् के इस विशेष कक्ष में ये इस प्रकार आसीन न होतीं ।

दुर्गा—देवियो, मेरा अभियोग यह है कि यह मगध साम्राज्य के

सैनिक के रूप में अपना कर्तव्य-पालन न करके प्रायः राजद्रोह का अपराध किया करते हैं और मेरे प्रति कर्तव्य-पालन न करके पत्नी-द्रोह का ! साम्राज्य के और मेरे, दोनों के, विरुद्ध ये मुझसे भाँति-भाँति की अनुचित बातें कहा करते हैं। उन्हें सुन-सुनकर मैं अपने जीवन से ऊब उठी हूँ।

सूर्यपाल—यदि कटु एवं कठोर सत्य का स्पष्ट कथन अपराध है, तो, मुझे अपना यह अपराध सहर्ष स्वीकार है। मैं स्वयं वताए देता हूँ कि मैं इनसे प्रायः यह कहा करता हूँ कि नृपतंत्रीय साम्राज्य-शासन में मुद्रा सर्वोपरि देव है। उसमें धन ही की प्राप्ति के लिए सबकुछ किया जाता है और सवकुछ प्राप्त करने के लिए धन ही का उपयोग किया जाता है। साम्राज्य की सीमा में उच्च-पद-प्राप्ति तथा अन्य सर्व-कार्य-साधन के दो ही प्रमुख मार्ग माने जाते हैं, एक उत्कोच और दूसरा चाटुकारिता। मैं इनसे यह भी कहा करता हूँ कि अपने अनुभव से मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि पत्नी का अर्थ है पति को निरंतर उपदेशों के बाणों से छेदने, उपालंभों के खड्ग से काटने और संसार-भर के दुर्लभ पदार्थों का क्रय करके घर लाने के आदेशों के पाशों से निरंतर बाँधने का उपक्रम करती रहनेवाली महामाया।

कमला—तुम्हारी इन धारणाओं का क्या आधार है ?

सूर्यपाल—यदि मेरे इन दोनों मंतव्यों में से एक में भी अणु-मात्र भी असत्य हो, तो, सम्राट् तो सर्वोपरि अधिकारी हैं, आप दोनों ही मुझे प्राण-दंड दे सकती हैं और इसी क्षण दे सकती हैं। मैं भी आपको अपना न्यायाधीश स्वीकार करने को प्रस्तुत हूँ।

कमला—यदि हम इस प्रकरण में अपना निर्णय देंगी, तो, तुम उसे हृदयसे स्वीकार न करके नारियों का नारी के प्रति पक्षपात समझोगे और यदि तुम सम्राट् के आगमन की प्रतीक्षा में यहाँ रुकोगे, तो, अभियोग-श्रवण के पूर्व ही सम्राट् तुम्हें, प्रहरी को कर्तव्यच्युत करके यहाँ आने के अपराध में, दंडित करेंगे। तुम्हारी पत्नी का एकपक्षीय अभियोग सुनना भी उचित न होगा। अतएव, उचित यही है कि तुम दोनों यहाँसे तत्काल लौट जाओ

और न्यायालय के समय में सामान्य न्यायाधीश के संमुख अपना अभियोग और प्रति-अभियोग विधिवत् प्रस्तुत करो !

सूर्यपाल—[दुर्गा से] चलो भद्रे, जैसी आई थीं, वैसी ही लौट चलो ! ये दोनों भद्राएँ अब हमें यहाँ एक क्षण भी न ठहरने देंगी । संभवतः, इनके हृदय में मेरी मेधा और तुम्हारे सौंदर्य के प्रति ईर्ष्या-भाव जाग्रत हो गया है । इस समय यहाँ न तुम्हें न्याय मिलेगा और न मुझे ! मैं ठीक ही कहता था कि मगध-साम्राज्यमें न्याय की प्राप्ति प्रायः असंभव है । यदि कभी किसी सीमा तक वह संभव भी है, तो, मुद्रार्पण और चाटुकारिता ही के द्वारा संभव है ।

[सूर्यपाल और दुर्गा का प्रस्थान ।]

शोभा—हमने सूर्यपाल से चाहे जो कहा हो, किंतु, सूर्यपाल बात तो किसी सीमा तक सत्य ही कहता था । वर्तमान मगध-साम्राज्य में उत्कोच और चाटुवचन का पद अत्यंत उच्च है ।

कमला—होगा । यह प्रश्न हमारी अधिकारसीमा के बाहर है । सम्राट् के शुभागमन का समय संनिकट है । अब ये असंवद्ध बातें समाप्त करके हमें उनके संगीत-कलामय प्रभात-वंदन-अभिनंदन के लिए सन्नद्ध होना चाहिए ।

[सम्राट् बिंबसार का प्रवेश । कमला और शोभा नतमस्तक होकर करबद्ध प्रणाम करती हैं । बिंबसार आसनारूढ़ होते हैं ।]

कमला--परम प्रतापी मगध-सम्राट् की जय हो !

शोभा—संगीत-संरक्षक, कला-परिपोषक मगध-सम्राट् विजयी हों !

बिंबसार—कमला और शोभा, कल संध्या की संगीत-सभा में तुम दोनों के युगल-नृत्य और युगल-गान ने हमारा प्रचुर मनोरंजन करके दिन-भर के गंभीर राज्य-कार्य की हमारी श्रांति का सम्यक् शमन किया, इससे हम बहुत संतुष्ट हुए ! प्रभात के हमारे प्रथम वंदन का तुम दोनों का दैनिक अधिकार तो अक्षुण्ण है ही । उसे हमने आज भी स्वीकार किया । अब तुम

दोनों अपने किसी सुस्वर प्रभात-गीत से हमें दिवस के गंभीर राजनीतिक कार्यों के लिए प्रेरित एवं प्रोत्साहित करो !

[कमला और शोभा का युगल-गान ।]

कमला और शोभा—

जय मागध-अधिराज्य,
जय साम्राज्य महान् ।
प्रबल-प्रताप-पताका फहरे,
अरि-गण हों निष्प्राण ।
कीर्ति निरंतर बढ़े विश्व में,
जैसे नव दिनमान ।
जय साम्राज्य महान् !
अखिल भरत-भू एक-सूत्र में
बाँधें जिसके वीर,
धरा, गगन जिसकी जय-ध्वनि से
गुंजित, प्रखर समीर !
सफल सकल अभियान ।
जय साम्राज्य महान् !
जो वीरत्व-विभा का अधिपति,
जो वैभव का स्थान,
जो शोभा एकता-सूत्र की,
वसुधा का अभिमान,
जिसे सुदृढ़ कर अमर हो गए
वीरों के बलिदान ।
जय साम्राज्य महान् ।

बिंबसार—बड़ा प्रेरक-प्रोत्साहक गीत गाया तुम दोनों ने ! हम बहुत प्रसन्न हुए । अब तुम्हारी कला का रसास्वादन आज की संध्या की संगीत-सभा में किया जायगा । अब हम महामात्य एवं महाबलाधिकृत के शासन-

संबंधी कुछ गुप्त तथा गंभीर मंत्रणाएँ करना चाहते हैं ।

[कमला और शोभा का प्रणाम करके प्रस्थान ।]

बिंबसार—प्रहरी !

[नेपथ्य में प्रहरी "आज्ञा सम्राट् ?" कहता है ।]

बिंबसार—हम महामंत्री वर्षकार और प्रधान-सेनापति चंडभद्र से मंत्रणा करना चाहते हैं ! उन्हें सूचित करो !

[नेपथ्य में प्रहरी "जो आज्ञा सम्राट् !" कहता है । बिंबसार आसन से उठकर कुछ क्षण चिंतन की मुद्रा में टहलते है । फिर बैठ जाते हैं । वर्षकार और चंडभद्र का प्रवेश ।]

वर्षकार और चंडभद्र—सादर अभिनंदन सम्राट् !

[प्रणाम करते हैं ।]

बिंबसार—आइए महामात्य वर्षकार, आइए महाबलाधिकृत चंडभद्र !

[दोनों आसनों पर बैठते हैं ।]

बिंबसार—इस समय मगध-साम्राज्य की उन्नति एवं प्रगति में कुछ अवरोध-सा उत्पन्न हो रहा प्रतीत होता है । इस अवसर पर इस विषय में आप दोनों अनुभवी अधिकारियों के विशेष सत्परामर्श की हमें अविलंब आवश्यकता है ।

चंडभद्र—आपके इस अनुचर के अनुशासन में मगध-साम्राज्य की सेना पूर्ण सशक्त और सन्नद्ध है । सम्राट् जब जो आज्ञा प्रदान करेंगे, उसका पालन पूर्ण क्षमता के साथ तत्काल किया जायगा ।

वर्षकार—मागध सेना और उसके महाबलाधिकृत की योग्यता और पराक्रम पर सभीको पूर्ण विश्वास है । किंतु, साम्राज्य की उन्नति एवं प्रगति के लिए कूटनीतिक राजनयिक उपायों के उपयोग की भी उतनी ही आवश्यकता है । इस संबंध में परामर्श देने के लिए साम्राज्य के इस निष्ठावान् पुराने सेवक की समस्त क्षमता सम्राट् के इंगित की प्रतीक्षा में है ।

बिंबसार—आप दोनों ही के मंतव्य पूर्ण सत्य हैं । उनमें कोई अंतर

नहीं है। हम यह भली भाँति जानते हैं कि सैन्य-बल और कूटनीतिक राजनयिक योजना दोनों ही साम्राज्य की प्रगति एवं उन्नति के रथ के दो तुल्य-बल चक्र हैं। दोनों में से किसी के भी महत्त्व को अणुमात्र भी न्यूनाधिक नहीं आँका जा सकता।

चंडभद्र—यह सत्य है सम्राट्! किंतु, कभी-कभी लंबे कूटनीतिक राजनयिक परामर्शों में वृथा कालहरण भी होता है। मेरी विनम्र संमति में, स्वतंत्र जनतांत्रिक वृजि-गणसंघ का वैशालिक लिच्छविगणराज्य मगध-साम्राज्य के विजय-अभियान की प्रगति के पथ में इस समय सबसे बड़ा और कठोर कंटक है। उसकी राजधानी वैशाली पर तत्काल प्रबल सैन्य-आक्रमण करके उसे अधिकृत कर लेना ही वर्तमान गति-अवरोध के संकट से बचने का एकमात्र अमोघ उपाय है। मैं सम्राट् को पूर्ण विश्वास एवं दृढ़ता के साथ आश्वासन देता हूँ कि इसके लिए मगध-साम्राज्य की सेना इस समय पूर्ण-सक्षम एवं सन्नद्ध है। सम्राट् का इंगित पाते ही हम वैशाली पर अविलंब अधिकार कर ले सकते हैं।

वर्षकार—अत्यधिक आत्मविश्वास वीरता का प्रमुख अंग है, इसमें कोई संदेह नहीं है। किंतु, तत्काल वैशाली-विजय इतना सरल कार्य नहीं है। महाबलाधिकृत चंडभद्र की वीरता और साहस उन्हें प्रेरित कर रहे हैं कि वह सम्राट् को ऐसा परामर्श दें। किंतु, मेरी विनम्र संमति में, इस विषय में इतनी शीघ्रता करना मगध-साम्राज्य के लिए हितकर न होगा। सैन्य-आक्रमण से अंततः अवश्य सफलता प्राप्त हो सकती है; किंतु, इसके लिए पहले कूटनीतिक राजनयिक योजनाओं के जाल भली-भाँति फैला लेना अत्यंत आवश्यक है। भूतकाल में मगध-साम्राज्य वैशाली-गणराज्य को परास्त करने में इसीलिए असफल सिद्ध हुआ था कि उस समय सैन्य-आक्रमण के पूर्व कूटनीतिक राजनयिक योजनाओं के जाल फैलाने की दिशा में पर्याप्त व्यापक एवं सुसंगठित प्रयास नहीं किए जा सके थे।

बिंबसार—महामात्य वर्षकार, क्या इस बार आपकी कूटनीतिक राज-

नयिक योजनाओं के कार्यान्वित किए जाने के पश्चात् सैन्य-आक्रमण करने से सफलता मिलना पूर्णतया सुनिश्चित होगा ?

वर्षकार—समय के पूर्व निश्चित भविष्यवाणी करना राजनयिक कूट-नीति के मूलभूत सिद्धांतों के विरुद्ध है। राजनीति के एक अनुभवी साधक के रूप में मैं ऐसा कैसे कह सकता हूँ ? हाँ, मैं यह अवश्य कह सकता हूँ कि कूटनीतिक योजनाओं को अच्छी तरह कार्यान्वित करने के पश्चात् सैन्य-आक्रमण करने से इस बार मगध-साम्राज्य के लिए वैशाली-विजय का मार्ग अवश्य मुक्त हो जायगा।

बिंबसार—क्या इसमें किंचित् मात्र भी संदेह नहीं है ?

वर्षकार—संभव है, इस बार सैन्य-आक्रमण के पूर्व कूटनीतिक-राज-नयिक योजनाओं की व्यवस्थाएँ पूर्ण कर लेने के प्रयोग में, प्रथम प्रयोग होने के कारण, हमें संपूर्ण सफलता न मिले और हमारा सैन्य-आक्रमण वैशाली को परास्त न कर सके; किंतु, दूसरे आक्रमण में तो हमें अवश्य ही सफलता मिलेगी। उस समय तक युवराज अजातशत्रु का राजनीति तथा सेनासंचालन का अनुभव भी पूर्ण परिपक्व हो जायगा और द्वितीय अभियान में उनके अनुभव-पुष्ट पौरुष का सबल सहयोग पाकर हम लोग अवश्य ही सफल हो सकेंगे।

बिंबसार—यह तो सुदूर भविष्य की बात हुई। इस समय प्रश्न यह है कि तात्कालिक वर्तमान स्थिति में हमें क्या करना चाहिए।

वर्षकार—अभी हमें कुछ समय तक वैशाली में धैर्यपूर्वक अपनी गुप्त कूट-राजनीतिक योजनाओं के जाल अधिक से अधिक व्यापक और गंभीर रूप में फैलाने चाहिए। इस प्रकार उचित पृष्ठभूमि तैयार हो जाने के पश्चात् हमें उस पर सहसा प्रबलतम आक्रमण कर देना चाहिए। किंतु, प्रथम सुनियोजित आक्रमण ही में सर्वांगीण सफलता को पूर्णतया ध्रुव-निश्चित समझकर अभियान न चलाना चाहिए। धैर्य से और भविष्य की आशा से काम लेना चाहिए। लिच्छवियों की शक्ति अभी अजेय एवं अविच्छेद्य है।

उनके सुदृढ़ शक्ति-प्राचीर में यदि हम इस बार केवल कुछ दरारें ही डाल सकें, तो भी, हमें अधीर और निराश न होना चाहिए। प्रथम सुयोजित आक्रमण ही में न सही, भविष्य के लिए तो हमारी सफलता इस प्रकार बिलकुल निश्चित हो ही जायगी।

बिंबसार—यदि युद्ध और कूटजाल को छोड़कर किसी तीसरे उपाय से काम लिया जाय, तो, क्या सफलता नहीं मिल सकती ?

चंडभद्र—तीसरा उपाय ? यह तो कभी किसी ने सोचा नहीं। तीसरा उपाय क्या हो सकता है सम्राट् ?

बिंबसार—तीसरा उपाय भी हो सकता है महाबलाधिकृत चंडभद्र ! वह है मगध और वैशाली के मध्य चिरस्थायी मैत्री-संबंध स्थापित करने का प्रयत्न, जिससे आज मगध की उन्नति एवं प्रगति के मार्ग का कठोर कंटक बना हुआ वैशाली-गणराज्य कल उसके साथ सहयोग का सुरभित सुमन बन सके।

वर्षकार—यह असंभव है सम्राट् ! मगध-साम्राज्य के पुराने निष्ठावान् सेवक के रूप में मैं अपना यह स्पष्ट अभिमत प्रकट कर देना चाहता हूँ कि मगध और वैशाली के मध्य मैत्री-संबंध अनुचित है। वैशाली के वज्जी-लिच्छवि-गणराज्य की पराजय और उसका मगध-साम्राज्य में विलय ही दोनों राज्यों की वास्तविक उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकता है। वैशाली पर निर्णायक सैन्य-आक्रमण करने में हम अभी भले ही कुछ विलंब करें और उस मध्य-काल में वहाँ अपना कूट-राजनीतिक जाल फैलाने का प्रयास करें, किंतु, अंततोगत्वा, निकट भविष्य ही में, हमें वैशाली पर प्रबलतम सैन्य-आक्रमण करके उसे पराजित और अधिकृत करना ही होगा। अनाक्रमण तथा शांति के आधार पर मगध और वैशाली के मध्य स्थायी मैत्री कभी संभव नहीं हो सकती।

बिंबसार—क्यों नहीं हो सकती ?

वर्षकार—क्योंकि मगध और वैशाली के जीवन-दर्शनों में मूलभूत विरोध है।

बिंबसार—मूलभूत विरोध ?

वर्षकार—हाँ। मगध नृपतंत्र-द्वारा शासित साम्राज्य है और वैशाली स्वतंत्र जनतंत्र द्वारा संचालित गणराज्य। इन दोनों प्रणालियों में स्पष्ट और मूलभूत विरोध है। इन दोनों का अस्तित्व परस्पर-विरोधी दो विपरीत दिशाओं के दो विभिन्न ध्रुवों पर अवस्थित है। जनतंत्र दुर्बलता के अनेक व्यक्तियों में वितरण का नाम है और एकराजतंत्र राज्य की शक्ति के स्वाभाविक एवं जन्मजात नेतृत्व द्वारा सुसंगठित तथा चरम विकास का नाम है। साम्राज्य राष्ट्र की एकता की संश्लिष्ट एवं उत्तुंग शक्ति का प्रतीक है और गणराज्य अशक्तता, अनेकता, विभिन्नता और विघटन की प्रवृत्तियों के द्वारा राष्ट्र के राजनीतिक बिखराव का।

बिंबसार—किंतु, दोनों राष्ट्रों की मैत्री से मुझे तो कोई हानि होती प्रतीत नहीं होती।

वर्षकार—आपको अपने पूर्वजों से मगध-साम्राज्य के शासन-सूत्र-संचालन की जो व्यापक, पवित्र और सशक्त धरोहर मिली है, वह इसलिए नहीं कि आप इसे मैत्री-द्वारा जनतंत्र की विपरीत प्रणाली से मिलाकर दुर्बल, विकृत एवं विघटित कर दें, वरन्, इसलिए मिली है कि आप इसे अपने प्रचंड पौरुष एवं अविरत अभियान से समृद्धतर तथा विस्तृततर बनाएँ और दुर्बलता तथा विघटन की, जनतंत्र-नामधारी शक्तियों को विग्रह-द्वारा परास्त करके एवं उन्हें एकता तथा उन्नति के महान् साम्राज्यसंगठन में विलीन करके अधिक उपयोगी बनाएँ !

बिंबसार—महामात्य वर्षकार, आप मगध के सबसे अधिक अनुभवी एवं सुयोग्य राजनीतिज्ञ हैं। आपका यह एकांगी आग्रह आपके योग्य नहीं है। क्या यह दुराग्रह की सीमा को स्पर्श नहीं करता ? राजनीति में पिछले अनुभवों का विशेष महत्त्व होता है। किंतु, आपके मंतव्य से ऐसा प्रतीत होता है कि आप वैशाली-गणराज्य के संबंध में मगध के भूतकाल के अनुभवों से कोई लाभ उठाने को उद्यत नहीं हैं। क्या आपको यह भली भाँति विदित

नहीं है कि भूतकाल में मगध-साम्राज्य ने वैशाली-गणराज्य पर अनेक बार आक्रमण करके लज्जाजनक पराजय ही प्राप्त की थी ? वह वैशालिक लिच्छवियों की उदारता एवं उनकी जनतांत्रिक सिद्धातों पर अविचल निष्ठा ही थी, जिससे उन्होंने मगध-साम्राज्य को केवल पराजित करके छोड़ दिया तथा उसे अधिकृत करके अपनेमें विलीन नहीं कर लिया। यदि वे, आपकी विचार-धारा के अनुसार, अनुदारता एवं दुराग्रह से काम लेते, तो, आज विश्व में मगध-साम्राज्य का नाम तक न होता।

वर्षकार—क्षमा कीजिए, सम्राट्, मेरी विनम्र संमति में, वह वैशालिकों की दुर्वलता थी, उदारता नहीं। अक्षमता को सिद्धांतों का परिधान पहनाना एक पुरानी मानवीय दुर्बलता है। जनतांत्रिक गणराज्य की ऐसी दुर्वलता का अनुकरण यदि नृपतांत्रिक साम्राज्य भी करने लगे, तो, वह उतने समय के पूर्व ही नष्ट हो जाय, जितने समय में गणराज्य उसे आत्मसात् करने में सफल हो सकता हो। वैशालिक लिच्छवि-गणराज्य को अपने विगत अभियानों में मगध-साम्राज्य इसलिए परास्त एवं अधिकृत नहीं कर सका कि उन अवसरों पर कूट-राजनीतिक जाल फैलाकर शत्रु-राज्य की अंतःशक्तियों में फूट उत्पन्न करने की पृष्ठभूमि का सम्यक् निर्माण करके उसपर पूरी शक्ति और तैयारी के साथ आक्रमण नहीं किए गए थे। हमारी वास्तविक त्रुटियाँ ये थीं ; वे नहीं, जिनको ओर सम्राट् इंगित कर रहे हैं। हम सैन्य-वल में दुर्वल कदापि नहीं रहे, केवल अपने वुद्धि-दल का पूर्ण उपयोग करने की दिशा में उस समय किंचित् असावधान रहे थे।

चंडभद्र--मगध-साम्राज्य की सेना पहले भी दुर्वल नहीं रही ! जहाँ तक समय की गति के अनुरूप सैन्य-शक्ति की उन्नति का प्रश्न है, इन दिनों मगध-साम्राज्य की विविध-अंग-वती सेना का इतना अधिक विकास कर लिया गया है कि हमारा इस बार का वैशाली-आक्रमण किसी भी दशा में असफल नहीं हो सकता। सम्राट् हमें आदेश देकर देखें !

वर्षकार—जहाँ तक वैशाली-राज्य के भीतर विग्रह, फूट, दुर्बलता, पारस्परिक शंका-संदेह, वैमनस्य, कलह, ईर्ष्या-द्वेष, भ्रष्टाचार आदि उत्पन्न

करके वैशालिक लिच्छवि-गणराज्य को कूटनीतिक जालों में फँसा लेने की पृष्टभूमि का संबंध है, उसकी पूरी योजना की रूप-रेखा पर विचार कर लिया गया है। सम्राट् का आदेश प्राप्त होते ही सक्रिय रूप से कूट-योजनाओं का वह चक्र चलाकर वैशाली-गणराज्य को भीतर-ही-भीतर इतना दुर्बल, अंतः-कलहग्रस्त, परस्पर-शंकालु और विघटित बना दिया जायगा कि बाहर से हमारी सेना के आक्रमण करते ही भीतर से वैशाली के द्वार खोल देनेवाले वैशाली ही में सन्नद्ध रहेंगे ! केवल थोड़े-से संयम से काम लेना पड़ेगा।

बिंबसार—कितने समय तक ?

वर्षकार—सम्राट् का आदेश पाते ही कूट-जाल-योजनाओं का चक्र चलना आरंभ होने से लेकर उन योजनाओं के पूर्णतया सफल होने तक सैन्य-आक्रमण के उत्साह को यत्नपूर्वक कुछ समय तक निरुद्ध रखना होगा। कूटनीतिक सफलता की पृष्ठभूमि पूर्ण होते ही वैशाली पर अविलंब इतना प्रबल-सैन्य-आक्रमण करना होगा, जितना उसके इतिहास में उसपर कभी किसीने न किया हो। फिर तो पूर्ण सफलता में अणु-मात्र भी संदेह न रहेगा।

चंडभद्र—महामात्य का मंतव्य मुझे भी यथार्थ प्रतीत होता है। समय-क्रम का निर्धारण तो सम्राट् तथा महामात्य ही कर सकते हैं। जहाँ तक मेरा संबंध है, मैं यह निश्चित आश्वासन दे सकता हूँ कि इस बार सम्राट् का आदेश मिलते ही मगध-सेना अपने प्रबलतम आक्रमण द्वारा वैशाली को अल्प समय ही में पूर्णतया उद्ध्वस्त कर देगी।

बिंबसार—किंतु, यह संसार विनाश-लीलाओं ही के हेतु तो निर्मित नहीं हुआ है। इसमें स्नेह, सद्भाव, दया, शांति, मैत्री, करुणा, सहनशीलता और सहयोग के लिए भी तो कुछ स्थान होना चाहिए। मगध-साम्राज्य की इस राजधानी राजगृह-नगर ही के निकटस्थ वन में गृध्रकूट-पर्वत के शिखर पर संसार को मैत्री, शांति और करुणा की अमृत-त्रिवेणी में अवगाहन करानेवाले तथागत भगवान् गौतम बुद्ध इन दिनों विराजमान हैं। उनके वर्त-मान आवास के इतने अधिक निकट होते हुए भी क्या हम इसी समय उनके

सिद्धांतों से इतने अधिक दूर हो जायँ कि केवल साम्राज्य-विस्तार के कलुषित उद्देश्य को लेकर निरपराध वैशाली-गणराज्य में अंतर्विग्रह के विष के कीटाणु फैलाने का कूटनीतिक षड्यंत्र करके उसपर अकारण भीषण सैन्य-आक्रमण कर दें और अपनी इस हीन चेष्टा को मगध-राज्य की उन्नति की चेष्टा की संज्ञा दें ? यह तो किसी भी प्रकार उचित नहीं समझा जा सकता।

चंडभद्र—मगध-साम्राज्य की उन्नति के लिए ही हमें सबकुछ करना होगा।

बिंबसार—हम आज इस तथ्य के प्रति भी कितने सहानुभूति-शून्य हैं कि हमारे पड़ौसी राज्य की राजधानी वैशाली ही में इस समय कला का एक ऐसा महान् एवं निर्मल स्रोत विद्यमान है, जिससे हमें सहृदयता, मानवीय सहानुभूति तथा विश्व-मैत्री की वह हार्दिक प्रेरणा मिल सकती है, जो वास्तविक कला के रस की अनिवार्य फल-निष्पत्ति है !

चंडभद्र—कला का स्रोत ?

बिंबसार—हाँ। महादेवी आम्रपाली ने वर्तमान युग में अपनी अपूर्व संगीतकला-साधना से विश्व में वैशाली का मस्तक गौरव से उन्नत किया है। वह तथागत गौतम बुद्ध के शांति के सिद्धांतों की प्रबल अनुयायिनी हैं।

चंडभद्र—इसका क्या प्रमाण है ?

बिंबसार—उन्होंने अपनी कला की पावन जाह्नवी से सारे संसार को निर्मल, सरस और निर्वैर बनाने का उपक्रम किया है। भगवान् बुद्ध के शांति के क्रांतिकारी दर्शन ही की भाँति आम्रपाली की कला ने भी विश्व में वर्तमान युग में शांति, करुणा, मैत्री, दया, स्नेह और मानवीय सहानुभूति की पावन और सरस धारा बहाने का महान् एवं सतत अनुष्ठान आरंभ कर रखा है। राज्यों की पारस्परिक स्थायी मैत्री के लिए महादेवी आम्रपाली की आत्मा प्रति-क्षण आतुर रहती है। आज हमारे इतने निकट, भगवान् बुद्ध तथा महादेवी आम्रपाली के रूप में, दर्शन और कला के दो उच्चतम प्रतीक संसार को शांति का स्वर्ग बनाने की साधना में संलग्न हैं और हम इतने मूढ़

बने रहना चाहते हैं कि हम कूट-कपट, अशांति, अंतर्विग्रह तथा भीषण युद्ध के आयोजन द्वारा इस विश्व को मानवता के लिए रौरव नरक बनाने के प्रयास की चर्चा करते हैं। क्या यह किसी प्रकार भी उचित समझा जा सकता है ?

चंडभद्र—तब मुझे सम्राट् क्या करने का आदेश देते हैं ?

बिंबसार—महाबलाधिकृत चंडभद्र, आप मगध की सेना को अधिक से अधिक सशक्त बनाने का प्रयास अवश्य करते रहिए, किंतु, स्मरण रखिए कि अब, हमारी परिवर्तित अभिनव नीति के अनुसार, उसका उपयोग किसी अन्य राज्य को परास्त करके उसे मगध-साम्राज्य में विलीन कर लेने के लिए कदापि नहीं होगा; अब उसका उपयोग केवल उस समय, आत्म-रक्षा के लिए, होगा, जिस समय कोई अन्य राज्य मगध को परास्त करके अपनेमें विलीन कर लेने के लिए मगध पर आक्रमण करेगा।

वर्षकार—और सम्राट् का मेरे लिए अब क्या आदेश है ?

बिंबसार—महामात्य वर्षकार, आप प्रौढ़, अनुभवी एवं योग्य राजनीतिज्ञ हैं। अपने और अपने अधीनस्थ कर्मचारियों के राजनीतिक कौशल को आप प्रखरतर बनाने का निरंतर प्रयास अवश्य करते रहिए, किंतु, स्मरण रखिए कि अब, हमारी परिवर्तित अभिनव नीति के अनुसार, उसका उपयोग केवल आत्म-रक्षा के लिए होगा ; साम्राज्य-विस्तार की लिप्सा की पूर्ति के लिए नहीं। जैसा मैं कुछ समय पूर्व आप दोनों से कह चुका हूँ, मैं निश्चित रूप से अब तीसरे उपाय का अवलंबन करना चाहता हूँ और वह होगा मगध और वैशाली के मध्य चिर-स्थायी मैत्री-संबंध स्थापित करने का प्रयत्न, जिससे वैशाली और मगध के पारस्परिक हार्दिक सहयोग से दोनों राज्यों की वास्तविक उन्नति, विकास और प्रगति का नया मार्ग प्रशस्त हो सके।

चंडभद्र—क्या सम्राट् यह स्पष्ट करने की कृपा करेंगे कि इसके लिए अब आप क्या करेंगे ?

बिंबसार—निश्चित रूप से इसके लिए मैं अब आधुनिक युग के विश्व के सबसे महान् दर्शनकार तथागत गौतम बुद्ध तथा अद्वितीय कलानेत्री

महादेवी आम्रपाली की अधिक से अधिक सक्रिय सहायता एवं सहयोग लूँगा। इस दिशा में मैंने कुछ प्रयासों का प्रारंभ भी कर दिया है। अपने इन अभिनव प्रयत्नों में मैं आप दोनोंकी भी पूर्ण सहायता चाहता हूँ।

वर्षकार—सम्राट् स्पष्ट आदेश देने की कृपा करें कि अब हम क्या करें!

बिंबसार—आप दोनों अभी इसी एकांत-कक्ष में कुछ समय शांत चित्त से बैठकर गंभीरतापूर्वक विचार कीजिए कि आप दोनों मेरे इस अभिनव उपक्रम की दिशा में ऐसी कौन-सी योजनाएँ प्रस्तुत कर सकते हैं, जिनसे मेरे नवीन एवं न्यायसंगत दृष्टिकोण के अनुसार मगध-राज्य उन्नति के निष्कंटक पथ पर निरंतर अग्रसर हो सके।

चंडभद्र—जो आज्ञा सम्राट्!

बिंबसार—अच्छा, मैं अब जाता हूँ। आप दोनों इसी क्षण इसी कक्ष में नवीन नीति से सुसंगत अभिनव योजनाओं पर विचार-विमर्श करना आरंभ कीजिए! विलंब के लिए अब अवकाश नहीं है।

[बिंबसार का प्रस्थान।]

चंडभद्र—आप मुझसे अधिक वृद्ध एवं अनुभवी हैं, महामात्य; आप कृपया सम्राट् की अभिनव नीति और दृष्टिकोण पर विचार करके अपने नवीन मंतव्य द्वारा मेरा पथ-प्रदर्शन कीजिए!

वर्षकार—वास्तविक राजनीतिज्ञ का प्रमुख कर्तव्य सत्य का अनुसंधान और प्रतिपादन होता है, महाबलाधिकृत! किंतु, सत्य-कथन को सहन करने-वालों की संख्या अत्यंत अल्प होती है।

चंडभद्र—फिर भी, सत्यकथन से विमुख होना तो कदापि उचित नहीं माना जा सकता। यद्यपि सेनापति का प्रमुख कर्तव्य राज्याध्यक्ष के आदेश और अनुशासन का पालन करना ही होता है, तथापि, महामात्य के स्पष्ट सत्यकथन का संमान करना और उसपर उचित विचार करना भी उसका एक महत्त्वपूण कर्तव्य होना चाहिए।

वर्षकार—क्या आप वास्तव में सत्य सुनना चाहते हैं, चंडभद्र ? तो सुनिए ! मैं आपसे कुछ भी गुप्त नहीं रखना चाहता ! आशा है, आप इसे दूसरों से गुप्त रखेंगे ! सम्राट् का हम दोनों से यह सब कथन अभिनय-मात्र था। वह अपने इस नवीन निश्चय पर तो पहले ही पहुँच चुके थे ; हम लोगों से मंत्रणा केवल इसलिए कर रहे थे कि मंत्रणा को अपने निश्चय की पृष्ठभूमि बता सकें। वास्तव में तो वह मंत्रणा को अपने निश्चय की अनुसरण-कारिणी-मात्र बनाना चाहते थे।

चंडभद्र—क्या वास्तव में अपना यह नवीन निश्चय सम्राट् बहुत पहले ही कर चुके थे ?

वर्षकार—हाँ ! मेरे कुछ अत्यंत विश्वस्त एवं योग्यतम गुप्तचरों ने मुझे यह भेद बताया था कि सम्राट् नवनिर्मित गुप्त भूगर्भ-मार्ग से वैशाली जाकर आम्रपाली के अतिथि भी बन आए हैं और उसे वचन भी दे आए हैं कि मगध की सेना भविष्य में कभी वैशाली पर आक्रमण न करेगी।

चंडभद्र—ऐसा वचन भी दे आए हैं ?

वर्षकार—हाँ।

चंडभद्र—और यह नवनिर्मित भूगर्भ-मार्ग कौन-सा है ?

वर्षकार—यह कितना बड़ा दुर्भाग्य है कि सम्राट् ने अपने इस गुप्त आयोजन का भेद आज तक अपने महाबलाधिकृत को भी नहीं बताया। मैं आपको निश्चित सूचना देता हूँ कि सम्राट् ने अत्यंत गुप्त रूप से हाल ही में एक भूगर्भ-मार्ग बनवाया है, जिससे सम्राट् बिंबसार का राजगृह-स्थित प्रासाद आम्रपाली के वैशाली-स्थित भवन से गुप्त रूप में जुड़ गया है।

चंडभद्र—यह तो सर्वनाश का मार्ग है। इससे मगध के जीवन में एक ऐसा छिद्र हो गया है, जिससे मगध के शत्रु वैशालिक-गण मगध में गुप्त रूप से प्रविष्ट हो सकेंगे।

वर्षकार—आपका कथन सत्य है। निस्संदेह इस गुप्त भूगर्भ-मार्ग से मगध के सर्वनाश का द्वार खुल गया है। यह कहे बिना नहीं रहा जा सकता कि बिना जाने सम्राट् ने इसके रूप में एक प्रकार का राष्ट्र-द्रोह किया है और आत्म-नाश का उपक्रम आरंभ कर दिया है।

चंडभद्र—राष्ट्रद्रोह और आत्मनाश ?

वर्षकार—इससे भी अधिक भयानक तथ्य यह है कि उन्होंने आम्रपाली के मोह में पड़कर मगध-साम्राज्य को वैशाली के संबंध में अनाक्रमण के आश्वासन के बंधन में बाँध दिया है। सम्राट् बिंबसार के प्रति हम दोनों ने निष्ठा की शपथ अवश्य ग्रहण की है; किंतु, उसी शपथ के उत्तरदायित्व की प्रेरणा है कि हम सम्राट् को आत्मघात के इस अत्यंत अनुचित प्रयास से बचाएँ। यह आत्म-नाश इसलिए भीषणतर है कि इससे उनके साथ-साथ मगध-साम्राज्य का भी विनाश निश्चित है।

चंडभद्र—मगध-साम्राज्य का विनाश ?

वर्षकार—हाँ। अनाक्रमण के वचन के मोहपाश में आबद्ध मगध की सेना अब सेना नहीं रही, वह अब सेना का शव-मात्र है। सेनाविहीन मगध नख-दंत-हीन सिंह के समान है, जिसपर शृगाल भी, समूह बनाकर, घातक आक्रमण कर सकते हैं।

चंडभद्र—तब तो वास्तव में हम लोगों की स्थिति नितांत दयनीय हो गई है। किंतु, हम सम्राट् के प्रति निष्ठा की जो शपथ ले चुके हैं, उसके बंधन के कारण हम ऐसा कोई कार्य कदापि नहीं कर सकते, जिसके लिए हमें सम्राट् की अनुमति प्राप्त न हो।

वर्षकार—यदि आपको यह विश्वास हो जाय कि सम्राट् वास्तव में आत्मघात तथा राष्ट्रद्रोह का उपक्रम कर रहे हैं, तो, क्या, उस स्थिति में भी आप सम्राट् की आज्ञा के अभाव में उन्हें उस उपक्रम से न रोकेंगे और यदि आप इस निश्चय पर भी पहुँच जायँ कि सम्राट् के उस आत्मघात के यत्न के साथ साम्राज्य का विनाश भी संग्रथित है, तो, क्या उस दशा में भी आप निश्चेष्ट दर्शक ही बने रहेंगे ?

चंडभद्र—इस विषय में आपके विचारों से मैं कुछ सहमत तो होता जा रहा रहा हूँ, किंतु, मैं अभी तक यह नहीं समझ पाया हूँ कि इस दिशा में मुझे व्यावहारिक रूप में क्या करना चाहिए !

वर्षकार—यह मैं भी स्वीकार करता हूँ कि आपको कोई ऐसा कार्य न करना चाहिए, जिससे सम्राट् आपसे अप्रसन्न हों। किंतु, ऐसे किसी कार्य के करने में आपको किंचित्-मात्र भी संकोच न करना चाहिए, जिससे सम्राट् के संतोष के साथ-साथ साम्राज्य का भी व्यापक हित हो। हमारा राजनीतिक कौशल इसीमें है कि हम अपनी प्रत्येक योजना किसी-न-किसी प्रकार सम्राट् से भी स्वीकृत करा लें।

चंडभद्र—कृपया मेरे तात्कालिक कर्तव्य के संबंध में अपने मंतव्य का आशय और अधिक स्पष्ट कीजिए !

वर्षकार—मेरी संमति में आपको अभी केवल यह करना चाहिए कि आप मागध सेना को अधिक से अधिक बलशालिनी बनाएँ, उसपर अपना अनुशासन अधिक से अधिक दृढ़ करें, उसमें मगध-साम्राज्य के विस्तार की हार्दिक आकांक्षा रखनेवाले अपने विशेष विश्वासपात्र अधिकारियों को अधिक संख्या में नियुक्त करें और सेना को इसके लिए सन्नद्ध रखें कि वह आपका आदेश पाते ही तत्क्षण मगध-साम्राज्य के शत्रु वैशालिक-लिच्छवियों पर सिंह की भाँति भीषण आक्रमण करके उन्हें अविलंब पूर्णतया नष्ट कर दे। मैं ऐसी परिस्थितियाँ बना दूँगा कि कुछ ही समय पश्चात् सम्राट् बिंबसार आपको वैशाली पर आक्रमण करने की अनुमति दे दें। किंतु, आक्रमण के उचित क्षण का निर्धारण करने में आप सम्राट् के साथ-साथ मेरी भी सहमति प्राप्त कर लेने की कृपा कीजिएगा।

चंडभद्र—आपका यह परामर्श तो मुझे उचित ही प्रतीत होता है; किंतु, वैशाली पर आक्रमण करने के लिए सम्राट् की अनुमति प्राप्त करना मुझे तो असंभव ही प्रतीत होता है। वह जो दिशा हमें अभी बता गए हैं, उससे यह नितांत विपरीत है।

वर्षकार—इस असंभव को संभव बनाने का उत्तरदायित्व आप मुझपर छोड़ दीजिए !

चंडभद्र—आप उसे कैसे संभव बनाएँगे ?

वर्षकार—स्मरण रखिए कि हम लोग सम्राट् बिंबसार के माध्यम से मगध-साम्राज्य के सेवक हैं ; आम्रपाली के माध्यम से वैशाली-गणराज्य के अनुचर नहीं। हमें मगध-साम्राज्य के हित के लिए सबकुछ करना होगा और उसीमें सम्राट् का भी वास्तविक हित समझना होगा। यदि आम्रपाली के मोह में पड़कर सम्राट् बिंबसार वैशाली के समक्ष इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप में आत्म-समर्पण करने को उद्यत हो रहे हैं, तो, हमें अपने राजनीतिक कूट-कौशल से उन्हें इस अधोगति से बचाना ही पड़ेगा और यह हमें उन्हींके हित की दृष्टि से और उनसे भी अधिक आदरणीय मगध-साम्राज्य के हित की दृष्टि से करना पड़ेगा।

चंडभद्र—यदि आप अनुचित न समझें, तो, कृपया अपने उस कूट-कौशल की रूप-रेखा मुझे भी समझाने का कष्ट कीजिए !

वर्षकार—कंटक से कंटक निकालना एक पुराना अनुभूत प्रयोग है। आम्रपाली और गौतम बुद्ध के मोह से सम्राट् बिंबसार और मगध-साम्राज्य को मुक्त कराने के लिए हमें उन्हीं दोनों के मार्गों को अपनाना पड़ेगा।

चंडभद्र—वह कैसे ?

वर्षकार—गौतम बुद्ध की इस समय वैशाली और मगध दोनों में अत्युच्च प्रतिष्ठा है। उनके अनुयायियों को दोनों ही राज्यों में अत्यधिक विश्वास की दृष्टि से देखा जाता है। अतः, हमें तत्काल बहुत बड़ी संख्या में अपनी गुप्तचरसेना में ऐसे स्त्री-पुरुषों को प्रविष्ट कराना चाहिए, जो गौतम बुद्ध के अनुयायियों का सफल अभिनय कर सकें। ऐसे लोगों को छद्म-रूप में बड़ी संख्या में वैशाली में प्रविष्ट करा दिया जाना चाहिए। वे वैशाली की नागरिकता अनायास प्राप्त कर ले सकेंगे और हमारे शत्रुओं के उस गढ़ में रहते हुए भी हमारा ही हित-साधन किया करेंगे।

चंडभद्र—और आम्रपाली के अनुयायी ?

वर्षकार—हम लोगों को सम्राट् बिंबसार से प्रार्थना करनी चाहिए कि मगध और वैशाली में स्थायी मैत्री स्थापित कराने के लिए दोनों में पहले

सुदृढ़ सांस्कृतिक संबंध स्थापित कराया जाय और इसके लिए दोनों देशों के कलाकारों को, बुद्धानुयायियों ही की भाँति, दोनों देशों में स्वतंत्रता तथा संमान के साथ आने-जाने और रहने दिया जाय।

चंडभद्र—यह प्रार्थना कैसे स्वीकृत हो सकेगी ?

वर्षकार—आम्रपाली के कलादर्शों के समर्थकों को प्रतिष्ठा के क्षेत्र में प्राथमिकता देने का हमारा यह अनुरोध भी मगध-सम्राट् और वैशाली के राष्ट्राध्यक्ष, दोनों ही, तत्काल स्वीकार कर लेंगे। तब हम ऐसे संगीतज्ञ स्त्री-पुरुषों को आम्रपाली के शिष्यसमुदाय में बड़ी संख्या में शीघ्र ही दीक्षित करा देंगे, जो वैशाली में रहते हुए भी, छद्म-रूप में, हमारे गुप्तचर बनकर, मगध ही के हित-साधन की चेष्टा में निरंतर रत रहें। इस प्रकार बहुत बड़ी संख्या में गुप्तचरों को वैशाली में मगध के हित-साधन के लिए हम लोग नियुक्त कर देंगे। उनके निकटस्थ संबंधियों के रूप में भी हमारे बहुतसे गुप्तचर वैशाली में बस सकते हैं।

चंडभद्र—इसके लिए धन की व्यवस्था कैसे होगी ?

वर्षकार—इन कार्यों के लिए प्रचुर धन की व्यवस्था की स्वीकृति सम्राट् बिंबसार तत्काल सहर्ष दे देंगे, क्योंकि, सैन्य-बल बढ़ाने के लिए गुप्तचर बढ़ाने में उन्हें कोई आपत्ति न होगी, उसके लिए वह प्रचुर मात्रा में पृथक् धन स्वीकृत करेंगे ही; गौतम बुद्ध तथा आम्रपाली के लिए भी उनके हृदय में अत्यंत उच्च स्थान है, अतः, उन दोनों के अनुयायियों के सत्कार के लिए भी वह विपुल धन पृथक् रूप में सहर्ष दे देंगे। बाह्य रूप में हमारी ये छद्मयोजनाएँ उन्हीं दोनों के सिद्धांतों और संस्कृति के प्रचार के लिए निर्मित हुई प्रतीत होती रहेंगी।

चंडभद्र—मैं आपके अद्भुत राजनीतिक बुद्धिवैभव का प्रशंसक हूँ। मुझे विश्वास हो गया है कि इन योजनाओं के लिए प्रचुर धन-व्यय की व्यवस्था आप अपने जिस बौद्धिक कूट-कौशल से करा ले सकते हैं, उसीसे इन योजनाओं को कार्यान्वित करके वैशाली-गणराज्य को आंतरिक विग्रह, फूट,

ईर्ष्या-द्वेष, शंका-संदेह, पारस्पारिक वैमनस्य आदि के जाल में फँसाकर दुर्बल भी बना दे सकते हैं ; किंतु, मैं यह नहीं समझ पा रहा हूँ कि आप मगध-सम्राट् से वैशाली पर सैन्य-आक्रमण करने की अनुमति मुझे कैसे दिला सकेंगे, जब सम्राट् वैशाली से, आम्रपाली के माध्यम से, स्थायी मैत्री बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प दिखाई दे रहे हैं।

वर्षकार—अभीष्ट कूटनीतिक पृष्ठभूमि तैयार हो चुकने के उपरांत ऐसी परिस्थितियों के निर्माण में भी अधिक समय न लगेगा, जिनके कारण विवश होकर सम्राट् को वैशाली पर सैन्य-आक्रमण करने की अनुमति भी आपको दे देनी पड़े। इसके लिए कौशलपूर्वक आवश्यक वातावरण बनाया जायगा और यदि आप और युवराज अजातशत्रु मेरी योजनाओं के कार्यान्वयन में मुझसे हार्दिक एवं सक्रिय सहयोग करेंगे, तो, मैं वैशाली पर सैन्य-आक्रमण को स्वयं सम्राट् बिंबसार के लिए, अल्प समय ही में, एक अनिवार्य आवश्यकता बना दूँगा।

चंडभद्र—यह कैसे हो सकेगा ?

वर्षकार—अत्यंत स्वाभाविक उपाय से। आप मगध-सेना के महाबलाधिकृत हैं और सम्राट् ने आपको आत्म-रक्षा के लिए सेना को अधिक से अधिक सशक्त बनाते रहने और सदा सन्नद्ध रखने की अनुमति तो दे ही रखी है ; केवल आक्रमण पर उन्होंने प्रतिबंध लगा रखा है। आक्रमण के अतिरिक्त सैन्य-संचालन-संबंधी समस्त गतिविधियों के विषय में आपको पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त है। आप उस स्वतंत्रता का उपयोग मगध-साम्राज्य के हित में कर सकते हैं और साम्राज्य के हित में सम्राट् का हित भी निहित है। इसमें किसी विचारशील मागध को कोई संदेह नहीं होना चाहिए कि मगध-साम्राज्य का वास्तविक एवं सर्वोच्च हित इस समय वैशाली पर आक्रमण, उसकी पराजय और उसके मगध में विलय ही में है।

चंडभद्र—किंतु, मेरी इस स्वतंत्रता में आक्रमण की स्वतंत्रता का समावेश तो है नहीं। फिर ?

वर्षकार—दो प्रतिद्वंद्वी राज्यों का सीमावर्ती क्षेत्र प्रति-क्षण उत्तेजनापूर्ण एवं विस्फोटक स्थिति में तो रहता ही है, मेरे परामर्श से आप मगध तथा वैशाली के वर्तमान सीमाक्षेत्र के निकट दोनों ओर की सेनाओं के द्वारा नियुक्त सैनिकों से मध्य किसी भी समय ऐसी कोई विशेष उत्तेजक स्थिति उत्पन्न कर दे सकते हैं कि प्रारंभिक लघु आक्रमण हमपर शत्रु-देश की ओर से हो जाय। सम्राट् को उसका विवरण प्रेषित करते समय आप उसे शत्रु-पक्ष का गंभीर आक्रमण तथा मगध-साम्राज्य की प्रतिष्ठा पर भीषण प्रहार बता सकते हैं। इससे स्वाभिमानी सम्राट् बिंबसार के हृदय में प्रतिशोध की जो भीषण ज्वाला सहसा भड़क उठेगी, उसमें आम्रपाली के प्रति उत्पन्न मोह कुछ समय के लिए तो भस्म हो ही जायगा और सम्राट् तत्काल वैशाली पर सैन्य-आक्रमण करने का आदेश दे देंगे। मैं भी उन्हें इसके लिए उत्तेजित करूँगा।

चंडभद्र—आपकी कूटनीतिपटुता, राजनीतिक चातुर्य एवं बुद्धिकौशल वास्तव में प्रशंसनीय है। किंतु, क्या हम अपने सीमांत के निकट नियुक्त वैशाली के सैनिकों को मागध सैनिकों पर आक्रमण करने के लिए अनायास उत्तेजित कर सकेंगे ?

वर्षकार—अवश्य कर सकेंगे। वैशाली द्वारा भूतकाल में मगध पर जो विजय प्राप्त की जा चुकी है, उससे प्रत्येक वैशालिक सैनिक आज तक अभिमान से मदमत्त है। मगध की सीमा पर नियुक्त वैशालिक सैनिक तो और भी अधिक उद्दंड, उद्धत एवं विजयमत्त हैं। हमारी लघु सैनिक-गतिविधि की छेड़छाड़ ही से उत्तेजित होकर वे मागध सैनिकों पर सामान्य आक्रमण तो कर ही दे सकते हैं। फिर तो तिल का ताड़ बनाना आपके हाथ में है और मगध-साम्राज्य के व्यापक हित की दृष्टि से उसमें कोई अनौचित्य भी नहीं है। आप अपने किसी अत्यंत विश्वस्त तथा कूटनीति-निपुण, सैन्य-सहायक को वैशाली की सीमा पर मगध-सेना का संयुक्त-प्रभारी नियुक्त कर दीजिए, उसका पथ-प्रदर्शन आप स्वयं करते रहिए और मैं सम्राट् को इसके

लिए सहमत कर लूँगा कि वह युवराज अजातशत्रु को भी निरीक्षण के लिए वहीं भेज दें।

चंडभद्र—इससे क्या होगा ?

वर्षकार—जहाँ युवराज अजातशत्रु-जैसे उग्र अधिकारी नियुक्त हों, वहाँ, सीमावर्ती शत्रु-सैनिकों से मागध सैनिकों की सामान्य छेड़छाड़ और भी अधिक स्वाभाविक हो जा सकती है। वैशालिक सैनिकों को यह भली-भाँति ज्ञात नहीं है कि इन दिनों मागध सेना की शक्ति कई गुनी बढ़ चुकी है। अतः, वे अपनी पुरानी विजय के अभिमान के कारण मागध सैनिकों की साधारण छेड़छाड़ ही से तत्काल उत्तेजित होकर उनपर मध्यम गंभीरता का आक्रमण तो कर ही बैठेंगे। फिर तो आप, हम और अजातशत्रु, तीनों, मिलकर भावुक और स्वाभिमानी सम्राट् बिंबसार का सिंह-पौरुष जगाने में तत्काल समर्थ हो जायँगे, जिसके कारण उनका आम्रपाली के प्रति मोह कुछ समय के लिए विस्मृत हो जायगा। उत्तेजित सम्राट् के मुख से सैन्य आक्रमण का आदेश निकलते ही आप और अजातशत्रु सम्राट् की कल्पना से बहुत अधिक प्रबल आक्रमण वैशाली पर अविलंब कर दीजिएगा।

चंडभद्र—उसके पश्चात् ?

वर्षकार—उसके पश्चात् तो स्वभावतः युद्ध की ऐसी प्रचंड महाज्वाला प्रदीप्त होगी, जिसके कारण मागध सैनिकों के आक्रमण की कोपाग्नि में वैशाली जलकर सदा के लिए भस्म हो जायगी। वैशाली के सर्वनाश की पृष्ठभूमि ही पर मागध साम्राज्य की वास्तविक उन्नति का पथ प्रशस्त होगा, क्योंकि, दोनों के जीवन-दर्शनों और जीवन-प्रणालियों में मूलभूत भेद है। मगध-साम्राज्य की चरम उन्नति ही में भारतवर्ष और जंबू-द्वीप के निवासियों का वास्तविक हित है, क्योंकि, महान् मागध चक्रवर्ति-साम्राज्य ही विशालतम एवं छिन्न-भिन्न भू-भाग को एकता के सुदृढ़ सूत्र में बाँधकर उसके समस्त निवासियों का अधिकतम कल्याण-साधन कर सकता है और उन्हें स्थायी शासन प्रदान कर सकता है। छोटे-छोटे जनतांत्रिक गणराज्य यह कार्य-साधन नहीं कर सकते।

चंडभद्र—क्यों ?

वर्षकार—क्योंकि उनसे तो भारतवर्ष और अधिक छिन्न-भिन्न और दुर्बल ही बनेगा और उसके निवासी भीषण राजनीतिक विशृंखलता, विघटन और अस्थायी शासन की अस्थिरता के कष्टों के भक्ष्य बन जायँगे। जंबूद्वीप का हित भारतवर्ष के हित में निहित है और भारतवर्ष का हित मगध-साम्राज्य के हित में। मगध-सम्राट् का हित भी मगध-साम्राज्य के हित ही में अंतर्निहित है। कृपया सदैव स्मरण रखिए कि वैशाली के विनाश के बिना मगध का विकास, उन्नति एवं हित कदापि संभव नहीं है। अत:, आपको उसी प्रकार मोहमुक्त होकर वैशाली पर आक्रमण का उपक्रम करना चाहिए, जिस प्रकार अर्जुन ने कौरवों पर आक्रमण किया था।

चंडभद्र—आपकी कूटनीतिक योजनाओं की पृष्ठभूमि भी तो हमारे वैशाली आक्रमण को शीघ्र सफल बनाने में सहायक होगी।

वर्षकार—अवश्य ! हमारे बहुसंख्यक गुप्तचर विविध वेशों में अभीसे वज्जी और मगध में स्थान-स्थान पर निवास और विचरण करके दोनों राज्यों के निवासियों में पारस्परिक प्रतिस्पर्धा और वैमनस्य के भावों का निरंतर प्रचार करेंगे। जब तक इस कार्य में उन्हें पर्याप्त सफलता प्राप्त न हो जाय, तब तक आप और अजातशत्रु सीमा-क्षेत्र में वैशालिकों से सैनिक छेड़छाड़ आरंभ न कीजिएगा। कूट-जाल फैलाने में पूर्ण सफलता मिलते ही मैं आपको संकेत दूँगा। उसी समय आप छेड़छाड़ कराकर वैशालिक सैनिकों को मागध सैनिकों पर आक्रमण करने के लिए उत्तेजित करा दीजिएगा। उनका आक्रमण होते ही उसके अतिरंजित विवरण-मात्र से भावुक सम्राट् बिंबसार को प्रबल आक्रमण के लिए उत्तेजित कर सकना सरल हो जायगा। उस उत्तेजना से सम्राट् के आम्रपाली के प्रति मोह का अंधकार नष्ट हो जायगा और मगध-साम्राज्य की महती विजय का प्रचंड सूर्योदय होगा। मैं आपको पुन: यह आश्वासन देता हूँ कि मगध-साम्राज्य के उस महान् अभ्युदय

ही में सम्राट् बिंबसार का हित निहित होगा और इस प्रकार सम्राट् के प्रति आपकी निष्ठा की शपथ भी न टूटेगी ।

चंडभद्र—आपने अपनी कूट-योजना बार-बार दोहराकर मुझे भली भाँति समझा दी है । इससे मुझे पूर्ण विश्वास हो गया है कि इस समय आपसे बढ़कर राजनीतिज्ञ समूचे जंबू-द्वीप में कोई नहीं है और आपकी योजना के कार्यान्वित किए जाने से भारतवर्ष के निवासियों का वास्तविक कल्याण होगा । मगध-साम्राज्य और सम्राट् बिंबसार का कल्याण भी उसीमें निहित है । अतः, सम्राट्-निष्ठा की शपथ के उल्लंघन का अपराधी बने बिना ही मैं आपकी योजना को सफल बनाने में आपसे पूर्ण सहयोग कर सकता हूँ । किंतु, न जाने क्यों मेरा हृदय फिर भी ....

वर्षकार—कृपया अपने हृदय के संकोच पर कर्तव्य-भावना के द्वारा कठोर नियंत्रण कीजिए ! किसी प्रकार के असमंजस के लिए अब एक क्षण का भी अवकाश नहीं है । महाबलाधिकृत चंडभद्र, आप महान् वीर पुरुष हैं। अतः, मोह, संकोच, असमंजस और संकीर्णता से ऊपर उठकर आपको उच्च लक्ष्य के लिए तत्परता से कार्य करना चाहिए । मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपको इस बार वैशाली पर विजय अवश्य और शीघ्र प्राप्त होगी और उसके कारण आप मगध और भारत के इतिहास में एक चिरस्मरणीय महान् सेनानायक के रूप में अमर हो जायँगे । मैं फिर कहता हूँ कि इस नई योजना ही में सम्राट् का भी वास्तविक हित निहित है ।

[एक पार्श्व से वर्षकार का प्रस्थान तथा दूसरे पार्श्व से सुवीर का प्रवेश ।]

चंडभद्र—वत्स सुवीर, तुम इस समय यहाँ कैसे ?

सुवीर—पिताजी, आप जानते ही हैं कि आपके पुत्र के रूप में सम्राट् ने मुझे अपने प्रासाद के प्रत्येक कक्ष में प्रत्येक समय अबाध प्रवेश का अधिकार दे रखा है । उसीके आधार पर मैं इस समय यहाँ आ सका हूँ । मैं आजकल महामात्य वर्षकार की अनुचित गतिविधियों का अनुसंधान कर रहा हूँ और उनके विरुद्ध मैं मगध की जनता को सावधान करना चाहता हूँ ।

क्या आप महामात्य से कोई अत्यंत गुप्त मंत्रणा कर रहे थे ? उन्हें यहाँसे प्रस्थित होते मैंने देख लिया है !

चंडभद्र—क्या तुम, मगध की जनता को सम्राट् के विरुद्ध विद्रोही बनाना चाहते हो ? मुझे तुम्हारा यह कार्य अनुचित प्रतीत होता है। तुम सम्राट् के अत्यंत कृपा-पात्र हो। वह तुम्हें अपनी सेना में सहायकसेनापति का पद देना चाहते हैं। तुम इसकी पूर्ण योग्यता भी प्राप्त कर चुके हो। तुम्हें साम्राज्य की सेवा करनी चाहिए और अपने पद के गौरव के अनुरूप वधू का चयन करके विवाह करना चाहिए। व्यर्थ के कार्यों में अपना समय नष्ट नहीं करना चाहिए। मेरे जीवन का लक्ष्य तो सुदृढ़ सैन्य-संगठन द्वारा मगध-साम्राज्य का हितसाधन ही है। उसीके संबंध में मैं यहाँ महामात्य वर्षकार से विचार-विमर्श कर रहा था।

सुवीर—मगध-साम्राज्य के महाबलाधिकृत के रूप में आपका उत्तर-दायित्व महान् है। उसीके संदर्भ में मैं अत्यंत नम्रतापूर्वक आपको महा-मात्य वर्षकार के संबंध में सावधान करना अपना पवित्र कर्तव्य समझता हूँ। वर्षकार अपनी कूटनीति से विश्व के विनाश का उपक्रम कर रहे हैं, जिसमें मगध का विनाश भी संमिलित है।

चंडभद्र—मगध का विनाश ?

सुवीर—हाँ ! वैशाली जनतंत्र से अनेक बार पराजित हो चुकने पर भी वैशाली पर पुनः सैन्य-आक्रमण करना क्या मगध की निर्लज्जता की परा-काष्ठा न होगी ? क्या उससे इस बार क्रुद्ध वैशालिकों द्वारा मगध का पूर्ण विनाश न कर दिया जायगा ? वर्षकार—जैसे कुटिल राजनीतिज्ञों को इसमें क्रूर आनंद आता है कि विश्व के विभिन्न राष्ट्रों में सशस्त्र विग्रह बढ़े और हिंसा की प्रचंड ज्वाला में जलकर विश्व का विनाश हो जाय। प्रेम, मैत्री, करुणा आदि के द्वारा विश्वशांति की स्थापना के मार्ग में वर्षकार—जैसे कुटिल व्यक्ति सबसे बड़ी बाधा हैं। सम्राट् और आप हृदय से युद्ध नहीं चाहते। किंतु, वर्षकार आप दोनों की हार्दिक इच्छा के विरुद्ध आप दोनों-

को युद्ध की ओर प्रेरित करना चाहते हैं। आप दोनों सहृदय, वीर और भोले व्यक्ति वर्षकार की कूटनीति के जाल में फँसकर मगध का और अपना विनाश करना चाहते हैं।

चंडभद्र—तुम क्या करना चाहते हो ?

सुवीर—मैं उच्च पद और व्यक्तिगत सुख-सुविधा की लिप्सा में न पड़कर एक सामान्य व्यक्ति के रूप में मगध की जनता की निस्स्वार्थ तथा अथक सेवा करना चाहता हूँ। मैं नगर-नगर और ग्राम-ग्राम में परिव्रजन करके मगध की जनता को सम्राट् की इच्छा के विरुद्ध मगध को युद्ध की भीषण अग्नि में झोंकने के वर्षकार के षड्यंत्र के विरुद्ध सन्नद्ध करना चाहता हूँ।

चंडभद्र--इसका फल यह होगा कि तुम कारागार में होगे।

सुवीर—उच्च पद की सुखसुविधाओं के प्रलोभन में फँसकर अपने राष्ट्र को विनाश की ओर जाते देखने की अपेक्षा कारागारवास कहीं अधिक कल्याणकारी होगा। वार-वार वैशाली से परास्त होकर भी उसपर आक्रमण करके तथागत बुद्ध के मैत्री, करुणा और अहिंसा के मार्ग को सदा के लिए अवरुद्ध कर देना कुटिल राजनीतिज्ञों का षड्यंत्र ही हो सकता है, सम्राट् और उनके प्रधानसेनापति जैसे वीर तथा सहृदय व्यक्तियों का कार्य नहीं हो सकता। कुटिलता और क्रूरता वीरों का कार्य नहीं है, वह तो जघन्य व्यक्तियों ही का कुकृत्य हो सकता है।

चंडभद्र—तुम मुझसे क्या चाहते हो ?

सुवीर—कोई सुखसुविधा, संपदा या उच्च पद मैं आपसे नहीं चाहता। मैं केवल आपका आशीर्वाद चाहता हूँ। वर्षकार के कूटजाल में फँसे होने पर भी हृदय से आप एक पुण्यात्मा मानव हैं। मुझे विश्वास है कि आप किसी दिन भगवान् बुद्ध के शांति के पथ के पथिक बनेंगे। सेना जनतंत्र भी रखते हैं, पर, केवल आत्मरक्षा के लिए, साम्राज्यविस्तार की लिप्सा से आक्रमण करने के लिए नहीं।

चंडभद्र—क्या तुम बौद्ध भिक्षु बनना चाहते हो ?

सुवीर—भिक्षुओं की संख्या असीम नहीं हो सकती, असीम तो सामान्यजनों ही की संख्या हो सकती है। मैं सामान्यजन ही की भाँति रहना चाहता हूँ और उच्च विचारों वाली सामान्य घर की पुत्री ही से विवाह करना चाहता हूँ, जो मेरे साथ यातनाओं के पथ पर धैर्य और साहस के साथ चल सके। मेरा दृढ़ विश्वास है कि भगवान् बुद्ध के आदर्शों के विश्व का निर्माण केवल भिक्षुओं के वश की बात नहीं है। उसके लिए तो विश्व के असंख्य सामान्यजनों को सक्रिय होना पड़ेगा। मैं भी उन्हीं सामान्यजनों में से एक होना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि मैं सामान्यजन के रूप में मगध के सामान्यजनों तक पहुँचकर उन्हें यह बताऊँ कि सम्राट् बिंबसार जहाँ एक ओर यह घोषित करते हैं कि वह भगवान् बुद्ध के भक्त हैं, वहीं दूसरी ओर वर्षकार के कूटजाल में फँसकर भगवान् बुद्ध के प्रिय वैशाली जनतंत्र की हिंसा द्वारा हत्या करना चाहते हैं। उनकी घोषणा और आचरण में कितना अंतर है !

चंडभद्र—तुम्हारे इस भीषण दुस्साहस के कारण तुम्हें और तुम्हारी भावी पत्नी को जो घोर कष्ट सहन करने पड़ेंगे, उनकी कल्पना से मेरा हृदय विदीर्ण होता है।

सुवीर—सत्यपथ के कंटकों से विचलित होना वीरों को शोभा नहीं देता। आप अपने अंतःकरण की ध्वनि के अनुसार कार्य कीजिए और मैं अपने सिद्धांतों के अनुसार अपने कर्तव्यपथ पर चलूँगा। अनंत यातनाएँ सहन करके भी मैं मगध के बहुसंख्यक सामान्यजनों को उनके पास जा-जाकर यह प्रेरणा दूँगा कि वे बिंबसार को वर्षकार के कूटजाल से मुक्त होकर अपनी घोषणा और आचरण के अंतर को समाप्त करने को तत्पर करें और भगवान् बुद्ध के प्रिय वैशालिक जनतंत्र को नष्ट करने की योजना से विरत करें। संसार का कोई भी राज्य अपनी जनता की हार्दिक इच्छा को कुचलकर जीवित नहीं रह सकता। जन-आकांक्षाओं का दमन करके बिंबसार अपना अस्तित्व समाप्त कर देंगे, मगध हिंसा की ज्वाला में भस्म

हो जायगा और उसके साथ ही विश्व विनाश की ओर बढ़ेगा। मैं ऐसा न होने देने का प्रयास करूँगा। मैं भगवान् बुद्ध के स्वप्नों का विश्व बनाने के प्रयास में अपने जीवन की आहुति देकर कृतार्थ हो जाऊँगा।

[पटाक्षेप]

तृतीय अंक

[वृज्जी (वज्जी)-गणराज्य की राजधानी वैशाली में राज्याध्यक्ष सुनंद का मंत्रणा-कक्ष। प्रातःकाल । कोकिला तथा रणवीर का वार्तालाप करते हुए प्रवेश ।]

कोकिला—दोनों राज्य-व्यवस्थाओं में कितना अधिक अंतर है ! राजतंत्र, एकतंत्र अथवा साम्राज्यतंत्र शासन में राज्य के अध्यक्ष के मंत्रणा-कक्ष में अत्यंत आवश्यक होने पर भी सामान्य व्यक्तियों का प्रवेश असंभव घटना मानी जाती है ; किंतु, स्वतंत्र-जनतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति को यह सुविधा प्राप्त है । यह सर्वविदित है कि जनतांत्रिक वृज्जि-गणराज्य की राजधानी वैशाली में लिच्छवि-गणाध्यक्ष सुनंद जी के इस मंत्रणा-कक्ष में सामान्य जनों के प्रवेश पर कोई प्रतिबंध नहीं है ; फिर भी, आगंतुक स्वयं अपने विवेक तथा आत्म-संयम से काम लेकर गणाध्यक्ष का समय लेते हैं। वे आवश्यक होने ही पर यहाँ आते हैं ।

रणवीर—आत्मानुशासन का नाम ही जनतंत्र है । जैसे हमारे नागरिक हैं, वैसे ही गणाध्यक्ष भी हैं । हमें इसपर भी उचित आत्म-गौरव का अनुभव करना चाहिए कि राष्ट्राध्यक्ष के उच्च पद पर प्रतिष्ठित होते हुए भी हमारे गणपति सुनंद जी कितने अधिक निरभिमान, निस्स्वार्थ, निर्मल तथा निश्छल हैं । वह ऋषि के समान सात्त्विक, सरल एवं कठोर-श्रम-पूर्ण जीवन बिताते हैं । सुख-सुविधा तथा विलासिता की लिप्सा को वह घृणा की दृष्टि से देखते हैं ; उसे अपने लिए सर्वथा त्याज्य समझते हैं । उसका अनुसरण गणराज्य के अन्य अधिकारी भी करते हैं । अधिकारियों के आदर्श पर सामान्य जन भी चलते हैं । परिणाम यह होता है कि हमारे इस स्वतंत्र-जनतंत्र का जन-जीवन सब ओर से नितांत निर्मल बना रहता है ।

कोकिला—इसके प्रतिकूल, यह भी सर्वविदित है कि एकतंत्र, राजतंत्र अथवा साम्राज्यतंत्र शासन में शासन का सर्वोच्च अधिकारी घोर विलासिता तथा स्वार्थसाधुता का जीवन व्यतीत करता है। वह सत्तालोलुपता, भोग एवं धनलिप्सा में अहर्निश आकंठ निमग्न रहता है। उसका अनुसरण राज्य के अन्य अधिकारी भी करते हैं। वे भी विलासी, भ्रष्ट, पतित तथा धन-लोलुप होते हैं। प्रत्येक कार्य के लिए प्रजाजनों से अधिक से अधिक उत्कोच-द्रव्य प्राप्त करना वे अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते हैं। प्रजाजन भी अपने जीवन में उन्हींका अनुकरण करते हैं। फलतः, राज्य का जनजीवन नीचे से ऊपर तक पतित एवं भ्रष्ट बना रहता है। प्रत्येक कार्य धनप्राप्ति की दृष्टि से किया जाता है। उच्च आदर्श तथा कर्तव्य-पालन की ओर किसी-का किंचित्-मात्र भी ध्यान नहीं जाता।

रणवीर—यह कितने संतोष तथा आत्म-गौरव का विषय है कि जन-तंत्र का प्रत्येक सैनिक जनतंत्र की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपने राज्य के शत्रुओं से प्राणपण से इसलिए युद्ध करता है कि वह अपने जनतंत्र से अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करता है; अपने गणराज्य की आदर्श प्रणाली का हृदय से संमान करता है। किंतु, इसके विपरीत, राजतंत्र का सैनिक अपने राजा के लिए केवल इसलिए संग्राम में भाग लेता है कि उससे उसे धन मिलता है। भूतकाल में जनतंत्र से राजतंत्र के वारंवार पराजित होने का यही रहस्य था, जो अब रहस्य नहीं रह गया है।

कोकिला—जनतंत्र तथा राजतंत्र के अंतर का तुमसे अधिक अनुभव मुझे है; क्योंकि, मैंने अपना जीवन दोनों के वातावरणों में बिताया है। तुमने अपने जन्म से लेकर अब तक जनतंत्र के सात्त्विक जीवन ही का प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त किया है; किंतु, मैं राजतंत्र के रौरव-नरक से निकलकर जन-तंत्र के स्वर्गीय वातावरण में आई हूँ। मुझे अपने माता-पिता का स्मरण है, जो एकतंत्र मगध-साम्राज्य में दास-दासी का अपमानित एवं यातनापूर्ण जीवन व्यतीत करते थे। मेरी माँ के शरीर पर उन कोड़ों के प्रहारों के

अनेक स्थायी चिह्न थे, जो उन्हें प्रायः दासी के रूप में अपनी स्वामिनी के हाथों सहन करने पड़ते थे तथा मेरे पिता के शरीर पर अपने स्वामी द्वारा तप्त लौह-खंडों से दग्ध किए जाने के अनेक दारुण चिह्न थे।

रणवीर—तप्त लौह-खंडों से दग्ध किए जाने की वेदना कितनी दारुण होती होगी !

कोकिला—अपने स्वामी तथा स्वामिनी की सेवा के कार्यों में निशि-दिन कठोर श्रम करने पर भी उन दोनों को उनके द्वारा उचित भोजन-वसन के स्थान पर ऐसी घोर यातनाएँ दी जाती थीं। अपने शैशव में दास-पुत्री के रूप में तथा किशोरावस्था में दासी के रूप में मुझे भी मगध की राजधानी राजगृह में अकारण कठोर दंड सहन करने पड़े थे। उन्हें मैं कैसे भूल सकती हूँ ?

रणवीर—किंतु, जनतंत्र में तो तुम्हें ऐसे कष्टों का कहीं नाम भी नहीं मिला।

कोकिला—हाँ ! जनतांत्रिक वज्जी-गणराज्य की राजधानी वैशाली में आते ही, मानो, मैं घोर नरक से स्वर्ग में आ गई। मुझे दासत्व की शृंखला से मुक्ति मिल गई तथा स्वतंत्र मानव के जीवन की प्रतिष्ठा का आनंद उपलब्ध हुआ। मैं आत्म-गौरव से मस्तक उन्नत करने योग्य हुई। विशिष्ट गृह में जन्म लेने के कारण नहीं, वरन्, अपनी बुद्धि, साधना तथा श्रम से मैंने इस वैशालिक जनतंत्र में क्रमशः इतनी प्रतिष्ठा प्राप्त की कि मैं इस राज्य की एक उच्च पदाधिकारिणी के रूप में इस राज्य के सर्वोच्च अधिकारी गणाध्यक्ष सुनंद जी के निमंत्रण पर उनके इस मंत्रणाकक्ष में उनसे मंत्रणा करने आने का अवसर प्रायः पाने लगी।

रणवीर—मुझे भी यह अवसर मिलता रहता है।

कोकिला—हाँ, तुम भी इस राज्य के एक उच्च अधिकारी के रूप में उनका निमंत्रण पाते रहते हो ; किंतु, तुम जन्मजात जनतांत्रिक हो। तुम्हारे लिए यह स्थिति मुझसे अधिक स्वाभाविक है ; अतः, आश्चर्यजनक

नहीं है। मेरी बात दूसरी है। मैं फिर कहती हूँ कि मैं तो पाताल के गर्त से निकलकर स्वर्ग के सर्वोच्च शिखर पर आ पहुँची हूँ। मेरे आनंद तथा आश्चर्य की पूर्ण कल्पना तुम नहीं कर सकते।

रणवीर—किंतु, कठोर परिश्रम तथा अविरत साधना के क्रमिक उच्च सोपानों पर तो मुझे भी चढ़ना पड़ा था।

कोकिला—निस्संदेह तुम्हारी प्रतिभा एवं अध्यवसाय ही को तुम्हारी उन्नति का पूर्ण श्रेय प्राप्त है ; किंतु, यह भी उल्लेखनीय है कि जनतंत्र में जन्म पाने के कारण तुम मुझ जन्मजात दासी से अनेक सोपान उन्नत पहले ही से रहे थे।

रणवीर—इस तथ्य को मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ कोकिला ; किंतु, अब हम दोनों में कोई अंतर नहीं रहा है। हमारा प्रारंभिक इतिहास भले ही विभिन्न रहा हो, किंतु, आज तो हम दोनों अपने जीवनपथ पर बिलकुल साथ-साथ चल रहे हैं और हम दोनों का जीवन-पथ अब अपने जनतांत्रिक राष्ट्र की अथक सेवा का पथ ही है।

कोकिला—इसमें कोई संदेह नहीं। हमें अपने इस देश के लिए जीना तथा उसीके लिए मरना है।

रणवीर—हम प्रसन्न, संतुष्ट तथा गौरवान्वित हैं कि अनेक दिशाओं से राजतंत्र-शासनों से घिरा हुआ होने पर भी हमारा यह जनतांत्रिक-गण-राज्य आज पूर्ण आत्म-गौरव के साथ उनकी चुनौतियों के मध्य अत्यंत अविचल रूप में खड़ा हुआ है। इससे इसकी आत्मा की अविजेय शक्ति की उज्ज्वल दीप्ति का परिचय प्राप्त होता है। यह ऐसा प्रकाश है, जो कभी धूमिल नहीं होता।

कोकिला—गणराज्याध्यक्ष सुनंद जी तथा प्रधानसेनापति सुमन जी के सुयोग्य, निर्मल एवं सुदृढ़ नेतृत्व ही के कारण यह संभव हुआ है।

रणवीर—नेताओं का महत्त्व तो है ही ; अनुयायियों का महत्त्व भी उनसे किसी प्रकार कम नहीं है। इस वृजि-गणराज्य का प्रत्येक निवासी

जनतंत्र के सिद्धांत से अपने प्राणों से भी अधिक प्रेम करता है। इस जनतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति यही है।

कोकिला—इसमें कोई संदेह नहीं है। इस राज्य का प्रत्येक निवासी न केवल इससे प्रेम करता है, वरन्, इसके लिए सक्रिय एवं अथक रूप से कार्य करने को भी सदैव तत्पर रहता है।

रणवीर—इतना ही नहीं, इसके लिए अपने प्राणों का बलिदान करने को भी हमारा प्रत्येक देशवासी प्रति-क्षण सन्नद्ध रहता है।

कोकिला—ऐसी स्थिति में संभवतः संसार की बड़ी से बड़ी शक्ति भी हमारे गणराज्य का कुछ नहीं बिगाड़ सकती।

रणवीर – किंतु, निरंतर सतर्क रहने की आवश्यकता है। स्वतंत्रता तथा जनतंत्र की रक्षा सतत एवं सर्वोच्च सावधानी ही से की जा सकती है।

कोकिला—यह तो है ही।

रणवीर—मंत्रणा के हेतु गणपति सुनंद जी के यहाँ पधारने में अभी कुछ समय शेष प्रतीत होता है। तब तक हम यहाँ बैठकर प्रतीक्षा करें!

कोकिला—बैठिए!

[दोनों बैठते हैं।]

रणवीर—नृपतांत्रिक मगध-राज्य में जन्म लेकर भी तुम जनतांत्रिक वृज्जी-राज्य के लिए जो कठोर परिश्रम, कष्ट-सहन तथा त्याग कर रही हो, वह तुम्हारी बलिदानभावना एवं सत्यनिष्टा का परिचायक है। इससे जनतंत्र के सिद्धांत के प्रति तुम्हारी जो अदम्य आस्था प्रकट होती है, उससे मैं अत्यंत प्रसन्न तथा विस्मित हूँ।

कोकिला—उच्च सिद्धांत एवं आदर्श सार्वभौम होते हैं। वे किसी क्षेत्र-विशेष की सीमा में आबद्ध नहीं होते। यदि जनतंत्र के लिए कार्य करने का अधिकार स्थान-विशेष में जन्म लेने के संयोग के साथ निबद्ध कर दिया जाय, तो, जनतंत्र जनतंत्र नहीं रह सकता।

रणवीर—सैद्धांतिक दृष्टि से यह निर्विवाद सत्य है। किंतु, मानव दुर्बलताएँ कुछ व्यावहारिक सीमाओं एवं मर्यादाओं का भी निर्माण कर ही

लिया करती हैं। तुमने उनके लिए भी कम बलिदान नहीं किया। वैशालिकों का घनिष्ठ ममत्व एवं पारिवारिक स्नेह प्राप्त करने के लिए तुमने मुझ-जैसे सामान्य व्यक्ति को अपना जीवन-सहचर बना लिया।

कोकिला—यदि तुम अपने को सामान्य समझते हो, तो, मैं भी अपने को सामान्य ही मानती हूँ। किंतु, मेरी संमति में तो मेरी अपेक्षा तुम्हारे गुण एवं योग्यताएँ बहुत अधिक हैं। तुमसे विवाह करके मैंने अपना महत्त्व बढ़ाया ही है, घटाया नहीं। वज्जी-गणराज्य का प्रत्येक वैशालिक-लिच्छवि हम दोनों के विवाह के कारण हमपर अत्यंत प्रसन्न तथा हमारे संबंध में पूर्ण आश्वस्त हो चुका है। इससे जनतंत्र की सेवा के मार्ग की मेरी एक बहुत बड़ी बाधा दूर हुई है तथा मुझे भी तुम्हारी भाँति ही सबका असंदिग्ध एवं पूर्ण विश्वास प्राप्त हो गया है।

रणवीर—तुमने इस वृजि-जनतंत्र की महत्त्वपूर्ण सेवाएँ भी कितनी की हैं! मगध-साम्राज्य के कूट-कपटजाल में फँसने से इस गणराज्य को तुमने बचा लिया है तथा, उसके अतिरिक्त, इसके प्रत्येक निवासी के हृदय में इसकी अथक सेवा तथा इसके लिए प्राणों का बलिदान करने की आकांक्षा जाग्रत एवं प्रज्वलित करने का प्रयास भी तुमने कितना अधिक किया है!

कोकिला—मुझसे ये कुछ कार्य यदि किसी सीमा तक हो सके हैं, तो, तुम्हारे पूर्ण सहयोग एवं सहायता ही से हो सके हैं। इनका अधिकांश श्रेय वास्तव में तुम्हारा ही प्राप्य है।

रणवीर—अभी हमें बहुत कार्य करना है। वास्तव में जनतंत्र की रक्षा एवं सेवा का कार्य अत्यंत कठिन है। इसमें पद-पद पर बाधाओं का सामना करना पड़ता है तथा निरंतर अथक भाव से परिश्रम करना पड़ता है।

कोकिला—महादेवी आम्रपाली का स्नेह एवं कृपा कितनी बड़ी बाधा थी! हम दोनों का हृदय मानो टूट-टूट गया था उनसे पृथक् होने में! उन महिमामयी महिला के जीवन के प्रथम चरण में उनके साथ इस वज्जी-गण-

राज्य की एक परंपरा ने कितना बड़ा अन्याय किया था ! गण द्वारा उन्हें अपने सरल, सात्त्विक, निर्मल एवं निष्कलुष पैतृक-परिवार से केवल इसलिए छीन लिया गया था कि प्रकृति ने उनपर प्रसन्न होकर उन्हें अपने युग की इस देश की सर्वश्रेष्ठ सुंदरी के रूप में उत्पन्न किया था।

रणवीर—निस्संदेह यह बहुत बड़ा अन्याय हुआ था।

कोकिला—अब तो इस अन्यायपूर्ण परंपरा को समाप्त कराने के लिए इस गणराज्य की नारी-शक्ति को जाग्रत करने का उत्तरदायित्व लेने योग्य महिलाएँ तैयार करने का कार्य मैं कर सकती हूँ। मैं उनसे कह सकती हूँ कि राजतंत्र की दासत्व-शृंखलाएँ तोड़ फेंकनेवाले जनतंत्र को परंपराओं की दासता में बँधना शोभा नहीं देता ! किंतु, उस समय की परिस्थिति ने महादेवी आम्रपाली को नितांत विवश कर दिया था कि वह अपने भावी विवाहित गृहस्थ-जीवन के सात्त्विक गौरव का परित्याग करके एकाकिनी रहते हुए वैशालिक वीरों को अपनी संगीतकला से सार्वजनिक रूप में प्रमुदित, प्रोत्साहित एवं अनुप्राणित करने का जीवन-व्यापी कार्य स्वीकार कर लें।

रणवीर—उन्होंने अपने इस कटु एवं कठोर कर्तव्य का पालन अत्यंत धैर्यपूर्वक किया।

कोकिला—उन्होंने यह किया तो सही ; किंतु, इससे उनका हृदय अत्यंत क्षत-विक्षत हो गया। इससे उन्होंने अपने अंतर्तम में अपने को नितांत एकाकिनी के साथ-साथ अत्यंत अभिशप्त भी अनुभव किया।

रणवीर—किंतु, इस अभिशाप के हलाहल विष को पीकर उन्होंने कितने साहस एवं धैर्य के साथ पचाया ! इससे उनकी महत्ता और भी स्पष्ट हो जाती है। अथाह एवं गंभीर सागर के समान ऐसी सहनशीलता और किस महिला में होगी ?

कोकिला—ऐसी महिमामयी महिला के स्नेह तथा कृपा को ठुकराकर तथा उनसे पृथक् होकर हम दोनों ने भी अपने जीवन का सबसे कटु एवं कठोर कर्तव्य-पालन किया।

रणवीर—जनतंत्र के लिए हमारे विनम्र जीवन की यह सबसे बड़ी प्रथम आहुति थी।

कोकिला—महादेवी आम्रपाली से हम दोनों न केवल पृथक् हुए, वरन्, हमें उनसे संघर्ष करने को भी विवश होना पड़ा।

रणवीर—अपने सबसे अधिक दयालु संरक्षक से संघर्ष जीवन का सबसे भीषण संघर्ष होता है।

कोकिला—उनके अगणित उपकारों का प्रतिदान हमने यह दिया कि उनके तथा मगध-सम्राट् के मध्य स्थापित होनेवाले संपर्क के सूत्र, निष्ठुर होकर, छिन्न-भिन्न कर दिए तथा उनकी सूचना वृजि-गणराज्य के अध्यक्ष को दे दी।

रणवीर—सामान्य दृष्टि से देखने पर इसे उनके प्रति हमारी कृतघ्नता समझा जा सकता है; किंतु, जनतंत्र के व्यापक हित की दृष्टि से यह साहसपूर्ण एवं महान् सत्कार्य माना गया तथा इससे वज्जी-गणराज्य के साथ-साथ महादेवी आम्रपाली का भी अतिशय कल्याण हुआ। वह भी अनुचित दिशा में अधिक अग्रसर होने से बच गईं। उनकी उदारता का अनुचित लाभ मगध-सम्राट् बिंबसार न उठा सके।

कोकिला—यह हम कैसे भूल सकते हैं कि इसी सत्कार्य के फलस्वरूप तो हम दोनों गणपति सुनंदजी के विशेष विश्वासपात्र बन सके तथा उनकी कृपा से हमें महाबलाधिकृत सुमनजी का उचित प्रोत्साहन भी प्राप्त हो सका।

रणवीर—यह तो हुआ; किंतु, रहस्य-भेद हो जाने के उपरांत भी महादेवी आम्रपाली ने अपनेको कितनी निष्कपट, वीर तथा उदार महिला सिद्ध किया! हमने विस्मय के साथ देखा कि उन्होंने गणपति सुनंदजी के समक्ष साहसपूर्वक सबकुछ स्पष्ट स्वीकार कर लिया; किंतु, उन्होंने यह भी बड़े आत्मविश्वास के साथ कहा कि जनतंत्रप्रेम में वह अपनेको किसीसे पीछे नहीं समझतीं; उन्होंने जो कुछ किया, वह वैशाली को मगध के आक्रमण से बचाने के देश-भक्ति-पूर्ण सदुद्देश्य ही से किया तथा इसका दंड वह सहर्ष सहन करने को उद्यत हैं।

कोकिला—किंतु, उस अवसर पर गणपति सुनंदजी ने अपनेको कितना उदार महामानव सिद्ध किया ! उन्होंने कहा कि वह जनपद-कल्याणी महादेवी आम्रपाली की देश-भक्ति पर पूर्ण विश्वास करते हैं, सदुद्देश्य से किए गए उनके अपराध को क्षमा करते हैं तथा आदेश देते हैं कि आम्रपाली बिंबसार से भविष्य में किसी भी प्रकार का संपर्क न रखें, राजनीति के प्रति पूर्ण तटस्थभाव धारण करें तथा मगध की राजधानी राजगृह के बिंबसार के प्रासाद से वृजिदेश की राजधानी वैशाली के आम्रपाली के भवन को जोड़नेवाला गुप्त भूगर्भ-मार्ग अविलंब एवं गुप्त रूप से बंद करा दिया जाय ।

रणवीर—गणाध्यक्ष जी की कृपा की सीमा और भी आगे बढ़ी । हम इसे कदापि नहीं भूल सकते कि उन्होंने हमारे उस कार्य का महत्त्व स्वीकार करके हम दोनों को शासन में गंभीर उत्तरदायित्वपूर्ण उच्च पद देने का प्रस्ताव किया था ।

कोकिला—किंतु, यह भी सदा स्मरणीय रहेगा कि तुमने अपनी त्याग-भावना प्रकट करते हुए तत्काल यह कहा था कि देश-भक्ति के पुरस्कार के रूप में शासन में उच्च पद प्राप्त करना तुम्हें कदापि स्वीकार नहीं है ।

रणवीर—यह क्यों भूलती हो कि तुमने भी तो यही कहा था ! इस-पर गणाध्यक्ष जी खिन्न हुए थे ।

कोकिला—गणाध्यक्ष जी को खिन्न होते देखकर तुमने तत्काल उन्हें यह आश्वासन दिया था कि तुम विधिवत् प्रतियोगिताओं एवं योग्यता-परीक्षणों में उत्तीर्ण होकर कुछ ही समय में उनकी यह इच्छा पूर्ण कर दोगे कि तुम किसी उच्च उत्तरदायित्व के पद पर कार्य करो ।

रणवीर—तुमने भी तो अपनी ओर से उन्हें यही आश्वासन दिया था । जीवन के ऐसे विगत महत्त्वपूर्ण क्षणों का स्मरण करना आज हम दोनों को कितना प्रिय लग रहा है !

कोकिला—इस पर कहे हुए गणाध्यक्ष जी के शब्द मुझे आज भी याद आते हैं । उन्होंने कितने गद्‌गद कंठ से कहा था कि—"आयुष्मान् रणवीर

तथा आयुष्मती कोकिला, तुम दोनों ने अपनी निस्स्पृहता से मुझे अभिभूत कर दिया है। यदि आगे आनेवाली पीढ़ियाँ भी ऐसी ही निस्स्वार्थ, त्यागी, साहसी तथा वीर सिद्ध होती जायँ, तो, हम लोगों-जैसे वृद्ध सेवक वज्जी-गणतंत्र के भविष्य की ओर से नितांत निश्चिंत होकर किसी भी क्षण मृत्यु का सहर्ष वरण कर सकते हैं !"

रणवीर—मुझे भी गणपति सुनंदजी के उन भावपूर्ण शब्दों का स्मरण करके प्रायः रोमांच हो आता है।

कोकिला—हम दोनों के जीवन का वह वास्तव में चिरस्मरणीय, अत्यंत सात्त्विक एवं विशेष प्रोत्साहनप्रद अवसर था ! उससे हमें प्राणपण से अपने जनतांत्रिक गणराज्य की निस्स्वार्थ सेवा करने की अद्वितीय प्रेरणा प्राप्त हुई थी।

रणवीर—स्मरण करो, कोकिला, कि हम दोनों को अपनेको गणाध्यक्ष सुनंदजी की इच्छा के अनुरूप उच्च उत्तरदायित्व के पदों पर नियमानुसार नियुक्त किए जाने के योग्य बनाने के लिए कितनी दीर्घ एवं कठोर साधना करनी पड़ी, कितना घोर परिश्रम करना पड़ा तथा कितना कुशल प्रशिक्षण प्राप्त करना पड़ा !

कोकिला—और गणाध्यक्ष जी के वे सात्त्विक अश्रु, हम दोनों के जीवन के स्मरण के कितने अधिक मूल्यवान् धन बने रहेंगे, जो उस समय हम दोनों के मस्तकों पर गिरे थे, जिस समय हम योग्यता-संबंधी समस्त प्रतियोगिताओं एवं परीक्षणों में संमानपूर्वक सफल घोषित किए जाने के उपरांत उनकी सेवा में उनका आशीर्वाद प्राप्त करने पहुँचे थे ! उस समय गणाध्यक्ष जी हमारे मस्तकोंपर अपने वात्सल्यपूर्ण हाथ फेरते हुए कितने गद्गद, रोमांचित, अश्रुपूर्ण एवं हर्ष-विह्वल हो उठे थे !

रणवीर—वास्तव में जीवन का वह क्षण हम दोनों के लिए विशेष स्मरणीय रहेगा। उसके उपरांत, उनके परामर्श पर, प्रधानसेनापति सुमन जी ने हम दोनों से जो शब्द कहे थे, उन्हें भी हम कभी नहीं भूल सकते।

उन्होंने कहा था कि—"जितने अधिक उच्च-गुणांक प्राप्त करके तुम दोनों कठोरतम तथा उच्चतम प्रतियोगिता-परीक्षणों में उत्तीर्ण हुए हो, उतने अधिक गुणांक प्राप्त करनेवाले सफल व्यक्तियों को उनकी योग्यता के अनुरूप उच्च पद न देना राजतंत्र एवं साम्राज्यतंत्र की परंपरा के अनुरूप है, जनतंत्र की न्यायपूर्ण परंपरा के अनुरूप नहीं। अतएव, आयुष्मान् रणवीर तथा आयुष्मती कोकिला, तुम दोनों अपना समुचित प्राप्य अपने न्यायपूर्ण अधिकार के रूप में निस्संकोच होकर ग्रहण करो, किसीके कृपाप्रसाद के रूप में अथवा इस जनतंत्र को संकट से बचाने के अपने देशभक्तिपूर्ण कार्य के प्रति-दान अथवा पुरस्कार के रूप में नहीं।"

कोकिला—इन शब्दों में न्याय की जो अदम्य चुनौती थी, उसके संमुख मस्तक झुकाने के अतिरिक्त उस समय उपाय ही क्या था ?

रणवीर—उसी क्षण से हम दोनों वज्जी-राज्य के जनतांत्रिक प्रशासन के मूर्धन्य-श्रेणी के उत्तरदायित्व के पदों पर अविरत कार्य करते आ रहे हैं तथा अपने जीवन के उस महत्त्वपूर्ण क्षण को पुनः-पुनः स्मरण करते हैं, जिसपर गणराज्य के उन दोनों वयोवृद्ध एवं सर्वोच्च नेताओं ने हमें अपना भावविह्वल आशीर्वाद देकर अपना अत्यंत विश्वास-भाजन घोषित किया था।

कोकिला—यह तो भूतकाल का स्मरणीय एवं मधुर इतिहास हुआ। किंतु, सबसे अधिक उत्तरदायित्व का कार्य तो हम दोनों को इन दिनों सौंपा गया है। जब गणपति सुनंदजी तथा महाबलाधिकृत सुमन जी ने मुझसे कहा कि मगध-साम्राज्य के आसन्न आक्रमण को एक बार पुनः असफल बनाने के हेतु तथा सुनिश्चित रूप में असफल बनाने के हेतु तुम व्यापक रूप में वज्जी-गण राज्य की स्त्री-सेना सुसंगठित करो, तब इस कार्य के गहन उत्तरदायित्व का स्मरण करके एक बार तो मैं क्षण-भर के लिए सिहर उठी ; किंतु, उन दोनों सर्वोच्च नेताओं के विशेष अनुरोध एवं वात्सल्यपूर्ण प्रोत्साहन से प्रेरित होकर मुझे वह गंभीर उत्तरदायित्व स्वीकार करना ही पड़ा !

रणवीर—इसमें किसीको कोई संदेह नहीं है कि तुमने उस महान् उत्तरदायित्व का निर्वाह भी अपूर्व सफलता के साथ किया। आज हमारे गणराज्य की व्यापक रूप में संगठित एवं अत्यंत बलवती महिला-सेना ने, हमारी पुरुष-सेना की सहयोगिनी एवं पूरक शक्ति बनकर, सत्तालोलुप मगध-साम्राज्य का साहस नितांत शिथिल कर दिया है। वैशाली में, वृजि-गणराज्य के अन्य प्रत्येक क्षेत्र में एवं सीमांत पर भी हमारी स्त्री-सेना भी, पुरुष-सेना की भाँति ही, आज इस जनतंत्र की रक्षा के कार्य में प्राणपण से सन्नद्ध है। हमारे सभी महान् नेता मुक्त कंठ से इस सफलता का पूर्ण श्रेय तुम्हें दे रहे हैं।

कोकिला—यह उनकी कृपा है। किंतु, अधिक योग्य होने के कारण तुम्हें उस समय मेरी भाँति संकोच नहीं हुआ, जिस समय उन दोनों नेताओं ने तुम्हें वज्जी-गणराज्य के सहायकसेनापति के पद का उत्तरदायित्व सौंपा तथा बहुविध एवं संपूर्ण सेना के सम्यक् संगठन के कार्य में प्रधानसेनापति सुमन जी से पूर्ण सहयोग करने का आदेश दिया।

रणवीर—संकोच क्यों नहीं हुआ ? किंतु, मैंने उसे प्रकट नहीं होने दिया तथा उन दोनों गुरुजनों का आदेश सादर शिरोधार्य कर लिया। सामान्य सेना के कार्य के साथ-साथ जब मुझे, कुछ समय के पश्चात्, गुप्तचर-सेना के सम्यक् संगठन, निर्देशन तथा निरीक्षण का कार्य भी सौंपा गया, तब मुझे और अधिक असमंजस हुआ। फिर भी, मैंने अनुशासन तथा आज्ञा-पालन की दृष्टि से उसे भी अंगीकार कर लिया।

कोकिला—आरंभ में तुम्हें असमंजस भले ही हुआ हो, किंतु, मूर्धन्य नेता स्वीकार करते हैं कि वृजि-गणराज्य की गुप्तचरसेना का पुनर्गठन तथा विस्तार तुमने इतनी कुशलता से किया कि वह मगध-जैसे राज्यों के गुप्तचर-संगठनों से बहुत आगे बढ़ गई तथा उसने राजतंत्र के आक्रमणों तथा कूटजालों के सन्मुख गण-राज्य की सुदृढ़ ढाल का रूप धारण कर लिया।

रणवीर—अपनी शक्ति के अनुसार अधिक से अधिक परिश्रमपूर्वक

अपने देश की सेवा करना मेरा कार्य है तथा प्रशंसा करना अन्यों का कार्य।

कोकिला—शब्द तुम्हारी क्या प्रशंसा कर सकते हैं ? तुम्हारी प्रशंसा तो तुम्हारे कार्य कर रहे हैं।

रणवीर—अपनी सैन्य-निर्देशन-संबंधी यात्रा के क्रम में मैंने यह अनुभव किया है कि वज्जी के मागध-सीमांत पर भीषण युद्ध की संभावना की स्थिति इस समय अत्यंत गंभीर है। किसी भी क्षण घोर युद्ध छिड़ सकता है तथा उसमें मगध की अविलंब पराजय नितांत निश्चित है।

कोकिला—महिला-सेना के संगठन के संबंध में अपनी यात्राओं में मैंने भी यही अनुभव किया है। गणपति सुनंद जी के यहाँ पधारते ही हम दोनों को उनके संमुख समस्त स्थिति सविस्तर एवं स्पष्ट रूप में प्रस्तुत कर देनी है।

[वृजि-गणराज्य के राज्याध्यक्ष सुनंद का प्रवेश। रणवीर तथा कोकिला खड़े होकर उनका अभिवादन करते हैं।]

रणवीर तथा कोकिला—प्रणाम गणाध्यक्ष जी !

सुनंद—आशीर्बाद आयुष्मान् रणवीर जी ! स्वस्ति आयुष्मती कोकिलादेवी ! बैठिए !

[तीनों बैठते हैं।]

रणवीर—गणाध्यक्ष जी के आदेशानुसार हम दोनों उपस्थित हैं।

कोकिला—कहिए, क्या आज्ञा है ?

सुनंद—आप दोनों से समय-समय पर मंत्रणा करना मुझे अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है। अतएव, मैंने आप दोनों को आज भी इसके हेतु आमंत्रित किया है। आप दोनों की योग्यता तथा सेवाभावना से मैं अत्यंत प्रभावित हूँ। मेरी संमति में, हम लोगों के इस वृजि-गणराज्य के प्रधानसेनापति सुमनजी इसके लिए हमारे गण के हार्दिक साधुवाद के पात्र हैं कि उन्होंने इस राज्य की राजधानी वैशाली के आदर्श तरुण-तरुणियों के रूप में आप दोनों का चयन किया। मैं आप दोनों को इसके लिए अभिनंदन का

पात्र समझता हूँ कि महाबलाधिकृत सुमन जी की संस्तुति पर गण-परिषद् ने आप दोनों को महत्त्वपूर्ण उत्तरदायित्व के पदों पर नियुक्त किया। मेरी संमति में, गण ने यह अत्यंत प्रशंसनीय कार्य किया है।

रणवीर—हमें आशीर्वाद देते की कृपा करते रहिए, गणाध्यक्ष सुनंदजी; हम लोग अभिनंदन के पात्र नहीं हैं।

कोकिला—आप-जैसे उदार महानुभावों की कृपा के विना हम अकिंचनों को गणराज्य की सेवा का यह महत्वपूर्ण अवसर कैसे मिल सकता था ? हमें यह ज्ञात हो चुका है कि गण के उस निश्चय के पीछे महाबलाधिकृत सुमन जी के साथ-साथ आपकी कृपालु प्रेरणा भी थी।

रणवीर—इसके लिए हम दोनों आपके अत्यंत कृतज्ञ हैं।

सुनंद—कृतज्ञता का कोई प्रश्न उपस्थित नहीं होता। प्रतियोगिताओं एवं परीक्षणों में आप दोनों पति-पत्नी आदर्श तरुण-तरुणी सिद्ध हो चुके हैं। आपको केवल अपने गुणों के कारण ही गण का इतना विश्वास प्राप्त हुआ है। जनतंत्र में वास्तविक योग्यता का सर्वोपरि स्थान होता है। आप दोनों की प्रतिष्ठा आपके गुणों का परिणाम है। हम लोगों को इसका कोई श्रेय नहीं है।

कोकिला—हम दोनों ने ऐसा क्या कार्य किया है ?

सुनंद—बताता हूँ। पहले मैं तुम्हारे गुणों को लेता हूँ। आयुष्मती कोकिला ! इसमें आज किसी को कोई संदेह नहीं है कि तुम वैशाली की प्रथम संगीतकलाचार्या हो, जिसने संगीत को मनोरंजन, प्रोत्साहन, आत्मानंद तथा श्रमशमन के सीमित स्तर से ऊपर उठाकर देशभक्ति, स्वतंत्रताप्रेम, त्याग, आत्म-बलिदान एवं प्रेरणा के व्यापक स्तर तक पहुँचाया है; उसे अंतःकक्षों, सभाभवनों, सार्वजनिक उत्सवों आदि की सीमा से मुक्त करके युद्धाभ्यास के विस्तृत प्रांगणों तथा युद्ध-सीमांतों तक में लाकर प्रतिष्ठित कर दिया है।

कोकिला—ऐसी कोई विशेष बात तो नहीं है गणपति जी !

सुनंद—है। आज तुम्हारे संगीत के ताल पर वज्जी-देश के सैनिक रणप्रयाण का अभ्यास ही नहीं, वास्तविक रणप्रयाण करते हैं, अपने प्रबल अभियानों को तीव्रतर गति प्रदान करते हैं। नटराज शंकर का रणोन्मादक नृत्यगीत आज इस वैशाली में तुम्हारी कला के रूप ही में पुनः अवतरित हुआ है। आम्रपाली के रूप में वैशाली ने यदि जनपद-कल्याणी की उपलब्धि की थी, तो, तुम्हारे रूप में उसने साक्षात् रणचंडी प्राप्त की है। यह तो हुआ तुम्हारा प्रथम गुण। अब मैं तुम्हारे दूसरे गुण पर आता हूँ।

कोकिला—क्षमा कीजिए गणाध्यक्ष जी ! आप जैसे महापुरुष के मुख से मैं अपनी अतिरंजित प्रशंसा सुनकर अत्यंत लज्जित हो रही हूँ।

सुनंद--अतिरंजना साम्राज्यों तथा राजतंत्रों की मान्य प्रवृत्ति है। जनतंत्र का आधार तो सत्यकथन ही होता है। मैं सत्यकथन ही कर रहा हूँ। आयुष्मती, तुम्हारा दूसरा गुण यह है कि तुम युद्धशक्ति एवं रणकौशल में वज्जी-देश के सहस्रों दक्ष एवं वीर तरुणों तथा तरुणियों से आगे हो। इस गणराज्य की महिलाओं की सेना सन्नद्ध करके उसे रणक्षेत्र में आहतों की शुश्रूषा से अधिक महत्त्वपूर्ण कर्तव्य-पालन करने तथा प्रत्यक्ष एवं सन्मुख शस्त्रास्त्रसंचालन करने योग्य बनाने का कार्य करके तुमने इस वृजि-राज्य की ऐसी सेवा की है, जिसका प्रतिमान इतिहास में दुर्लभ है।

कोकिला—अभी हमारी महिला-सेना को शत्रुओं पर आक्रमण करके उन्हें परास्त करने का अवसर कहाँ मिल पाया है ?

सुनंद—उसकी यह क्षमता निर्विवाद है। आयुष्मती कोकिला, तुम्हारा तीसरा गुण यह है कि तुमने इस जनतंत्र के हेतु अपने प्राणों का बलिदान करने का संकल्प ग्रहण करके देशभक्त तरुण-तरुणियों को अनुप्राणित किया है। तुम्हारी चौथी विशेष सेवा यह है कि तुमने यथा-समय अत्यंत महत्त्वपूर्ण गुप्त कूट-राजनीतिक सूचनाएँ देकर इस गणराज्य को भीषण आसन्न संकट से बचा लिया। अन्यथा, मगध-सम्राट् बिंबसार के कपट-जाल में न केवल आम्रपाली, वरन्, समस्त वज्जी-राज्य फँसकर नष्ट हो जाता। तुम्हारा पाँचवाँ सत्कार्य यह है कि·················

कोकिला—क्षमा कीजिए गणाध्यक्ष जी ! यदि आप इसी प्रकार मेरी प्रशंसा करते रहेंगे, तो मुझे आपसे अपने यहाँसे हट जाने की आज्ञा माँगनी पड़ेगी ।

सुनंद—तुम इतनी विनम्र हो आयुष्मती, कि अपने गुणों एवं योग्यताओं के संबंध में सत्यकथन भी सुनने को तैयार नहीं हो । यह तुम्हारा सबसे बड़ा गुण है, जिसे पाने में अनेक महापुरुषों को भी अनेक वर्ष लगेंगे । और आप आयुष्मान् रणवीर जी ! आपकी प्रशंसा भी शब्दों में नहीं की जा सकती । आपके महत्त्वपूर्ण सद्गुणों ही के कारण आपको भी प्रधानसेनापति तथा गण-परिषद् ने उचित प्रोत्साहन दिया है । आपको भी न्यायोचित पद-प्रतिष्ठा प्राप्त हुई । मैं इसपर अत्यंत संतुष्ट हूँ ।

रणवीर—मुझ अकिंचन पर यह आपकी अत्यंत कृपा है ।

सुनंद—मैं फिर कहता हूँ कि कृपा का कोई प्रश्न नहीं है । यह न्याय है, केवल न्याय, विशुद्ध न्याय । जहाँ राजतंत्रों में उच्च पदों पर अयोग्य कृपा-पात्रों को अविवेकपूर्वक प्रतिष्ठित किया जाता है, वहाँ जनतंत्रों में सुयोग्य एवं निष्पक्ष व्यक्तियों ही की नियुक्ति होती है । आयुष्मान् रणवीर जी, तुमने अपने अद्वितीय रणकौशल, अपूर्व वीरता, अद्भुत साहस, उच्च त्याग एवं उज्ज्वल आत्म-बलिदान-भावना से इस जनतंत्र के तरुणों के सामने अनुकरणीय आदर्श उपस्थित किया है । मैं फिर कहता हूँ कि तुमने अपनी पत्नी कोकिला के सक्रिय सहयोग से शत्रुओं के जिस राजनीतिक कूट-जाल का अविलंब रहस्योद्घाटन किया, उसका यदि हमें यथा-समय पता न चल पाता, तो, हमारा समस्त वैशालिक जनतंत्र शीघ्र ही विनाश के मुख में चला जाता ।

रणवीर—यह एक अकिंचन नागरिक की विनम्र सेवा का उच्च मूल्यांकन है ।

सुनंद—वृजि-गणराज्य तुम्हारी सेवाओं का उचित मूल्यांकन ही कर सकता है । उनका पूर्ण प्रतिदान दे सकने की शक्ति उसमें नहीं है ।

रणवीर—देश-भक्ति का प्रतिदान देश-भक्ति ही हो सकता है राज्याध्यक्षजी ! देश-भक्ति के बदले कुछ भी चाहना अनुचित है । वज्जी-गणराज्य ने मुझे अपनी योग्यता से बहुत अधिक पद-प्रतिष्ठा प्रदान की है । यदि वह मेरी नितांत उपेक्षा भी करता, तो भी, मैं उसके प्रति अपने कर्तव्य-पालन से विमुख नहीं हो सकता था ।

सुनंद—तुमसे यही आशा हो सकती है ।

रणवीर—हम लोगों के जीवन की इससे बड़ी कृतार्थता क्या हो सकती है कि हमें इस वैशालिक-लिच्छवि-गणराज्य के निवासी होने का गौरवपूर्ण अवसर प्राप्त हुआ है । यह हमारा इतना महान् गौरव है कि इसके संमुख हमें त्रैलोक्य की संपदा तथा संमान भी तुच्छ प्रतीत होते हैं । वृजि-भूमि के इस गणराज्य के नागरिक-नागरिकाओं के रूप में हम अपने जीवन से इतने तृप्त तथा संतुष्ट हैं कि हमें अपने लिए और कुछ पाने की लालसा ही नहीं रही है । जो कुछ हमें मिल रहा है, वह भी हमारी आवश्यकता से अधिक है । हाँ, हम अपने हृदय से अपने जनतंत्र की उत्तरोत्तर उन्नति अवश्य चाहते हैं ।

सुनंद—तुम्हारी इस निस्स्पृह वृत्ति एवं आदर्श कर्तव्य-परायणता से तुम्हारा महत्त्व और भी बढ़ जाता है । तुम दोनों पति-पत्नी अपने अन्य मानवीय गुणों के अतिरिक्त हृदय की उदारता में भी वज्जी-जनतंत्र के गौरव हो ।

रणवीर—हमें अब और अधिक लज्जित न कीजिए अध्यक्ष जी ! हमें आदेश दीजिए कि हम अपने गणराज्य की सेवा के लिए क्या करें ।

कोकिला—हमें आज्ञा दीजिए कि जनतंत्र के लिए अपने प्राणों का बलिदान करने के लिए हम क्या करें !

सुनंद—जनतंत्र के लिए प्राणों का बलिदान संसार का एक अत्यंत महान् आदर्श है । इसकी दो विधाएँ हैं । एक तो प्रचंड प्रलयाग्नि की भाँति एक-दम भभककर भस्म हो जाना तथा दूसरी दीपक की भाँति तिल-तिल

करके, जल-जलकर तथा गल-गलकर, अपने जीवन का निरंतर उत्सर्ग करना। दोनों का समान महत्त्व है। दोनों विधाओं में से एक बार में एक को भी अंगीकार किया जा सकता है तथा दोनों को साथ-साथ ग्रहण करना भी असंभव नहीं है।

रणवीर—हम दोनों उक्त दोनों विधाओं को एक-साथ ग्रहण करना चाहते हैं।

कोकिला—इसका व्यावहारिक मार्ग क्या है?

सुनंद—गणराज्य की स्वतंत्रता की रक्षा तथा उन्नति के लिए प्राण-पण से निरंतर अथक चेष्टा करते रहना, श्रम एवं कार्य करते रहना दीपक की साधना के समकक्ष विधा है तथा आत्म-त्याग का क्षण संमुख उपस्थित होते ही निर्भय एवं निस्संकोच भाव से जनतंत्र की रक्षा के संग्राम में तत्काल प्राणों का बलिदान कर देना प्रलयाग्नि के समकक्ष विधा है। मुझे विश्वास है कि तुम दोनों विधाओं को एक-साथ अंगीकार कर सकते हो तथा सफलता-पूर्वक कर सकते हो।

रणवीर—हम दोनों आपके समक्ष प्रतिज्ञा करते हैं कि हम दोनों इन दोनों कर्तव्यों का पालन एक-साथ करेंगे तथा प्राण-पण से करेंगे।

कोकिला—हम दोनों दृढ़ संकल्प ग्रहण कहते हैं कि इन दोनों में से एक भी कर्तव्य के पालन में किंचित्-मात्र भी शिथिलता अथवा संकोच न करेंगे।

सुनंद—मैं इस महान् संकल्प, इस पवित्र प्रतिज्ञा के लिए तुम दोनों का हार्दिक अभिनंदन करता हूँ।

[लिच्छवि-गणराज्य के प्रधान-सेनापति सुमन का प्रवेश।]

सुमन—नमस्कार गणाध्यक्षजी।

सुनंद—[**स्वागत करते हुए**] नमस्कार! पधारिए महाबलाधिकृत सुमनजो! मैं आयुष्मान् रणवीर तथा आयुष्मती कोकिला का इसके लिए अभिनंदन कर रहा था कि इन दोनों ने अभी मेरे समक्ष वृजि-गणराज्य के

लिए निरंतर अथक रूप में कार्य करने तथा जततंत्र के लिए आवश्यक होते ही तत्क्षण अपने प्राणों का बलिदान करने की प्रतिज्ञा ग्रहण की है, दृढ़ संकल्प स्वीकार किया है ।

सुमन—"प्रतिज्ञा दोहराई है" कहिए ! ये दोनों अपने साहस, वीरता तथा अन्य गुणों से हमारे गणराज्य के आदर्श युवक-युवती तो पहले ही सिद्ध हो चुके हैं । देश-भक्ति का इनका संकल्प पुराना है । आपके समक्ष इस समय यह प्रतिज्ञा दोहराकर तो इन्होंने अपने को जनतंत्र के सर्वोच्च गौरव का प्रतिमान प्रमाणित कर दिया है ।

रणवीर—वज्जी-जनतंत्र के प्रधान सेनापति सुमनजी का आशीर्वाद चाहे जिसे गौरव प्रदान कर सकता है ।

कोकिला—महाबलाधिकृत सुमनजी की कृपा के अतिरिक्त हमारे पास और कोई पाथेय नहीं है ।

सुमन—यह राजतंत्र की भाषा है, जनतंत्र की नहीं । इसका परित्याग कीजिए !

सुनंद—यह सर्वविदित है कि जनतंत्र में प्रत्येक व्यक्ति की स्थिति समान होती है । किसीके घर जन्म लेने से कोई महत्त्व प्राप्त नहीं कर सकता । उन्नति वास्तविक योग्यता तथा गुणों के कारण होती है, किसीकी कृपा अथवा समर्थन के कारण नहीं । सत्य का अथक अनुसंधान तथा स्पष्ट प्रतिपादन जनतंत्र की प्रखर परंपरा है । आप दोनों उसी-पर सदा चलते रहें ! अन्य मार्ग ग्रहण न करें ! मानवता को अपने सद्गुणों के सौरभ से सुरभित करें तथा अपने गणराज्य को अपने त्याग एवं आत्मबलिदान से गौरवान्वित बनाएँ !

रणवीर—हम इसका पूर्ण प्रयत्न करेंगे ।

कोकिला—हम कर्तव्य के पथ से कभी विचलित न होंगे !

सुमन—हाँ, यह जनतंत्र की भाषा है ! गणाध्यक्ष सुनंदजी, यदि आप आज्ञा दें, तो आपके समक्ष देश-भक्ति के महान् संकल्प के इन दोनों

द्वारा दोहराए जाने के इस शुभ अवसर पर कोकिलादेवी से एक प्रेरक गान गाने का अनुरोध किया जाय !

सुनंद— अवश्य । कोकिलादेवी के गीत तो आज जनतंत्र के वीरों एवं वीरांगनाओं के प्राणों को अनुप्राणित कर रहे हैं । एक गीत इस अवसर पर भी होना ही चाहिए ।

सुमन—गाइए कोकिलादेवी, कोई समयोचित गीत गाइए !

कोकिला—संकोच तो होता है, किंतु, गणाध्यक्ष एवं महाबलाधिकृत महानुभावों के आदेश का पालन भी मेरा पवित्र कर्तव्य है । अच्छा, सुनिए !

[कोकिला का गान]

कोकिला—

हम स्वतंत्र मानव धरणी के,
जगती के अभिमान !
है अजेय जनतंत्र हमारा,
अक्षय हैं बलिदान !
नर-नारी-शिशु मातृभूमि के
प्रति-पल पहरेदार,
करने को सर्वस्व निछावर
इसपर सब तैयार ;
कौन खर्व कर सकता इसका
हिमगिरि-सा संमान ?
है अजेय जनतंत्र हमारा,
अक्षय हैं बलिदान !
राजतंत्र, साम्राज्य विश्व के
सब, होकर रण-मत्त,
इसे चुनौती दें, फिर भी, यह,
ले निज प्रकृति-प्रदत्त
साहस, साधन, करे सभीके
विफल प्रबल अभियान !

है अजेय जनतंत्र हमारा,
अक्षय हैं बलिदान !
हम अदम्य दासों के जग से
सदा करें संघर्ष,
हम स्वतंत्र परतंत्र विश्व से
जूझें नित्य सहर्ष,
हो गणतंत्र-भावना से सब
मनुजों का कल्याण !
है अजेय जनतंत्र हमारा,
अक्षय हैं बलिदान !
गणतंत्रों ने भूतकाल का
किया दीप्त इतिहास,
है भविष्य की आशा इनके
जीवन का विश्वास ।
न्यायपूर्ण जनतंत्र-व्यवस्था
मानवता का प्राण ।
है अजेय जनतंत्र हमारा,
अक्षय है बलिदान !
हम सबपर है स्वतंत्रता की
रक्षा का सम भार,
जिसके लिए समर-सज्जित हम
होते वारंवार;
अरि-उर कंपित होते, जब हम
करते रण-प्रस्थान !
है अजेय जनतंत्र हमारा,
अक्षय हैं बलिदान !

हम प्रत्येक रक्त-कण इसको
देने को तैयार;
स्वेदकणों से भी हम इसको
सींचेंगे हर बार !
यह जनतंत्र हमारा प्यारा,
इसमें सभी समान !
है अजेय जनतंत्र हमारा,
अक्षय हैं बलिदान !

सुनंद—साधु,साधु, आयुष्मती कोकिलादेवी, तुम्हारा यह गीत सुनकर हृदय को प्रबल प्रोत्साहन प्राप्त हुआ !

सुमन—वास्तव में अत्यंत प्रेरक रहा यह गीत ! इसके लिए आयुष्मती कोकिलादेवी विशेष बधाई की पात्र हैं !

सुनंद—महाबलाधिकृत सुमनजी, यह सर्वविदित है कि गण-परिषद् ने अत्यंत विश्वास-पात्र एवं सुयोग्य व्यक्तियों की जो निर्णायकसमिति नियुक्त की थी, उसने अनेक कठोर प्रतियोगिताओं तथा परीक्षणों में सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होने पर आयुष्मान् रणवीर तथा आयुष्मती कोकिला को जनतंत्र के सर्वश्रेष्ठ वीर तथा वीरांगना स्वीकार करके इन्हें उच्च उत्तरदायित्व के पदों पर नियुक्त करने की संमति दी थी। तदनुसार, गण-परिषद् ने इन्हें आपके सहायकों के उच्च पदों पर नियुक्त किया। अब यह हम लोगों का कर्तव्य है कि हम सदैव इनसे इनके योग्य कार्य लेते रहें तथा इन्हें उचित प्रोत्साहन देते रहें। थोड़े समय ही में इन दोनों ने इतना अच्छा कार्य कर दिखाया है कि शब्दों में इनकी प्रशंसा नहीं की जा सकती है।

सुमन—निस्संदेह ! मैं इस विषय पर अत्यंत गंभीरतापूर्वक विचार कर रहा हूँ कि इन दोनों की विशेष महत्वपूर्ण सेवाओं के लिए इन्हें किस प्रकार विशेष रूप में संमानित किया जाय !

सुनंद—वास्तव में इन दोनों ने अद्भुत कार्य किया है। इनके कारण

वज्जी-गणराज्य को अनेक महत्वपूर्ण सफलताएँ प्राप्त हुई हैं। आयुष्मती कोकिलादेवी ने अहर्निश नगर-नगर, ग्राम-ग्राम, गली-गली तथा घर-घर घूम-घूमकर वृजि-गणराज्य की जनता में, विशेषत: महिलाओं में, यह भावना उत्पन्न एवं विकसित करने का पूर्ण प्रयत्न किया है कि वे जनतंत्र की उन्नति तथा उसकी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए बड़े से बड़े बलिदान करने का व्रत ग्रहण करें। इस भावनात्मक पृष्ठभूमि के आधार पर हमारी सेना के, विशेषत: नारी-सेना के, नव-संगठन का इनका कार्य इतनी प्रबल शक्ति के साथ विकसित हुआ है कि उससे वज्जी-जनतंत्र के शत्रुओं का साहस नष्ट हो गया है।

सुमन—रणवीरजी का कार्य भी अत्यंत प्रशंसनीय सिद्ध हुआ है।

सुनंद—निस्संदेह। आयुष्मती कोकिलादेवी ने जो कार्य विशेषत: महिलाओं में किया है, वही कार्य आयुष्मान् रणवीरजी ने विशेषत: पुरुषों में किया है। इससे हमारी सेना के, नारी एवं पुरुष, दोनों, अंग इतने बलवान् हो गए कि हमारा शत्रु मगधराज्य हमपर आक्रमण करने के पूर्व ही अपने को अपने हृदय में हमसे परास्त समझने लगा। इसका प्रमुख श्रेय इन दोनों के सैन्य-संगठन एवं बलिदान-प्रोत्साहन-अभियान को है। मेरी संमति में, जनतंत्र की विजय के इन दोनों आदर्श वीर एवं वीरांगना को राष्ट्र की ओर से विशेष संमान-चिह्न दिए जाने चाहिए।

सुमन—अवश्य। किंतु, थोड़े समय के उपरांत, जब हम मगध पर वैशाली की विजय की निश्चित सूचना प्राप्त कर लें। उस दशा में स्वभावत: संमान-चिह्नों का स्वरूप और भी उत्कृष्ट हो सकेगा।

रणवीर—हमारी इच्छा है कि संमान-चिह्न हमारी चिता पर रखे जायँ तथा उस समय रखे जायँ, जब हम जनतंत्र के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर चुकें। अपने जीवन-काल में हम अपनी देश-सेवा के प्रतिदान के रूप में कोई पुरस्कार अथवा संमान-चिह्न स्वीकार न करेंगे!

कोकिला—मैं भी इन विचारों का हार्दिक समर्थन करती हूँ। आवश्यकता के अनुरूप पारिश्रमिक-मात्र हमारे लिए पर्याप्त है। हमें उससे अधिक

कुछ नहीं चाहिए। कर्तव्य-पालन का नीरव आत्म-गौरव ही हम दोनों का सबसे बड़ा संमान है !

सुनंद—तुम दोनों की त्याग-भावना को धन्य है !

सुमन—तुम दोनों की निस्स्पृह देश-भक्ति वास्तव में सदा स्मरणीय रहेगी !

रणवीर—आपके इस प्रोत्साहन-मात्र से हम कृत-कृत्य हैं। महाबलाधिकृतजी, आपके आगमन के पूर्व हम दोनों, अपनी जानकारी के अनुसार, युद्ध-स्थिति के संबंध में वस्तु-स्थिति का विवरण गणाध्यक्षजी की सेवा में प्रस्तुत करना चाहते थे। अब जब आपने पधारने का कष्ट किया है, तब यह कार्य आप ही करने की कृपा कीजिए !

सुनंद—हाँ, महाबलाधिकृतजी ! आप स्थिति पर पूर्ण प्रकाश डालने का कष्ट कीजिए !

सुमन—इस समय युद्ध-स्थिति अत्यंत विस्फोटक है। मगध-साम्राज्य तथा वृजि-गणराज्य के सीमावर्ती जल एवं स्थल क्षेत्रों में नियुक्त दोनों ओर के सैनिकों के मध्य पारस्परिक तनाव प्रति-क्षण तीव्र वेग से बढ़ता ही जा रहा है। मगध-सम्राट् बिंबसार तो वैशाली-जनतंत्र के हाथों भूतकाल में हुई मगध-साम्राज्य की पराजयों का स्मरण करके मागध सेना को वैशाली पर आक्रमण करने की अनुमति देने में संकोच का अनुभव कर रहे हैं. किंतु, उनके उद्दंड युवराज अजातशत्रु तथा कुटिल महामात्य वर्षकार प्रत्येक क्षण इसी विचार में रत रहते हैं कि किस प्रकार वैशाली पर मगध के प्रबल सैन्य-आक्रमण की आवश्यकता की परिस्थिति उत्पन्न कर दी जाय तथा सम्राट् बिंबसार को आक्रमण की अनुमति देने को विवश कर दिया जाय।

सुनंद—इस संबंध में सेना की ओर से मुझे क्रमिक सूचनाएँ संक्षेप में प्राप्त होती रही हैं। इस दशा में सीमांत पर नियुक्त हमारे सैनिकों तथा सैन्याधिकारियों के प्रति-क्षण अत्यंत सावधान रहने की आवश्यकता है। राज्य के अन्य भागों में नियुक्त सैनिकों, सैनिकाओं तथा अधिकारियों को भी निरंतर अत्यंत सतर्क एवं सन्नद्ध कर रखना चाहिए !

सुमन—हम अपना मानसिक संतुलन शांत बनाए हुए हैं, किंतु, आपको यह अविदित नहीं है कि हमारी तैयारी इस सीमा तक हो चुकी है कि यदि सीमांत के मागध सैनिकों ने उस क्षेत्र में नियुक्त हमारे सैनिकों को अपने अभद्र व्यवहार से उत्तेजित करके हमपर अपने आक्रमण की पृष्ठ-भूमि का निर्माण किया, तो, हम अपनी ओर से पहल करके अपने मागध शत्रुओं का षड्यंत्र पूर्णतया विफल कर देंगे तथा उनके आक्रमण की तैयारी करने के पूर्व ही अपनी ओर से उनपर आक्रमण करके उन्हें परास्त कर देंगे ।

सुनंद—मुझे इसके संकेत मिलते रहे हैं तथा मुझे इसपर पूर्ण संतोष है कि आप तीनों अपने पारस्परिक सहयोग से इस सीमा तक तैयारी कर चुके हैं ।

सुमन—हमारा कार्य-क्षेत्र सीमांत तक ही सीमित नहीं है. गण परिषद् एवं गणाध्यक्षजी के आदेशानुसार तथा आयुष्मान् रणवीरजी एवं आयुष्मती कोकिलादेवी के पूर्ण सहयोग से हम लोग समस्त वृजि-गणराज्य के प्रत्येक स्त्री-पुरुष को इस सीमा तक रणसन्नद्ध कर चुके हैं तथा इस राज्यव्यापी तैयारी के बल पर अपनी सीमांत पर नियुक्त सेना को इतनी शक्तिशालिनी बना चुके हैं कि हमें किंचित् भी आश्चर्य न होगा, यदि हम यहाँ इसी क्षण यह निश्चित सूचना प्राप्त करें कि मगध तथा वैशाली के सीमांत पर वज्जी-जनतंत्र की सेना ने मगध-साम्राज्य की सेना पर प्रचंड आक्रमण करके उसे तत्काल परास्त कर दिया है तथा मगध-सम्राट् बिंबसार वृजि-गणराज्य से संधि-प्रार्थना कर रहे हैं ।

सुनंद—आप तीनों अपने पूर्ण-सहयोगयुक्त एवं अथक प्रयत्नों की इस सफलता के लिए शतशः साधुवाद के पात्र हैं ।

सुमन—इसमें तो कोई संदेह नहीं कि हम किसी भी क्षण तथा किसी भी स्थान पर अपनी विजय तथा मगध की पराजय की सूचना पा सकते हैं; किंतु, यह प्रश्न भी हमारे संमुख है कि क्या हम विजयी होने पर भूतकाल

की भाँति इस बार भी मगध की संधिप्रार्थना स्वीकार कर लें अथवा मगध-राज्य का पृथक् अस्तित्व समाप्त करके उसे वज्जी-राज्य में विलीन कर लें।

सुनंद—आप यह भली भांति जानते हैं कि किसी अन्य राज्य को समाप्त करके तथा अपने में विलीन करके अपने राज्य की सीमा बढ़ाना साम्राज्यतंत्र एवं राजतंत्र की परंपरा के अनुकूल है, जनतंत्र की परिपाटी के अनुरूप नहीं ।

सुमन—यह तो है । वज्जी-राज्य की गण-परिषद् भी राज्य-विस्तार की नीति के विरुद्ध अपना स्पष्ट अभिमत व्यक्त कर चुकी है । किंतु, मगध के बार-बार के दुष्टतापूर्ण आक्रमणों की संभावना को सदा के लिए समाप्त करने के लिए यह इच्छा होना भी स्वाभाविक है कि इस बार शीघ्र से शीघ्र गण-परिषद् का विशेष अधिवेशन आमंत्रित करके, अपवादस्वरूप, इसके लिए उसकी अनुमति प्राप्त कर ली जाय कि हम इस बार मगध-साम्राज्य को युद्ध में परास्त करके सदा के लिए उसका अस्तिस्व समाप्त कर दें तथा उसके समस्त क्षेत्र को वैशाली की सीमा में मिला लें ।

सुनंद—मेरा निश्चित अनुमान है कि हमारी गण-परिषद् हमें, अपना नियम शिथिल करके, इसकी अनुमति कदापि न देगी; क्योंकि, स्वभावतः, गण-परिषद् की संमति में हमारा यह कार्य एकतंत्र, नृपतंत्र अथवा साम्राज्य-तंत्र शासन की नीति एवं सिद्धांत के अनुकूल होगा, जनतंत्र-शासन की नीति तथा सिद्धांत के अनुरूप नहीं । मगध को परास्त करके अपने राज्य का अंग बना लेने पर हम एक नई समस्या खड़ी कर लेंगे ।

कोकिला—वह क्या ?

सुनंद—उस स्थिति में हमें वहाँका शासनकार्य चलाने के लिए वैशाली से अपना प्रतिनिधि राजगृह भेजना पड़ेगा । कालांतर में वह वहाँ स्वेच्छा-चारपूर्ण व्यवहार करने लगेगा तथा स्वयं राजा बनने का प्रयत्न करेगा । इससे मगध, जनतंत्र की स्थिति से निकलकर, पुनः राजतंत्र बन जायगा । भूतकाल में इसी प्रकार अनेक गणतंत्र राजतंत्र बन चुके हैं । इस प्रकार राज-तंत्रों की संख्या बढ़ाते जाना हमारे जनतंत्र का कार्यक्रम नहीं हो सकता ।

सुमन—जब तक हम मगध का एक के पश्चात् दूसरा आक्रमण विफल करके अपने जनतंत्र की रक्षा करते जायँगे, तब तक तो स्थिति स्वाभाविक रहेगी ; किंतु, यदि मगध को एक बार भी वैशाली को परास्त करने का अवसर मिल गया, तो, वह निर्मम होकर हमारे जनतंत्र को सदा के लिए नष्ट-भ्रष्ट तथा निर्मूल कर देगा ।

सुनंद—यह आशंका स्वाभाविक है ; किंतु, इसके कारण हम अपने मूलभूत सिद्धांतों तथा नीतियों को कैसे छोड़ सकते हैं ? मेरी संमति हम लोगों की गण-परिषद् की संमति का स्पष्टीकरणमात्र होती है, जब मैं यह कहता हूँ कि मेरी संमति में हमें अन्य राज्यों को नष्ट करने की नीति न अपनाकर अपने राज्य की स्वतंत्रता की रक्षा तथा उन्नति की नीति ही अपनानी चाहिए ।

सुमन—आपका कथन यथार्थ है ; किंतु, रक्षा का चिरस्थायी उपाय क्या हो सकता है ?

सुनंद—आपके सहायक आयुष्मान् रणवीरजी तथा आयुष्मती कोकिला-देवी का मार्ग ही जनतंत्र की स्थायी रक्षा का मार्ग हो सकता है । आज हमें अपनी विजय इसीलिए इतनी अधिक सन्निकट एवं सुनिश्चित प्रतीत हो रही है कि हमने रणवीर जी के नेतृत्व में राज्य-भर के पुरुषों में तथा कोकिलादेवी के नेतृत्व में राज्य-भर की महिलाओं में जनतंत्र की रक्षा का दृढ़ निश्चय एवं संकल्प उत्पन्न करने के लिए बहुसंख्यक प्रचारदल संगठित किए तथा उन्होंने वृजि-गणराज्य के नगर-नगर, ग्राम-ग्राम, गली-गली तथा घर-घर में जाकर गणराज्य के प्रत्येक निवासी, प्रत्येक पुरुष तथा प्रत्येक महिला के हृदय में यह भावना उत्पन्न कर दी कि अपने जनतंत्र की रक्षा एवं उन्नति के लिए अहर्निश अथक प्रयत्न करना तथा आवश्यक होते ही अपने प्राणों तक का बलिदान कर देना उनका पवित्र कर्तव्य है ।

सुमन—यह तो उचित ही हुआ ; किंतु ....

सुनंद—इसी योजना के कारण हमारे सीमांतों पर तथा हमारे राज्य-भर में जनतंत्र का इतना अभेद्य कवच सन्नद्ध हो गया है कि उसके कारण

हमारी पराजय कल्पनातीत प्रतीत होती है। वस्तुतः जनतंत्र हमारे राज्य की समस्त जनता का जीवन-श्वास ही बन गया है।

सुमन—यदि यही भावना स्थायी बनी रहे, तब तो चिंता का कोई कारण नहीं है, किंतु ....

सुनंद—किसी भी स्थिति में शंका का कोई कारण नहीं है, सुमनजी ! आशा ही जनतंत्र का मूलाधार है। हमें अपने हृदयों में आशा का प्रदीप सदा प्रज्वलित रखना चाहिए तथा कभी स्वप्न में भी यह नहीं सोचना चाहिए कि राजतंत्र अथवा साम्राज्यतंत्र कभी जननतंत्र को परास्त तथा समाप्त कर सकेगा। यदि बीच-बीच में हमारी कोई छोटी-मोटी पराजय हुई भी, तो, वह स्थायी न होगी तथा हम उसे पार कर जायँगे।

सुमन—आपका मंतव्य महान् सत्य के आधार पर अवस्थित है अध्यक्षजी ! कभी-कभी कुछ शंकाओं तथा उनके समाधानों से जनतंत्र का मूल और अधिक सुदृढ़ होता है। किंतु, अधिक गंभीरता से विचार करने पर यही निष्कर्ष निकलता है कि संसार में वही स्थिति स्थायी हो सकती है, जिसका आधार स्वाभाविक होता है। एकतंत्र, नृपतंत्र, साम्राज्यतंत्र, चक्रवर्तित्व आदि अतिप्राचीन काल में भी अधिक प्रबल नहीं थे तथा भविष्य में भी उनकी स्थिति दुर्बल तथा विरल ही रहेगी ; क्योंकि, उनकी व्यवस्था स्वाभाविक नहीं है। उसमें मानवता का बंधन निहित है, मुक्ति नहीं। इसके विपरीत जनतंत्र का सिद्धांत मानवता की स्वतंत्रता का सिद्धांत है। उसकी व्यवस्था स्वाभाविक है। स्वाभाविक स्थिति को कुछ समय के लिए भले ही कोई कभी अपदस्थ कर दे, किंतु, अंततोगत्वा, स्वाभाविक स्थिति ही स्थायी स्थिति बनकर रहा करती है।

रणवीर—आज वज्जी-जनतंत्र का प्रत्येक निवासी, स्त्री तथा पुरुष, बालक तथा बालिका, इस भावना से पूर्ण प्रोत्साहित एवं ओत-प्रोत है कि उसे चाहे अपने सर्वस्व का परित्याग तथा प्राणों का बलिदान भले ही करना पड़े, किंतु, वह अपने जनतांत्रिक गणराज्य की स्वतंत्रता कदापि नष्ट न होने

देगा । अतएव, संसार की कोई शक्ति वज्जी-गणराज्य की स्वतंत्रता नष्ट नहीं कर सकती, उसे पराजित नहीं कर सकती, उसे अपमानित नहीं कर सकती, उसकी प्रतिष्ठा की ओर आँख उठाकर नहीं देख सकती । यदि हमारे शत्रुओं को कभी कोई सफलता मिली भी, तो, वह निस्संदेह दीर्घकालव्यापिनी न होगी ।

कोकिला—वैशाली तथा मगध के मध्य के सीमांत पर मगध-साम्राज्य के जो सैनिक एवं सेनापति वृजि-गणराज्य के सैनिकों के प्रति इस समय अपमानजनक व्यवहार कर रहे हैं, उनके उस व्यवहार को हम वैशाली पर मगध का आक्रमण ही समझते हैं तथा उसे अब और अधिक सहन नहीं कर सकते । प्रधानसेनापति सुमनजी ने यह अत्यंत उचित ही किया है कि सीमांत के हमारे सैनिकों एवं सेनापतियों को स्पष्ट आदेश दे दिया है कि यदि मागध सैनिकों का अपमानजनक व्यवहार सीमा का उल्लंघन करने लगे, तो, वे तत्काल मगध की सेना पर आक्रमण करके उसे परास्त कर दें । पराजित तो हम उसे अवश्य करेंगे, किंतु, गणाध्यक्षजी का यह मंतव्य स्पष्ट है कि हम मगध को समाप्त करके तथा उसे अपनी सीमा में संमिलित करके अपने जनतंत्र के पवित्र सिद्धांत की रक्षा नहीं कर सकते ।

रणवीर—आशा है कि कुछ समय की प्रतीक्षा के पश्चात् संसार के समस्त मानव किसी दिन यह देखेंगे कि मानवता का अधिकांश भाग नृपतंत्र, एकतंत्र तथा साम्राज्यतंत्र के बंधनों से मुक्त होकर स्वतंत्र जनतंत्र की स्वाभाविक सघन छाया में आ गया है तथा जनतंत्र की प्रबलतम शक्ति को समाप्त करने का साहस किसीमें नहीं रह गया है ।

कोकिला—किंतु, हमें आज अपना उचित एवं तात्कालिक कर्तव्य-पालन करना है । उसके लिए गणाध्यक्ष सुनंदजी तथा महाबलाधिकृत सुमन जी के नेतृत्व में संपूर्ण पृष्ठभूमि तैयार हो चुकी है । हम कृतकृत्य हैं कि हमारे दोनों नेताओं ने हमें भी इस कार्य में अपना अकिंचन योगदान करने का अवसर प्रदान किया है ।

सुमन—अब मैं आपसे जाने की अनुमति चाहता हूँ गणाध्यक्षजी ! मेरे हृदय में दृढ़ विश्वास जाग्रत हो रहा है कि आपके पथ-प्रदर्शन में तथा रणवीरजी एवं कोकिलादेवी जैसे कर्तव्यपरायण सहयोगियों की सहायता से हम लोग मगध को परास्त करने का जो पूर्ण आयोजन कर चुके हैं, वह कुछ ही क्षणों में सफल होनेवाला है । मुझे विश्वास है कि मेरा वार्धक्य, अतिश्रम एवं अस्वास्थ्य से जर्जर शरीर भी उस समय तक प्राणवान् बना रहेगा । मैं कुछ ही समय के उपरांत नवीनतम स्थिति की सूचना प्राप्त करके उसे आपकी सेवा से निवेदित करने को यहाँ पुनः उपस्थित हूँगा । अच्छा, प्रणाम !

सुनंद—नमस्कार, सुमनजी ! मैं शीघ्र ही आपसे अधिकृत रूप में नवीनतम शुभ-सूचना पाने की प्रतीक्षा में रहूँगा ।

[सुमन का प्रस्थान ।]

रणवीर—स्थिति पर पुनः एक बार और अधिक गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए । क्या वास्तव में गणाध्यक्षजी गण-परिषद् के इस निश्चय को परिवर्तित न कराने के अपने अभिमत पर अंत तक दृढ़ रहना चाहते हैं कि युद्ध में मगध को परास्त करके भी हमें उसे नष्ट न करना चाहिए तथा मगध-सम्राट् बिंबसार की ओर से संधि-प्रार्थना आने पर उसे उदारतापूर्वक स्वीकार कर लेना चाहिए ।

सुनंद—हाँ । इसमें परिवर्तन का कोई कारण नहीं है ।

कोकिला—संधि का अवसर आने पर उसके लिए प्रमुख आधार क्या निर्धारित किए जायँगे ?

सुनंद—यह स्मरणीय है कि गण-परिषद् ने पहले ही से यह निश्चय कर रखा है कि यदि बिंबसार की ओर से संधि की प्रार्थना प्राप्त हो, तो, उसे इन आधारों ही पर स्वीकार किया जा सकता है :—

(१) मगध की ओर के गंगा, कमला एवं वाग्मती नदियों के तट-प्रांत तथा उनसे संलग्न एक कोस ऊपर की भूमि पर वज्जी-राज्य का अधिकार हो जायगा ;

(२) वृजि-राज्य की सेना को प्राप्त मगध की युद्ध-सामग्री वृजि ही की बनी रहेगी, किंतु, मगध की सेना को प्राप्त वज्जी-राज्य की समस्त सामग्री तत्क्षण लौटानी होगी ;

(३) प्रथमतः मगध-राज्य वृजि की ओर के समस्त युद्धवंदियों को तत्काल मुक्त करेगा। उसके उपरांत वज्जी-राज्य भी मगध-राज्य के समस्त वंदी लौटा देगा तथा

(४) वृजि-राज्य के निवासियों के प्रति मगध में जो दुर्व्यवहार हुए हैं, उनकी आर्थिक क्षति-पूर्ति मगध-राज्य करेगा।

रणवीर—जब तक इन निश्चयों को मगध की ओर से कार्यान्वित न किया जायगा, तब तक वज्जी की सेना के मगध से हटाए जाने का प्रश्न तो किसी दशा में न उठेगा ?

सुनंद—कदापि नहीं।

कोकिला—तब तो इनके मगध के द्वारा स्वीकृत कर लिए जाने का अर्थ मगध की पराजय ही होगा।

सुनंद—केवल इस स्थिति को छोड़कर कि हम मगध को समाप्त करके अपने राज्य में विलीन कर लें। हम मगध को पूर्णतया समाप्त कर भी नहीं सकते ; क्योंकि, उसके पास ऐसे दुर्ग हैं, जिन्हें ध्वस्त कर सकना असंभव है तथा जिनमें सीमित होकर मगध दीर्घ काल तक अपना अस्तित्व बनाए रह सकता है।

रणवीर—ऐसी स्थिति में गण-परिषद् का पिछला निश्चय उचित ही प्रतीत होता है कि मगध से कठोर स्वीकृतियाँ कराकर मगध की शांतिप्रार्थना स्वीकार कर ली जाय।

सुनंद—हमारे द्वारा निर्देशित आधारों पर मगध के द्वारा संधि-प्रार्थना निस्संदेह मगध की पराजय ही मानी जायगी। इसे स्वयं मागधों के हृदय भी स्वीकार करेंगे।

कोकिला—इसमें कोई संदेह नहीं। किंतु, भविष्य में मगध की ओर से आक्रमण की आशंका तो फिर भी बनी ही रहेगी।

रणवीर—यदि इस बार परास्त होने के पश्चात् भी मगध वैशाली पर पर पुनः आक्रमण करेगा, तो ?

सुनंद—तो हम उसे पुनः परास्त करेंगे ।

कोकिला—यदि वह पुनः आक्रमण करेगा, तो ?

सुनंद—तो हम उसे पुनः पराजित करेंगे ।

कोकिला—इस पुनः-पुनः का कभी अंतिम अंत भी होगा ?

सुनंद—अंतिम अंत के संबंध में हमारे हृदयों में कोई विकलता न होनी चाहिए । मैं पुनः स्पष्ट घोषित करना चाहता हूँ कि जनतंत्र की भावना स्वाभाविक भावना है तथा राजतंत्र, एकतंत्र, चक्रवर्तित्व अथवा साम्राज्यतंत्र की भावना अस्वाभाविक भावना है । हमारा संघर्ष अस्वाभाविकता के विरुद्ध स्वाभाविकता का एवं असत्य के विरुद्ध सत्य का संघर्ष है । जनतांत्रिक वज्जी-गणराज्य सत्य एवं स्वाभाविकता के आधार पर खड़ा है । वह सत्य की भाँति ही अजर, अमर, अदम्य एवं अपराजेय है । उसे संसार की कोई भी शक्ति निर्मूल नहीं कर सकती । यदि वह भविष्य में कभी किसी लघु काल के लिए समाप्त भी होगा, तो, कृषि के बीज की भाँति और अधिक विशाल क्षेत्र में फैलकर अल्प समय ही में अधिक व्यापक रूप में पुनः आविर्भूत हो जायगा ।

रणवीर—आपकी इस दृढ़ आशा एवं अदम्य इच्छा-शक्ति के संमुख हम सादर नतमस्तक हैं राष्ट्राध्यक्षजी ! आप-जैसे वयोवृद्ध नेताओं के इस प्रणम्य उत्साह ही के आधार पर हम लक्ष-लक्ष तरुण-तरुणियों का भविष्य निर्भर है ।

सुनंद—विपरीत बात कह रहे हो तुम आयुष्मान् ! सत्य तो यह है कि तुम लोगों-जैसे स्वार्थ-त्यागी तथा महान् बलिदानी तरुण-तरुणियों ही की अथक कर्मठता देखकर हम वृद्धजन अपने लक्ष्य-पथ पर कंपित होने से अपनेको निरंतर रोके रहते हैं । हम अत्यंत संतुष्ट तथा प्रसन्न हैं कि तुम दोनों ने हमारे सैन्य-संगठन को बलवान् बनाने के लिए बहुत काम किया है, वास्तव में बहुत काम किया है ।

कोकिला—वृजि-जनतंत्र की स्त्री-सेना की तैयारी भी इतनी सुदृढ़ एवं व्यापक हो चुकी है, गणाध्यक्षजी, कि युद्ध में हमारी विजय अत्यंत अल्प समय ही की बात है तथा नितांत सुनिश्चित है । इसे मैं पुनः पूर्ण विश्वास के साथ कह सकती हूँ ।

रणवीर—मैं भी आपको पुनः विश्वास दिलाता हूँ कि हमारी पुरुषों की सेना भी अद्वितीय बन चुकी है । जल तथा स्थल दोनों ही पर उसकी शक्ति आज अजेय है । वज्जी के गुप्तचरों की सेना का संगठन भी अत्यंत दृढ़ एवं व्यापक है । शत्रु के समस्त कूटनीतिक जालों को उसने उखाड़ फेंका है तथा वृजि-गणराज्य में देश-द्रोह की भावना का बीज कहीं नहीं जमने दिया है ।

सुनंद—तभी तो मैं बारंबार कहता हूँ कि वज्जी-भूमि के तरुण-तरुणियों की अथक श्रम-शक्ति, उत्कट देश-भक्ति, उज्ज्वल स्वार्थ-त्याग तथा जनतंत्र के लिए प्रति-क्षण प्राणों का बलिदान करने को सन्नद्ध रहने की आदर्श भावना हम लोगों के गर्व एवं गौरव का कारण है तथा उसके अक्षुण्ण रहते हुए जनतंत्र की कदापि पराजय नहीं हो सकती ।

कोकिला—यही नहीं ; हमारी सेना के समस्त अंगों की तैयारियों का इतना दृढ़ एवं व्यापक जाल आज वृजि-राज्य में तथा मगध के हमारे सीमांत पर फैल गया है कि हमें किंचित्-मात्र भी आश्चर्य न होगा, यदि इसी क्षण प्रधान-सेनापति सुमनजी हमें यहाँ आकर यह नवीनतम शुभसूचना दें कि वज्जी की सेना ने मगध को परास्त कर दिया है तथा मगध-सम्राट् बिंबसार ने हमसे संधि की प्रार्थना की है ।

सुनंद—तुम्हारा अनुमान सत्य हो सकता है आयुष्मती ! स्थिति कुछ ऐसी ही हो गई है ।

रणवीर—[**पार्श्व की ओर देखकर**] लीजिए, वह महाबलाधिकृत सुमनजी पधार रहे हैं !

[पार्श्व की ओर से वृजि के प्रधान-सेनापति सुमनजी का प्रवेश ।]

सुमन—लीजिए राष्ट्राध्यक्ष जी, अपेक्षित शुभसूचना प्राप्त हो गई। सीमांत पर मागध सैनिकों द्वारा पद-पद पर अपमानित तथा उत्तेजित किए जाने पर जब वैशालिक सैनिकों ने उन्हें दंड देना आरंभ किया, तब मगध के कुटिल कूटनीतिज्ञ महामात्य वर्षकार तथा उद्दंड युवराज अजातशत्रु ने वैशालिक सैनिकों पर आक्रमण का मिथ्या आरोप लगाकर मगध-सम्राट् बिंबसार से वज्जी की सेना पर आक्रमण की अनुमति प्राप्त करके हमपर आक्रमण कर दिया।

सुनंद—आक्रमण कर दिया ?

सुमन—हाँ। किंतु, हम लोगों की पूर्वनिर्धारित गुप्त, सुदृढ़ एवं व्यापक योजना के अनुसार, हमारी सेना ने मागध सैनिकों पर तत्काल इतना प्रबल प्रत्याक्रमण कर दिया कि मागध सैनिक परास्त होकर अपनी राजधानी राजगृह की ओर भागे। केवल मागध महाबलाधिकृत चंडभद्र ही मागध सेना के थोड़े-से सैनिकों के साथ हम लोगों की सेना से दृढ़तापूर्वक लड़ते रहे।

सुनंद—चंडभद्र एक वीर पुरुष हैं, किंतु, उन्होंने मगध-साम्राज्य की सेवा स्वीकार करके अपनी उज्ज्वल वीरता पर एक लांछन लगा लिया।

सुमन— चंडभद्र भी अधिक न टिक सके तथा युद्ध करते-करते कुछ ही समय में निष्प्राण होकर गिर पड़े। फिर तो मगध-साम्राज्य के वे शेष सैनिक भी राजगृह की ओर भागे। इस पर, हमारी पूर्व-निर्धारित गुप्त-योजना के अनुसार, जब हमारे आक्रमण-उन्मुख सैनिकों ने भारी संख्या में राजगृह की ओर प्रयाण किया, तब सम्राट् बिंबसार अपना साहस खो बैठे तथा उन्होंने तत्क्षण पराजय स्वीकार करके हमारी ओर संधि-प्रार्थना भेज दी। यह सब अल्प समय ही में हो गया। इसका पूर्वप्रबंध तो हम कर ही चुके थे।

सुनंद—धन्य है, महाबलाधिकृत सुमनजी, आपकी वीरता, रणकौशल, सैन्यसंगठन-क्षमता, साहस तथा अटूट श्रम-शक्ति को धन्य है, जिसके कारण स्वतंत्र जनतंत्र की जय हुई। यह वास्तव में इतिहास का एक अत्यंत महत्त्व-

पूर्ण अवसर है। गणराज्य की विजय की सूचना पाते ही वज्जी-भूमि की जनता का हृदय आनंद-विभोर हो उठेगा। हम भी अत्यंत संतुष्ट एवं प्रसन्न हैं। हमारा हृदय भी अत्यंत उत्साह के साथ स्वतंत्र जनतंत्र का जयनाद करने को उत्सुक हो रहा है। आइए, हम सब वज्जी-गणराज्य की मगध-साम्राज्य पर विजय पर हार्दिक हर्षनाद करें ! [उद्घोष के स्वर में]

जय स्वतंत्र जनतंत्र ! जय स्वतंत्र गणराज्य !!

सब—जय स्वतंत्र जनतंत्र ! जय स्वतंत्र गणराज्य !!

सुमन—किंतु, यह मेरे जीवन का अंतिम जयनाद प्रतीत होता है। मेरे जीवन का संबल अब समाप्त हो चुका है। अब मुझे अपना मरण निकट दिखाई दे रहा है। पिछले दिनों वैशाली से सीमांत तथा सीमांत से वैशाली तक, स्वास्थ्य ठीक न होने पर भी, मुझे अनेक बार एवं अत्यंत द्रुत गति से आना-जाना पड़ा, वज्जी-राज्य-भर में तथा सीमांत पर भी पुरुषों तथा महिलाओं की सेनाओं के समस्त अंगों का सुदृढ़ एवं व्यापक संगठन करने में घोर परिश्रम करना पड़ा, भोजन, निद्रा, विश्राम तथा निश्चित मनः-स्थिति से मेरा मानो कोई संबंध ही नहीं रह गया था, मन तथा शरीर का प्रत्येक अणु श्रम एवं दायित्व के असह्य तथा अविरत भार से मानो छिन्न-विच्छिन्न हो गया था। बिना तेल के दीपक की भाँति प्राणों की ज्योति संभवतः विजय की इस सूचना की प्रतीक्षा ही में रुकी हुई थी। मुझे आश्चर्य हो रहा था कि मैं अभी तक जीवित कैसे हूँ।

सुनंद—आश्चर्य ?

सुमन—हाँ। मुझे तत्काल लौट पड़ना पड़ा। आपको यह अंतिम सूचना देने आते समय मार्ग में मैंने यह अनुभव किया मानो मेरा देहांत वहीं हो रहा है।

सुनंद—ऐसा न कहिए सुमनजी !

सुमन—मैं सत्य कह रहा हूँ सुनंदजी ! न जाने किस अकल्पित धैर्य के सहारे मैं स्थिति का यह नवीनतम विवरण आपके संमुख उपस्थित करने

तक अपने प्राणों को अपने शरीर की सीमा में समेटकर रख सका। वस, अव अधिक समय के योग्य प्राण-शक्ति इस जर्जर शरीर में शेष नहीं रह गई है। मेरे प्राण केवल मेरी एक अंतिम आकांक्षा में अटके हुए हैं।

सुनंद—आप अजरामर हों ! आप मृत्युंजय हों !

सुमन—स्वतंत्र वज्जी-जनतंत्र की सेवा तो मैं भी और अधिक समय तक करना चाहता हूँ। किंतु, मैं आगामी कुछ क्षणों के संबंध में भी निश्चित नहीं हूँ। आप मेरी अंतिम आकांक्षा सुन लेने की कृपा कीजिए !

सुनंद—आज्ञा दीजिए !

सुमन—मेरी अंतिम आकांक्षा है कि आप स्वतंत्र जनतंत्र की जनता को पूर्ण सुखी और उन्नत बनाने की योजना बनाकर उसे गण-परिषद् से स्वीकृत कराकर त्वरित गति से कार्यान्वित कराने की कृपा करें !

सुनंद—आपका आज्ञापालन होगा।

सुमन—तव मैं अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक मरण की छाया में चरम-शांति-शयन करूँगा। कृपया बताइए कि आप कैसे भावी स्वतंत्र जनतंत्र का स्वप्न देखते हैं।

सुनंद—मैं अपने स्वतंत्र जनतंत्र को जनता के कल्याण पर आधारित मानता हूँ। यदि युद्धों की बाधा न आती, तो, हमारा स्वतंत्र जनतंत्र अभी तक संसार के समस्त राज्यों के लिए सर्वोच्च आदर्श बन गया होता।

सुमन—आपके इन शब्दों से मेरे प्राण प्रफुल्लित हो रहे हैं ! मेरी जीवन-शक्ति बढ़ रही है। कृपया वताइए कि आपकी योजना का क्या रूप होगा !

सुनंद—केवल एक रूप—जनकल्याण ! बिना किसी भेदभाव के हमारे राष्ट्र की समस्त जनता को समता और स्वतंत्रता का पूर्ण सुख प्राप्त होना चाहिए। तथागत भगवान् गौतम बुद्ध का संयम, शांति, अहिंसा, अपरिग्रह और विश्वमैत्री का सिद्धांत सर्वमान्य हो। राष्ट्ररक्षा के अतिरिक्त हिंसा का कहीं कोई आयोजन न हो। स्वतंत्र वैशालिक वृजि-जनतंत्र की

समस्त जनता उन्नतिपथगामिनी हो। वह प्रत्येक दृष्टि से सुखी तथा संपन्न हो।

कोकिला—कृपया आयोजन के विवरण से हम लोगों को भी प्रकाशान्वित कीजिए !

सुनंद—स्वतंत्र जनतंत्र में सर्वाधिक महत्त्व कृषकों को दिया जाना चाहिए। भूमिपुत्र किसान तथा भूमिपुत्री कृषिरत महिलाएँ स्वतंत्र जनतंत्र के सर्वाधिक सुदृढ़ मूलाधार समझे जाने चाहिए। आक्रमणकारी साम्राज्यतांत्रिक शत्रुराष्ट्रों से वैशालिक स्वतंत्र जनतंत्र की रक्षा के लिए सुदृढ़ एवं अनुशासनप्रेमी सेना अनिवार्य है। किंतु, सैनिक पुरुषों तथा सैनिक महिलाओं के प्राणधारण के लिए भी अन्नपूर्णास्वरूपिणी कृषक-महिलाओं तथा अन्नदाता कृषक-पुरुषों की सर्वोच्च आवश्यकता है। जहाँ अन्न न हो, वहाँ प्राण नहीं रह सकते और जहाँ जल न हो, वहाँ अन्न नहीं हो सकता। शस्यश्यामला धरतीमाता को जब तक जल-रूपी अमृत प्राप्त न हो, वह शस्यश्यामला नहीं रह सकती। लक्ष-लक्ष योजनव्यापी सूखी भूमि का विस्तार भी जल के अभाव में भारस्वरूप ही है।

कोकिला—जल का माध्यम क्या हो ?

सुनंद—जल का माध्यम मेघ हों, नदी-नद हों, निर्झर हों, सरोवर हों, कूप हों, बावड़ियाँ हों या और कुछ हो, धरतीमाता को जल का जीवन-अमृत किसी न किसी प्रकार से अवश्य प्राप्त होना चाहिए, पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होना चाहिए तथा प्रत्येक आवश्यक समय पर प्राप्त होना चाहिए। अन्यथा, हम सबका जीवन घोर धिक्कार का पात्र होगा।

रणवीर—आत्म-अभिशाप के स्पष्ट उद्घोषक साहसी राष्ट्राध्यक्ष जी को श्रद्धानत राष्ट्र का शत-शत वंदन !

कोकिला—तथागत भगवान् गौतम बुद्ध के किस सिद्धांत को आप सर्वाधिक महत्त्व देते हैं ?

सुनंद—अपरिग्रह के सिद्धांत को। अपरिग्रह के सिद्धांत का घर-घर में प्रचार किया जाना चाहिए और समस्त राष्ट्र के जन-मानस को उससे

आलोकित किया जाना चाहिए, क्योंकि अपरिग्रह ही अहिंसा का जनक है। अहिंसा के सिद्धांत के योजनाबद्ध कार्यान्वयन ही से जनतंत्र शांतिसमन्वित हो सकता है। शांति के अभाव में समस्त योजनाओं का विध्वंस अवश्यंभावी है। अपरिग्रह के अभाव में समता का सिद्धांत दिवास्वप्नमात्र है और समता के अभाव में जनतंत्र का विध्वंस अवश्यंभावी है, उसका अंतर्विग्रह का भक्ष्य बन जाना अनिवार्य है। समस्त विषमताओं का विध्वंस करके ही जनतंत्र को अजरामर बनाया जा सकता है।

सुमन—आप अजरामर हों और आपकी महान् योजनाओं से हम सबका प्रिय स्वतंत्र जनतंत्र अजरामर हो ! यदि हम सबका स्वतंत्र जनतंत्र अजरामर रहेगा, तो, हम सब मरकर भी उसके रूप में अजरामर रहेंगे। आपके आश्वासन से मुझे पूर्ण निश्चिंतता प्राप्त हुई। अब मेरा मरण धन्य है ! अब मैं आपसे अंतिम विदा लेता हूँ। मुझे संतोष है कि मैं अथक रूप में अंतिम क्षण तक अपना कर्तव्य-पालन करते-करते चरमशांतिदायिनी मृत्यु का वरण कर रहा हूँ ! जय स्वतंत्र जनतंत्र !

[सुमन का देहांत ।]

सुनंद—स्वतंत्र जनतंत्र का महान् सेनानी अथक एवं कठोर कर्तव्य-पालन की शरशय्या पर इस प्रकार आदर्श वीरगति को प्राप्त हुआ ! इस पवित्रात्मा को हम सबका सादर वंदन !

[सभी प्रणत होते हैं ।]

कोकिला—दीपक की भाँति प्रत्येक क्षण कर्तव्य-पालन की साधना में गल-गलकर प्राणोत्सर्ग करने की यह वास्तव में आदर्श एवं वंदनीय विधा है !

रणवीर—हमें गंभीर एवं हार्दिक खेद है कि जनतंत्र के शत्रुओं से सन्मुख युद्ध करने का प्रत्यक्ष अवसर पाकर हम तत्क्षण अपने प्राणों का बलिदान करने की दूसरी विधा का गौरव प्राप्त न कर सके। इसका कारण महाबलाधिकृत सुमनजी का कठोर अनुशासन ही रहा। सुमनजी का कथन था कि जनतंत्र को विजयी बनाने के लिए अथक कार्य एवं कठोर श्रम करो। वज्जी-राज्य-भर में तथा सीमांत पर भी निरंतर अपना आवागमन रखो।

प्रत्येक स्त्री-पुरुष को प्रत्येक क्षण जनतंत्र की रक्षा करने योग्य साहस से संपन्न बनाने का प्रयास करते रहो। निर्धारित कार्यक्रम को पूर्ण करते हुए यदि आत्म-बलिदान करने का अवसर प्राप्त हो जाय, तो, निस्संकोच तत्क्षण प्राणों का उत्सर्ग कर दो, किंतु, प्राण-बलिदान के अवसर की प्रतीक्षा में एक क्षण के लिए भी प्रत्येक क्षण के नियमित-निर्धारित कार्य से विमुख होकर न बैठो !

कोकिला—सुमनजी के इस आदेश के पालन में लगे रहने के कारण ही हम सन्मुख-युद्ध मे प्रत्यक्ष प्राणोत्सर्ग न कर पाए। हृदय की यह आकांक्षा अपूर्ण ही रह गई। अब सुमनजी के चरणों में बैठकर हम प्रतिज्ञा करते हैं कि भविष्य में यदि हमारे प्रिय जनतंत्र की ओर किसीने कठोर दृष्टि से देखा, तो, हम जनतंत्र की रक्षा के संग्राम में प्राणों का उत्सर्ग करनेवालों की प्रथम पंक्ति में निश्चत रूप से रहेंगे। अन्य किसी व्यापक अथवा गहन कार्यक्रम का उत्तरदायित्व हम स्वीकार न करेंगे।

रणवीर—अवश्य, मैं भी इस प्रतिज्ञा में तुम्हारे साथ हूँ, कोकिला !

सुनंद—जनतंत्र के आदर्श-वीर तरुण-तरुणियो, अधीर न हो ! तुम लोगों के लिए अधीरता का कोई कारण नहीं है। तुम्हारा जीवन सुदीर्घ है। स्वतंत्र जनतंत्र महान् है, गणराज्य अमर है। तुम्हारे सामने अभी अनेक अवसर हैं। किंतु, मैं अपने हृदय को कैसे धैर्य बँधाऊँ ? मैं न तो प्रलयाग्नि की भाँति उस प्रकार भभककर मर सका, जिस प्रकार तुम दोनों मरना चाहते हो तथा न अभी तक साधना के दीपक की भाँति उस प्रकार तिल-तिल करके जलकर एवं गलकर समाप्त हो सका, जिस प्रकार प्रधानसेनापति सुमनजी समाप्त हो गए। अब मेरे जीवन के दिन ही कितने शेष रहे हैं ! सुहृद्वर सुमनजी के वियोग में वे और भी अल्प हो गए हैं। उनकी भाँति कृतकृत्यता के साथ प्राणोत्सर्ग करने का अब ऐसा कोई पुण्य अवसर मेरे समक्ष नहीं है।

कोकिला—आप महान् राजपुरुष के रूप में तपोधन ऋषि हैं। समस्त गणराज्य की हार्दिक आकांक्षा है कि निर्मल चारित्र्य एवं उज्ज्वल आदर्श के प्रकाश-पुंज के रूप में आप चिरायु हों तथा अपने महान् सिद्धांतों की प्रखर ज्योति से हम-जैसे लक्ष-लक्ष युवक-युवतियों का जीवन-पथ निरंतर आलोकित करते रहें। आपके अधीर होने से तो राष्ट्र का शिखर-भंग ही हो जायगा, जनतंत्र की यह उज्ज्वल विजय धूमिल हो जायगी।

सुनंद—राष्ट्र का शिखर मेरा आश्रित नहीं है। वह जनतंत्र के सिद्धांतों के उत्कर्ष का प्रतीक है, जिसका आधार तुम-जैसे वीर, साहसी, त्यागी तथा बलिदानी युवक-युवतियों का कर्मण्य, निस्स्पृह, त्यागोज्ज्वल एवं तेजस्वी जीवन है। तारुण्य साहस, धैर्य, वीरता, स्वतंत्रता, आत्म-बलिदान तथा स्वार्थ-त्याग ही का दूसरा नाम है। ऐसा तारुण्य जब तक जीवित है, तब तक वार्धक्य यदि प्रत्येक क्षण मृत्यु का वरण करता रहे, तो भी, जनतंत्र पर कोई संकट विजय नहीं प्राप्त कर सकता।

रणवीर—उत्साह में तारुण्य से आगे रहनेवाला वार्धक्य तारुण्य का चिर-पथ-प्रदर्शक है। उसे खोकर तारुण्य दिग्भ्रमित हो सकता है।

सुनंद—तारुण्य के लक्ष्यपथ का वास्तविक ध्रुव-तारा तो जनतंत्र ही है। स्वतंत्र जनतंत्र अजरामर है, स्वतंत्र गणराज्य चिर-अजेय है। भविष्य जनतंत्र ही का है, राजतंत्र का नहीं, चक्रवर्तित्व का नहीं, एकतंत्र का नहीं, साम्राज्यतंत्र का नहीं। इस भावना को अपने हृदयों में सदा जाग्रत रखो! तुम लोगों का चिरतरुण जनतंत्र सदैव तुम लोगों के साथ है। हम वृद्धजनों के देहांत के पश्चात् भी तुम उसे अपनी भावनाओं में चिरस्थायी पाओगे। जनतंत्र का सिद्धांत निर्विवाद रूप से सर्वश्रेष्ठ है। जनतंत्र चिरस्थायी है, चिर-विजयी है। यदि कभी वह असफल भी होगा, तो, अल्प समय ही के लिए। वह घोर संकटों से संघर्ष करके भी वारंवार पुनरुज्जीवित होता रहेगा।

कोकिला—अंतिम विजय उसीकी होगी।

सुनंद—निस्संदेह अंतिम विजय उसीकी होगी और वह चिरस्थायी रहेगी। अंतिम सफलता जनतंत्र ही को प्राप्त होगी। उसपर सदा अक्षय गौरव तथा गर्व का अनुभव करो! वीरवर सुमनजी के शव को राष्ट्र की श्रद्धापूर्ण वंदना प्राप्त करने के लिए सादर प्रस्तुत करने तथा जनता को जनतंत्र की वर्तमान विजय की सूचना से आह्लादित करने जाने के पूर्व मेरे साथ एक वार उच्च स्वर से पुनः जनतंत्र का जयनाद करो, जिससे मेरा हृदय सुमनजी के वियोग की व्यथा को झेल सके, अचल धैर्य तथा अभिनव उत्साह का संवल प्राप्त कर सके। बोलो, प्राणों की पूरी शक्ति के साथ बोलो, [**उद्घोष के स्वर में**] जय स्वतंत्र जनतंत्र!

कोकिला और रणवीर—जय स्वतंत्र जनतंत्र!

[**पटाक्षेप** ।]

साहित्यवाचस्पति डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द-

★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★★

साहित्यमाला

★ ★ ★ ★

पहला पुष्प : प्रताप-प्रतिज्ञा (ऐतिहासिक नाटक)

"साम्राज्यवाद के विरुद्ध भारतीय जनता के स्वतंत्रतासंग्राम में सन् १९२० में मैं सक्रिय रूप से संमिलित हो गया था तथा स्वतंत्रता मेरे प्राणों की प्रेरणाश्वास बन गई थी ।

अत:, यह स्वाभाविक था कि मैं 'प्रताप-प्रतिज्ञा' नाटक की रचना करके भारतीय जनता की स्वातंत्र्यभावना को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता । वीरवर प्रतापसिंह इसी स्वातंत्र्यभावना के प्रतीक थे । अत:, उनपर लिखा गया यह नाटक लोकप्रिय हुआ ।

इसके नवीनतम संस्करण में मैंने इतने संशोधन, परिवर्तन तथा परिवर्धन कर दिए हैं कि यह लगभग पुनर्लिखित हो गया है । इसकी मूल आत्मा फिर भी अक्षुण्ण है ।"

दूसरा पुष्प : क्रांतिवीर तात्या टोपे (ऐतिहासिक उपन्यास)

"मेरे 'क्रांतिवीर तात्या टोपे' उपन्यास के संशोधित तथा परिवर्धित नवीन संस्करण ने यह प्रमाणित कर दिया है कि उच्चादर्शयुक्त उपन्यासों के लिए पाठकों के मन में सद्भावना है । इस क्षेत्र में इसलिए अभी तक उचित परिमाण में प्रयोग नहीं किए गए थे कि अधिकतर उपन्यासलेखकों के मन में यह भ्रांत धारणा थी कि ऐसे उपन्यास लोकप्रिय नहीं हो सकते । मैंने इस धारणा को तोड़ने का विनम्र साहस किया और मेरा प्रथम उपन्यास 'क्रांतिवीर तात्या टोपे' उसी प्रकार लोकप्रिय हुआ, जिस प्रकार मेरा प्रथम नाटक 'प्रताप-प्रतिज्ञा' हुआ था । इस उपन्यास का मूलाधार भी भारतीय

जनता का वही स्वतंत्रता-प्रेम है, जिसका मैं सन् १६२० से सक्रिय उपासक हूँ ।"

तीसरा पुष्प : जय स्वतंत्र जनतंत्र (ऐतिहासिक नाटक)

"इतिहासाधारित सर्जनात्मक साहित्य में भारत के प्राचीन राजतंत्रों के प्रति जितना आकर्षण दृष्टिगोचर होता है, उतना प्राचीन भारतीय जनतंत्रों के प्रति नहीं। इस एकांगिता का रूढ़िभंजन एक साहसपूर्ण कार्य था, जिसे मैंने नम्रतापूर्वक करने का प्रयास किया। मेरा यह 'जय स्वतंत्र जनतंत्र' नाटक इस दिशा में मेरा एक साहित्यिक चरण है। इसके अनेक संस्करणों का प्रकाशन मेरे इस प्रयास के प्रति पाठकों की सद्भावना व्यक्त करता है। उससे प्रोत्साहित होकर मैंने इस नाटक के नवीनतम संस्करण में प्रचुर संशोधन, परिवर्तन तथा परिवर्धन करके इसे अद्यतन स्वरूप देने का प्रयास किया है। आशा है, वर्तमान तथा भावी स्वतंत्र भारतीय जनतंत्र के रक्षक भारतीय इससे अपने अतीत के जनतांत्रिक गौरव का अनुभव करेंगे।"

चौथा पुष्प : क्रांतिवीर चंद्रशेखर (ऐतिहासिक नाटक)

"मेरा 'क्रांतिवीर चंद्रशेखर' नाटक स्वतंत्रता के प्रति संमान है। वीरवर चंद्रशेखर आजाद भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम के प्रखर सेनानी तथा 'हिंदुस्तानी जनतांत्रिक समाजवादी सेना' के प्रधानसेनापति थे। फिर भी, उनका जीवनस्तर किसानों और मजदूरों के जीवनस्तर से ऊँचा नहीं था। इस दृष्टि से वह भारतीय जनता के अधिकांश के वास्तविक प्रतिनिधि थे। उनकी वीरता, साहस तथा धैर्य अद्भुत थे। उनपर अपना ऐतिहासिक नाटक लिखकर मैंने उनके स्वतंत्रता, जनतंत्र तथा समाजवाद के महान् आदर्शों को अपनी हार्दिक साहित्यिक श्रद्धांजलि अर्पित करने का प्रयास किया। इसके अनेक संस्करणों के प्रकाशन ने यह प्रमाणित किया कि उच्चादर्शयुक्त नाटकों के प्रति पाठकों की सद्भावना है। इसकी लोकप्रियता-

से प्रोत्साहित होकर मैंने इसके नवीनतम संस्करण में अनेक संशोधन, परिवर्तन तथा परिवर्धन करके इसे अद्यतन स्वरूप देने का प्रयास किया है।"

पाँचवाँ पुष्प : वीरांगना लक्ष्मीबाई का बलिदान (ऐतिहासिक खंडकाव्य)

"शहीद वीरों की भाँति शहीद वीरांगनाओं का महत्त्व भी सर्वोपरि है। स्वतंत्रतासंग्राम के एक विनम्र सैनिक के रूप में मैंने इसे अपना अनिवार्य पवित्र कर्तव्य माना कि मैं अपनी कुछ पुस्तकों के रूप में भारतीय स्वतंत्रतासंग्राम के शहीद सेनानियों और सेनानेत्रियों को अपनी हार्दिक साहित्यिक श्रद्धांजलियाँ समर्पित करूँ। इसी क्रम में मैंने सन् १८५७-५८ के स्वतंत्रतासंग्राम की सेनानेत्री झाँसीवाली वीरांगना लक्ष्मीबाई पर अपने इस ऐतिहासिक खंडकाव्य की रचना की। अपने इस नवीनतम खंडकाव्य की रचना को मैं अपने जीवन की एक महती कृतार्थता मानता हूँ।

इसके अभिनव संस्करण में मैंने इतने संशोधन तथा परिवर्धन कर दिए हैं कि यह लगभग पुनर्लिखितवत् हो गया है। इसके अधिकांश पात्र तथा पात्राएँ ऐतिहासिक हैं। किंतु, इसमें कुछ काल्पनिक पात्र-पात्राओं का समावेश भी किया गया है। वे इसके मूल कथानक से विसंगत नहीं हैं।"

छठा पुष्प : मृत्युंजय मानव गणेश (ऐतिहासिक खंडकाव्य)

'मृत्युंजय मानव गणेश' अमर शहीद, प्रखर पत्रकार, आदर्श स्वतंत्रता तथा समता सेनानी और महान् देशभक्त गणेशशंकर विद्यार्थी जी पर लिखा गया खंडकाव्य है। इसके अनेक संस्करणों के प्रकाशन ने इसकी लोकप्रियता प्रमाणित कर दी है। इसे लिखकर मुझे तो अनिर्वचनीय आत्मसंतोष प्राप्त हुआ ही, श्रद्धेय विद्यार्थी जी की पुत्री तथा दौहित्र ने भी इसकी प्रशंसा करके इसे गौरव प्रदान किया।

गणेशशंकर जी के प्राण-बलिदान को महात्मा गाँधी ने अपने लिए आदर्श माना था। इससे तो गणेशशंकर जी की अनुपम महत्ता स्थापित हुई ही, गणेशशंकर जी के बलिदान के समान ही उनकी प्रेरक कर्मवीरता, अथक

देशसेवा, जीवनव्यापी संघर्ष, स्वार्थत्याग तथा मानवता के मंगल के हेतु की गई सतत साधना, श्रम और तपस्या भी अनुपम महत्त्वपूर्ण थे।

श्रद्धेय गणेशशंकर जी साहित्य, पत्रकारिता, अध्यापन तथा राजनीति एवं सामाजिक जीवन में मेरे एक अत्यंत आदरणीय आदर्श रहे। उनके 'प्रताप' पत्र तथा 'प्रभा' पत्रिका का मैं प्रायः सदा नियमित और श्रद्धालु पाठक रहा। उनपर यह खंडकाव्य लिखकर मैंने उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट की। गणेशशंकर जी ही के कारण यह खंडकाव्य तरुण पीढ़ियों के लिए सदैव पठनीय बना रहेगा।

इसके नवीनतम संस्करण में मैंने प्रचुर संशोधन तथा परिवर्धन करके इसे अद्यतन स्वरूप देने का प्रयास किया है।"

सातवाँ पुष्प : अशोक की अमर आशा (ऐतिहासिक नाटक)

"मेरा 'अशोक की अमर आशा' नाटक स्थायी विश्वशांति की आवश्यकता की ओर एक इंगित है। स्थायी विश्वशांति के अभाव में विश्व के विनाश की आशंका हो सकती है। इस आशंका से विश्वमानवता को मुक्त रखने का उपाय यह है कि विश्व की जनता को युद्ध की ओर से शांति की ओर प्रेरित किया जाय। बुद्ध ने इसके लिए सैद्धांतिक दर्शन प्रदान किया था। अशोक ने उसे कर्म में परिणत किया। अशोक ने शक्तिशाली होते हुए भी और युद्धों में विजय प्राप्त करने पर भी, अपने हृदय-परिवर्तन के कारण, युद्ध की नीति का सदा के लिए स्वेच्छा से परित्याग कर दिया। यह दूसरी बात होती कि यदि शांतिप्रिय भारत पर कोई युद्धप्रिय राष्ट्र आक्रमण कर देता, तो, भारत की जनता, अशोक के नेतृत्व में, उसे खदेड़ देती। मेरे इस नाटक के अनेक संस्करणों का प्रकाशन यह प्रमाणित करता है कि स्थायी विश्वशांति के प्रति पाठकों की सहानुभूति है। इसके नवीनतम संस्करण में मैंने अनेक संशोधन, परिवर्तन तथा परिवर्धन करके इसे अद्यतन बना दिया है।"

आठवाँ पुष्प : शहीद को समर्पण (ऐतिहासिक नाटक)

"मेरा यह 'शहीद को समर्पण' नाटक ऐतिहासिक भी है, सामाजिक भी और समस्यामूलक भी। इस दृष्टि से यह नाटकों की तीन विधाओं का एक में समन्वित स्वरूप है। यह ऐतिहासिक इसलिए है कि इसकी पृष्ठभूमि भारतीय जनता का वह स्वतंत्रतासंग्राम है, जो सन् १९२० से १९४७ तक चला और अब ऐतिहासिक बन गया है। सामाजिक इसलिए कि इसमें उस सामाजिक परिवेश का प्रश्रय है, जो तत्कालीन भी था और समकालीन भी है। यह समस्यामूलक इसलिए है कि इसमें अनेक समस्याओं का विश्लेषण करके उनके समाधान खोजने का प्रयास किया गया है। इसमें अनेक मनोवैज्ञानिक ग्रंथियों, कुंठाओं और अंतर्द्वंद्वों को भी अनावृत करने का प्रयास किया गया है और कुछ पाखंडों पर भी प्रहार करने का। इसके पात्र और पात्राएँ प्रमुखतया वे तरुण और तरुणियाँ हैं, जो भारतीय जनता की स्वतंत्रता के लिए अपने सर्वस्व का बलिदान करने को तत्पर थे और अपनी व्यक्तिगत समस्याओं से जूझते हुए भी जनता की मुक्ति के संघर्ष की प्रथम पंक्ति में रहने का यत्न करते थे। आशा है, आधुनिक भारतीय तरुण-तरुणियों को भी इस नाटक से कुछ सत्प्रेरणा प्राप्त होगी और उससे मैं कृतार्थ हो सकूँगा। इसके अनेक संस्करण प्रकाशित होकर इसकी लोकप्रियता प्रमाणित कर चुके हैं। इसके नवीनतम संस्करण में मैंने प्रचुर संशोधन, परिवर्तन तथा परिवर्धन करके इसे अद्यतन बना दिया है।"

नवाँ पुष्प : त्यागवीर गौतम नंद (ऐतिहासिक नाटक)

"मेरा 'त्यागवीर गौतम नंद' नाटक स्वातंत्र्योत्तर भारत के युग की उसी प्रकार पुकार है, जिस प्रकार मेरा 'प्रताप-प्रतिज्ञा' नाटक स्वातंत्र्यपूर्व भारत के युग की पुकार था। लोकप्रियता में 'त्यागवीर गौतम नंद' का स्थान, 'प्रताप-प्रतिज्ञा' को छोड़कर, मेरे अन्य सब नाटकों से अधिक उच्च है। 'प्रताप-प्रतिज्ञा' के नायक वीरवर प्रतापसिंह का स्वातंत्र्यप्रेम जिस प्रकार स्वातंत्र्यरक्षा के लिए भी देशभक्ति की स्थायी प्रेरणा बना हुआ है

और बना रहेगा, उसी प्रकार इस 'त्यागवीर गौतम नंद' नाटक के नायक गौतम नंद का स्वार्थत्याग और आत्मबलिदान भी भारत की स्वतंत्रता को स्थायी और सार्थक बनाने में तरुणों और तरुणियों के लिए सदैव प्रेरणाप्रद बना रहेगा। गौतम नंद उन सामान्यजनों के आदर्श हैं, जो, कोटि-कोटि की संख्या में, सुखोपभोगों की लालसा को तिलांजलि देकर, अपने सर्वोच्च त्याग और आत्मबलिदान से मानवता और भारत को महान् गौरव प्रदान करके उनकी शक्ति को अजरामर बना सकते हैं। लघुता की गुरुता का यह उत्कृष्ट उदाहरण तरुण पीढ़ी के लिए इतिहास की अत्यन्त मूल्यवान् थाती है। इस धारणा का प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि 'त्यागवीर गौतम नंद' के संस्करणों की संख्या भी 'प्रताप-प्रतिज्ञा' की भाँति ही बहुत बड़ी रही है।

'त्यागवीर गौतम नंद' नाटक के नवीन संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण में मैंने इतने प्रचुर संशोधन तथा परिवर्धन कर दिए हैं कि यह लगभग पुनर्लिखितवत् बन गया है।"

दसवाँ पुष्प : **स्वतंत्रता की बलिवेदी पर** (ऐतिहासिक खंडकाव्य)

"बीसवी शताब्दी के पूर्वार्ध में भारतीय जनता ने स्वतंत्रताप्राप्ति के लिए जो संघर्ष किया, वह अनुपम था। उस स्वतंत्रतासंग्राम में जनता ने जो सर्वस्वबलिदान किया, उसीपर मैंने अपना यह 'स्वतंत्रता की बलिवेदी पर' खंडकाव्य लिखा है। इतिहास और पुराणों में न्याय और सत्य के लिए किए गए जिन संग्रामों का वर्णन है, उनमें किसीसे कम रोमांचकारी वह स्वतंत्रतासंग्राम नहीं था, जो उपर्युक्त युग में भारत की जनता ने किया। इस स्वतंत्रतासंग्राम में सबसे अधिक त्याग और बलिदान जनसाधारण ने किया। उनकी प्राणाहुतियाँ सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण थीं। किंतु, इतिहास में उन्हें उतना महत्त्व नहीं मिला, जितना प्रसिद्ध नेताओं को मिला। कुछ काल्पनिक स्त्रीपुरुषों को अज्ञात शहीदों का प्रतीक मानकर उनके रूप में मैंने उन बहुसंख्यक सामान्यजनों को इस खंडकाव्य के रूप में अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित की है, जिन्होंने स्वतंत्रता की बलिवेदी पर सर्वाधिक प्राणाहुतियाँ अर्पित कीं और जो फिर भी अज्ञात बने रहे।

इस खंडकाव्य के अनेक संस्करणों के प्रकाशन ने इसकी लोकप्रियता प्रमाणित की है और यह सिद्ध किया है कि भारतीय स्वतंत्रतासंग्राम में सामान्यजनों द्वारा किए गए महान् बलिदानों के प्रति पाठकों के हृदयों में गंभीर श्रद्धा है।

इसके नवीनतम संस्करण में मैंने प्रचुर संशोधन तथा परिवर्धन करके इसे अभिनव स्वरूप देने का प्रयास किया है।"

ग्यारहवाँ पुष्प : **महापुरुषों के संस्मरण** (संस्मरण)

"छिहत्तर वर्ष के लगभग उम्र वाले और लगभग सन् १९२० से लेकर अब तक साहित्यरचना करते आने वाले अन्य अनेक साहित्यकारों ने अपने आत्मचरित लिखे हैं और उन्हें प्रकाशित भी करा लिया है। किंतु, मुझमें यह क्षमता नहीं है।

अपनी 'महापुरुषों के संस्मरण' नामक पुस्तक में मैंने ऐसे महापुरुषों के संस्मरण लिखे हैं, जो अब इस संसार में नहीं हैं और जो अपने निर्वाण के उपरांत तो निर्विवाद रूप से सबकी श्रद्धा के और अधिक पात्र बन चुके हैं।

उनके जीवनकाल में भी कभी किसीने उनकी सदाशयता के प्रति अणुमात्र भी शंका प्रकट नहीं की थी, बल्कि, उनसे मतभेद रखनेवाले भी उनके प्रति सदा हार्दिक आदरभाव रखते थे। यह स्वाभाविक ही है कि ऐसे सर्वमान्य महापुरुषों के प्रति अर्पित की गई मेरी इन साहित्यिक श्रद्धांजलियों के प्रति पाठकों ने अपनी सद्भावना व्यक्त की।

इस पुस्तक के लेखन का अभिप्राय व्यक्तिगत संपर्कों का विवरण नहीं है, बल्कि, प्रतीकस्वरूप, महापुरुषों के प्रति जनता की श्रद्धा का व्यक्तीकरण है।"

बारहवाँ पुष्प : **अंतिमा** (कवितासंग्रह)

"मेरे प्रत्येक कवितासंग्रह की भाँति, 'अंतिमा' भी ऐसा ही कविता-संग्रह है, जिसकी एक भी कविता ऐसी नहीं है, जिसे एक साथ चार

पीढ़ियों के किसी भी परिवार के समस्त सदस्यों के बीच में बैठकर बोलकर पढ़ने में जरा भी संकोच हो। यह संस्कार मुझे अपने बचपन से मिला है, जिसमें मेरे सारे परिवार में 'रामचरितमानस' बोलकर पढ़ा जाता था। नीरसता से बचकर भी काव्य में निर्मलता लाने की संस्कृति हिंदी में अत्यंत प्राचीन रही है और मैं उसका आजीवन एक अत्यंत अकिंचन अनुयायी रहा हूँ। मेरी लघु तथा विनम्र क्षमता की सीमा के अंतर्गत मेरे इस नवीनतम कवितासंग्रह 'अंतिमा' की कविताओं के विषय यथासंभव सत्यशिवसुंदर-समाराधक, नवीन, क्रांतिनिष्ठ, व्यापक और राष्ट्रनिर्माणकारी हैं, घिसी-पिटी रूढ़ियों के दास, नीरस, पतनप्रेरक और संकीर्ण नहीं।''

तेरहवाँ पुष्प : नई किरण (कवितासंग्रह)

''मैं आरंभ ही से स्वतंत्रता, समता और मानवता को जनता की उन्नति के क्रमिक सोपान मानता आया हूँ और उन्नतिपथगामी जनदेवता ही की आराधना को मेरा समस्त साहित्य, आस्था तथा आशापूर्वक, समर्पित रहा है।

मेरा यह 'नई किरण'-नामक कवितासंग्रह मेरी इसी आराधना की शृंखला की एक प्रिय कड़ी है। मुझे आत्मसंतोष है कि मेरी इस पुस्तक को पाठकों ने अपनाया।

मुझे विश्वास है कि यह पुस्तक भारत के तरुण-तरुणियों को स्वतंत्रता, समता और मानवता के तीनों सोपानों के समन्वय की नवसंस्कृति की ओर अहिंसात्मक प्रेरणा देकर मुझे कृतार्थता प्राप्त कराती रहेगी। इसकी कविताओं को भी प्रकाशन के पूर्व संशोधित किया गया।''

चौदहवाँ पुष्प : बलिपथ के गीत (कवितासंग्रह)

''परतंत्र भारत, संघर्षरत भारत और स्वतंत्र भारत, तीनों स्थितियों के भारत, की जनता के हृदय के स्वरों को मैंने अपने इस 'बलिपथ के गीत' नामक कवितासंग्रह की भिन्न-भिन्न कविताओं में गुंजित करने का विनम्र प्रयास किया है। इसकी कविताएँ भिन्न-भिन्न समयों में लिखी गई हैं, किंतु,

उनमें एक एकसूत्रता है, जो बलिदान की भावना से उद्भूत एवं उत्प्रेरित है।

इसके अनेक संस्करणों के प्रकाशन ने इसकी लोकप्रियता सिद्ध करके मेरे हृदय को प्रोत्साहित किया। मैंने इसके नए संस्करण के प्रकाशन के पूर्व इसमें संशोधन करके इसे अद्यतन बनाने का प्रयत्न किया, जिससे यह यथा-संभव चिरनवीन बना रह सका।

इसकी कविताओं का उचित मूल्यांकन करने के लिए यह आवश्यक है कि इसकी प्रत्येक कविता को उसके काल के परिप्रेक्ष्य और परिवेश में देखा जाय। रस का मधुचक्र इतिहास के कालचक्र से मिलकर जो मनःस्थिति उत्पन्न कर सकता है, वही इसके आनंद की प्राप्ति के लिए उपयुक्त है।"

पन्द्रहवाँ पुष्प : **नवयुग के गान** (कवितासंग्रह)

"मेरा 'नवयुग के गान'–नामक कवितासंग्रह स्वतंत्रतासंग्राम की यादगार है। इसके प्रथम संस्करण की भूमिका मैंने सन् १९४२ में, जेल में, एक स्वतंत्रतासैनिक के रूप में, लिखी थी।

इसमें मेरी सन् १९३७ से १९४२ तक की कविताएँ संगृहीत हैं, जिन्हें मैंने बाद के संस्करणों में संशोधित करके अद्यतन स्वरूप देने का प्रयास किया।

इसकी कविताओं में स्वतंत्रतासंग्राम की हुंकार तो है ही, समता का स्वर भी है। उनमें, स्वतंत्रतासंग्राम के युग में भी, स्वतंत्रता और समता, दोनों, की धाराएँ साथ-साथ प्रवाहित हो रही थीं। स्वतंत्रताप्राप्ति के एक दशक पहले इसकी कविताओं ने समता का स्पष्ट संकेत दिया। यह इस संग्रह की अपनी एक अलग विशेषता है।

इसके अनेक संस्करणों के प्रकाशन ने इसकी जो लोकप्रियता प्रमाणित की, उसने मेरे साहित्य को कृतार्थता प्रदान की और मुझे आत्मसंतोष। स्वतंत्रता के प्रहरी तथा समता के समाराधक युवकों और युवतियों का स्नेह

इस कवितासंग्रह को प्राप्त हुआ, जिससे इस कवितासंग्रह ने अपनी शाश्वत एवं ऐतिहासिक उपादेयता सिद्ध की।"

सोलहवाँ पुष्प : भूमि की अनुभूति (कवितासंग्रह)

"स्वतंत्रतासंग्राम में विजय प्राप्त करने के बाद जनता में अन्याय, शोषण, विषमता आदि के विरुद्ध जो स्वर उभरा, उसने जो नवराष्ट्रनिर्माण का नया उत्साह अपने अंतर में अनुभूत किया, उसके आरंभिक आवेग को मैंने अपनी सन् १९४९ से १९५२ तक की कविताओं के रूप में अपने 'भूमि की अनुभूति'–नामक कविता-संग्रह में संगृहीत किया। मानवीय सहानुभूतिशून्य मिथ्या कल्पनाओं ही के आकाश में सदा विचरण करनेवाले साहित्य और कला का भी इन कविताओं में आवाहन किया गया कि वे नीचे भी देखें, भूमि की अनुभूति को भी अपने मर्म में स्थान दें और तल के मानवों, शोषितों, वंचितों और उपेक्षितों को भी अपनी हार्दिक सहानुभूति प्रदान करें।

इन कविताओं में उपेक्षित विषयों को कवितारचना के विषय बनाकर कला का अभिनव सौंदर्य देने का विनम्र प्रयत्न किया गया और अपने लिए एक नया मार्ग बनाने का यथाशक्ति प्रयास किया गया।

स्वातंत्र्योत्तर काल के आरंभ के नवसमाज-नवसंस्कृति-निर्माण के प्रबल उत्साह के जनता के स्वर के इन कविताओं में ध्वनित होने के कारण इन्हें पाठकों ने अपनाया तथा इस कवितासंग्रह के अनेक संस्करण प्रकाशित हुए। प्रत्येक संस्करण में इन कविताओं को संशोधित करके अद्यतन स्वरूप देने का मैंने प्रयास किया।"

सत्रहवाँ पुष्प : पूर्णा (कवितासंग्रह)

"मेरे 'पूर्णा"–नामक कवितासंग्रह में संगृहीत कविताएँ लिखी तो सन् १९६७ से १९७४ तक गई थीं, किंतु, इन्हें मैंने, इस संग्रह के रूप में पुस्तकाकार प्रकाशन के पूर्व, संशोधित करके अद्यतन बनाने का पूर्ण प्रयत्न किया है।

इसे संसार के समस्त स्वतंत्रता—समता-मानवता-संघर्षों के शहीदों की पावन स्मृति में समर्पित किया गया है। इससे व्यक्त होता है कि इस संग्रह में संगृहीत कविताएँ स्वतंत्रता, समता तथा मानवता के उच्चादर्शों के समाराधन का आस्थान्वित प्रयास हैं। ये विश्वबंधुत्व तथा अहिंसा के सिद्धांतों के प्रति भी समर्पित हैं। क्रांतिनिष्ठा भी इनका एक प्रमुख स्वर है।

इसकी कविताओं में प्रहार-प्रवृत्ति के साथ-साथ व्यंग्यवृत्ति भी है। युवा-आक्रोश को इनमें सार्थक तथा रचनात्मक दिशा देने का विनम्र प्रयास भी किया गया है। मुझे प्रसन्नता है कि तरुण पीढ़ी ने इसे पसंद किया है।"

अठारहवाँ पुष्प : मुक्ति के स्वर (कवितासंग्रह)

"अपने इस 'मुक्ति के स्वर'—नामक कवितासंग्रह के प्रत्येक संस्करण के प्रकाशन पर मैंने इसमें संगृहीत कविताओं का संशोधन करके उन्हें अद्यतन बनाने का पूर्ण प्रयास किया है।

इसके अनेक संस्करणों के प्रकाशन ने इसकी लोकप्रियता प्रमाणित करके मुझे आत्मसंतोष प्रदान किया है।

इसकी कविताओं में विषयों की विविधता है। स्वतंत्रता, समता एवं मानवता के सिद्धांतों की अर्चना तथा क्रांति की समाराधना के साथ-साथ इसमें प्रकृति-सौंदर्य की भी उपासना है। इसके विषयों में निर्झर है, तारिका है, गिरिशृंग है, मानव-श्रम की गरिमा है, लघुता का गौरव है, रचनात्मकता है, योजना है तथा महाश्मशान भी है। विषयों की विविधता में भी दृष्टिकोण की एकता है।"

उन्नीसवाँ पुष्प : जीवन संगीत (कवितासंग्रह)

"मेरे नाटकों में जिस प्रकार प्रथम नाटक 'प्रताप-प्रतिज्ञा' के सर्वाधिक संस्करण प्रकाशित हुए, मेरे कवितासंग्रहों में उसी प्रकार प्रथम कवितासंग्रह 'जीवन-संगीत' के सर्वाधिक संस्करण प्रकाशित हुए। 'जीवन-संगीत' में मेरी

सन् १६२० से लेकर सन् १६४० तक की समस्त कविताओं में से चुनी हुई केवल एकसौ कविताएँ ही प्रकाशित की गईं तथा शेष कविताएँ सुरक्षित नहीं रह सकीं । इन एकसौ कविताओं को 'रूप', 'प्रेम', 'जीवन', 'करुणा' तथा 'अध्यात्म' शीर्षक पाँच भागों में विभाजित किया गया है । विषय-विविधता तथा कविताओं की संख्या की दृष्टि से यह मेरा सबसे बड़ा कवितासंग्रह है ।

इसके प्रत्येक संस्करण के प्रकाशन के पूर्व मैंने इसे संशोधित करके अद्यतन बनाया ।"

बीसवाँ पुष्प : बिल्लो का नकछेदन (व्यंग्यविनोदकथासंग्रह)

"मैंने अपने जीवन में कई व्यंग्यविनोदकथाएँ लिखीं । उनमें से नवनीतस्वरूप कुछ कथाएँ चुनकर अपने 'बिल्लो का नकछेदने' नामक व्यंग्य-विनोदकथासंग्रह में संगृहीत कर दीं । इसे पाठकों ने पसंद किया और इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हुए । इसके प्रत्येक संस्करण के प्रकाशन के पूर्व मैंने इसे संशोधित करके अद्यतन बना देने का प्रयास किया । इससे इसकी नवीनता और लोकप्रियता बनी रही । ऐसे व्यंग्यविनोदकथासंग्रहों की कमी बताई जाती है, जो व्यंग्य और विनोद का आनंद देते हुए भी सदाशयतापूर्ण तथा सुरुचिपूर्ण हों, विद्वेष, वैरभाव, वैमनस्य, असद्भावना आदि से पूर्णतया मुक्त हों, समाजसुधार की भावना से प्रेरित हो एवं विशुद्ध मनोरंजन प्रदान करते हों । मैंने इस दिशा में एक विनम्र प्रयास के रूप में इसे पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया ।"

इक्कीसवाँ पुष्प : चिंतनकण (निबंधसंग्रह)

"सन् १६२० से लेकर सन् १६४७ तक, स्वतंत्रतासंग्राम में भाग लेते हुए, मैंने जो देशभक्तिपूर्ण निबंध लिखे, उनमें से नवनीतस्वरूप कुछ निबंधों को चुनकर मैंने अपने इस 'चिंतनकण' नामक निबंधसंग्रह में संगृहीत किया । इसे पाठकों ने पसंद किया और इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हुए । इसकी एक विशेषता यह भी है कि इसे स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद के युग में संशोधित

करके अद्यतन बना दिया गया। इसके निबंधों को विषय-विविधता की दृष्टि से 'भाषा और साहित्य', 'विभूति-विवेचन' तथा 'समाज और राष्ट्र'-शीर्षक तीन भागों में विभाजित कर दिया गया। समता, स्वतंत्रता, महात्मा गाँधी, जनतंत्र आदि इसके निबंधों के लोकप्रिय विषय हैं।

बाईसवाँ पुष्प : सांस्कृतिक प्रश्न (निबंधसंग्रह)

"मैंने अब तक सांस्कृतिक विषयों पर जो निबंध लिखे, उनमें से कुछ निबंधों को चुनकर अपने इस 'सांस्कृतिक प्रश्न'—नामक निबंधसंग्रह में संगृहीत किया। यह लोकप्रिय हुआ और इसके अनेक संस्करण प्रकाशित हुए। इसे अद्यतन बनाने के लिए इसके प्रत्येक संस्करण के प्रकाशन के पूर्व इसे संशोधित किया गया।

संगीत, चित्रकला, शिक्षा, साहित्य, सांस्कृतिक चेतना, राष्ट्रभाषा, राष्ट्रलिपि, राष्ट्रीय रंगमंच, भारतीय खेल, राष्ट्रीय परिधान, लोकसाहित्य, लोककला, सिनेमा, सहशिक्षा, कोश, व्याकरण, सामयिक पत्र आदि इसके निबंधों के विषय हैं। अभिनव चिंतन का विनम्र दृष्टिकोण इनकी प्रेरक शक्ति है।

साहित्यसाधना को संपूर्ण जीवन समर्पित करने के कारण मेरी समस्त पुस्तकें लोकप्रिय हुईं। किंतु, मैं अनेक वर्षों तक कतिपय पुराने प्रकाशकों की शोषणवृत्ति का शिकार बना रहा। लेखन के अतिरिक्त अन्य जीवन-धारण-साधन नहीं होने के कारण मुझे आर्थिक कष्ट सहने पड़े। किंतु, वह स्थिति अब बदलने लगी है। अभिनव प्रकाशन-योजना का आरंभ हुआ है। इसके अन्तर्गत अल्प समय ही में समता प्रकाशन, ग्वालियर तथा क्रांति प्रकाशन, मुरार ग्वालियर ने पाठकों की अश्लीलता से तथा मेरी शोषण से रक्षा करने के अपने संकल्प की पूर्ति में सफलता प्राप्त की है। अत, समता प्रकाशन ग्वालियर तथा क्रांति प्रकाशन मुरार ग्वालियर को मैंने अपनी समस्त पुस्तकों का अधिकृत प्रकाशक नियुक्त किया है।

—जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

ग्वालियर, सत्रह मई १९८३

लोकहितकर तथा लोकप्रिय साहित्य
और उसके यशस्वी लेखक
साहित्यवाचस्पति डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द
(डॉक्टर ऑफ लैटर्स-सम्मानार्थ)



भारत सरकार

स्वतंत्रता के पच्चीसवें वर्ष

के अवसर पर स्वतंत्रता संग्राम में

स्मरणीय योगदान के लिये

राष्ट्र की ओर से

प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने

यह ताम्रपत्र भेंट किया

१५ अगस्त १९७२ ☐ श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

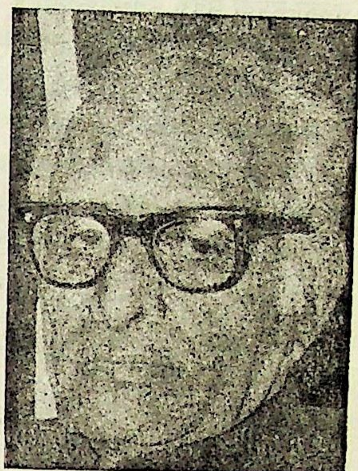
२४ श्रावण १८९४ शकाब्द

.... सन् १९२९ ईसवी में श्री मिलिंद द्वारा लिखी गयी 'प्रताप-प्रतिज्ञा' नामक प्रथम पुस्तक ने भारत के स्वतंत्रता-संग्राम में उल्लेखनीय योगदान दिया था। इस पुस्तक की लोकप्रियता से मिलिंद जी की गणना भारत के शीर्षस्थ नाटककारों में हो गयी।....... मिलिंद जी के साहित्य में वर्षों पहले उस समता को प्रधानता दी गई, जिस समता के लिए अब भारत तीव्र गति से संघर्ष कर रहा है। ... श्री मिलिंद ऐसे अनोखे स्वतंत्रतासंग्राम-सेनानी हैं, जिन्होंने स्वतंत्रतासंग्राम-सेनानी का परिचय-पत्र और प्रधानमंत्री का ताम्रपत्र प्राप्त हो जाने के पश्चात् भी मासिक पेंशन लेना अभी तक स्वीकार नहीं किया है।

—दैनिक नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली, ८ नवंबर १९७६

उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान

सम्मान तथा पुरस्कार-वितरण समारोह (१९८०)



श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिंद

जन्म : १९०७

स्थान : मुरार, ग्वालियर, मध्यप्रदेश

प्रारंभिक शिक्षा मुरार हाई स्कूल में प्राप्त कर आपने महात्मा गाँधी के असहयोग एवं सरकारी विद्यालयों के बहिष्कार के आंदोलन में भाग लेकर सरकारी विद्यालय छोड़कर सन् १९२० में राष्ट्रीय विद्यालय में प्रवेश लिया और तिलक राष्ट्रीय विद्यालय, अकोला (महाराष्ट्र) में मैट्रिक तक शिक्षा प्राप्त की। काशी विद्यापीठ, वाराणसी के तत्कालीन राष्ट्रीय महाविद्यालय से उच्च शिक्षा प्राप्त की। हिंदी, संस्कृत, अँग्रेजी, उर्दू, मराठी, बँगला और गुजराती आदि भाषाओं का आपको अच्छा ज्ञान है।

१९२० से १९७० तक ५० वर्ष के जीवन में आपने सक्रिय राजनीति के क्षेत्र में काम किया, साथ ही साहित्यरचना और पत्रकारिता के क्षेत्र में भी आपने प्रशंसनीय कार्य किया। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सान्निध्य में विश्वभारती, शांतिनिकेतन (प. बंगाल) तथा महात्मा गाँधी के सान्निध्य में महिला-आश्रम, वर्धा में हिंदी अध्यापक तथा अकोला, ग्वालियर, प्रयाग और अजमेर में साहित्यसेवी, पत्रकार तथा राष्ट्रकर्मी के रूप में रहे। आपने

अनेक सुप्रसिद्ध पत्र-पत्रिकाओं का संपादन भी किया। समाजवादी तथा समता-संबंधी अनेक जन-आंदोलनों के संबंध में जेल भी गये।

स्वतंत्रता प्राप्त होने के बाद कांग्रेस द्वारा शासन ग्रहण किये जाने पर सन् १९४७ में मंत्री-पद स्वीकार करने का अनुरोध किये जाने पर आपने उसे अस्वीकार कर दिया। आप एक स्वतंत्र साहित्यकार, मुक्त समाजसेवी तथा स्वतंत्र पत्रकार बने रहना अधिक पसंद करते थे। मध्य भारत श्रमजीवी पत्रकार संघ, नव संस्कृति संघ, मध्य भारत हिंदी साहित्य सम्मेलन, ग्वालियर संभाग साहित्यकार परिषद् तथा साहित्य साधना संसद् आदि संस्थाओं के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इसके अतिरिक्त शिक्षा-विभाग द्वारा स्थापित साहित्य तथा कलाओं से संबंधित अनेक संस्थाओं व अकादमियों के आप सदस्य रह चुके हैं।

देश के प्रतिष्ठित हिंदी, उर्दू, अँग्रेजी, गुजराती, बंगाली, मराठी आदि भाषाओं के अनेक दैनिक पत्रों के प्रतिनिधि के रूप में भी आपने साहित्य की सेवा की है। सन् १९६५ में जबलपुर अधिवेशन में मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन में अभिनन्दन-पत्र द्वारा संमानित किये गये। पुनः ग्वालियर में मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन के पंचम प्रादेशिक अधिवेशन के अवसर पर आपकी साहित्यिक सेवाओं को ऐतिहासिक एवं प्रशंसनीय बताते हुए आपका सार्वजनिक अभिनंदन किया गया।

मिलिंद जी साहित्य के एक ऐसे बरद पुत्र हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी से हिन्दी साहित्य को नयी ऊँचाइयाँ दी हैं। वे एक प्रसिद्ध कवि, नाटककार, व्यंग्यकार तथा निबंधलेखक हैं और साथ ही एक निर्भीक पत्रकार भी। अब तक आपकी १९ पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। उनमें कई पुस्तकों के बीस-बीस संस्करण तक छप चुके हैं। कुछ पुस्तकें माध्यमिक शिक्षा-मंडलों, विश्वविद्यालयों आदि के पाठ्यक्रमों में स्वीकृत रह चुकी हैं।

वर्तमान पता—दाल बाजार, लश्कर, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

—संस्थान के प्रकाशन से।

मध्यप्रदेश साहित्य परिषद्

राजकीय सम्मान (१९७८-७९)

□ श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिंद

हिंदी के वरिष्ठ एवं विख्यात कवि, नाटककार, आदर्श अध्यापक एवं तेजस्वी पत्रकार श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिंद का जन्म १९ नवंबर, १९०७ को मुरार, ग्वालियर में हुआ। साहित्य, इतिहास, अर्थशास्त्र और राजनीति-विज्ञान में आपकी शिक्षा मुरार, पूना, अकोला एवं वाराणसी में हुई। हिन्दी के अतिरिक्त आप संस्कृत, मराठी, बँगला, उर्दू, गुजराती आदि भाषाओं के भी गहरे ज्ञाता हैं।

मिलिंदजी उन गिने चुने श्रमजीवी लेखकों, कवियों तथा पत्रकारों में हैं, जिन्होंने अपनी कलम को कभी बेचा नहीं। सन् १९२० से लेकर आज तक निरंतर साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में उन्होंने बड़े दबंगपन से काम किया। श्री मिलिंद प्रसिद्ध स्वतंत्रतासंग्राम-सेनानी भी रहे हैं।

मिलिंदजी की प्रतिभा बहुमुखी है। उनकी रचनाओं में देश की राजनैतिक उथल-पुथल, ऐतिहासिक घटना तथा नवीन विचारधाराओं के संघर्ष की जीवंत झाँकी मिलती है। देशप्रेम से आरंभ होकर उनकी साधना मानव-प्रेम तक पहुँची है। वे प्रगतिशील होने के साथ-साथ कलात्मक और विचार-प्रवण होने के साथ-साथ रससिक्त भी हैं।

विद्रोही साधक और कलम के धनी श्री मिलिंदजी की अब तक कोई दो दर्जन कृतियाँ प्रकाशित और पुरस्कृत हुई हैं। इनमें छह नाटक, सात कवितासंग्रह, तीन खंडकाव्य, एक व्यंग्यसंग्रह और दो निबंधसंग्रह हैं, जिनमें प्रताप-प्रतिज्ञा, गौतम नंद, प्रियदर्शी अशोक, बलिपथ के गीत, नई किरण, वीरांगना का बलिदान, सांस्कृतिक प्रश्न और बिल्लो का नकछेदन अत्यंत चर्चित रहे हैं। श्री मिलिंद की रचनाधर्मिता बद्धमूल रूढ़ियों की सीमा को लाँघने में विश्वास रखती है। आपकी रचनाओं में जहाँ भावों, विचारों, अनुभूतियों और कल्पना की उत्कृष्टता है, वहीं परिमार्जित और लालित्यपूर्ण भाषा की विदग्धता भी है। वे हिन्दी की सर्जनात्मक भाषा के बुनियादी

शिल्पियों में हैं। मौलिक अनुभूति एवं चिंतन का स्वर आपकी रचनाओं का प्राण है। परिषद् को प्रसन्नता है कि श्री मिलिंदजी की महत्त्वपूर्ण साहित्यिक सेवाओं का सम्मान करते हुए उन्हें इस वर्ष ग्वालियर विश्वविद्यालय ने डी. लिट्. की मानद उपाधि से विभूषित किया है।

हिन्दी की राष्ट्रीय विचारधारा के प्रतिनिधि वरिष्ठ कवि, भारतीय संस्कृति के समर्थ समाराधक, प्रसिद्ध नाटककार, कवि, निबंधकार एवं विचारक श्री मिलिंदजी को उनकी सुदीर्घ और यशस्वी साधना के लिए राज्य की साहित्य अकादमी म. प्र. साहित्य परिषद् सम्मानित करते हुए उन्हें पाँच सहस्र रुपए सादर भेंट कर रही है।

अन्त में, यही कहना है कि निस्स्पृह, मौन और आत्मवेधी साधना का संमान, संमान नहीं, समाज के द्वारा कृतज्ञता-ज्ञापन है।

—परिषद् के प्रकाशन से

एक श्रेष्ठ, सक्रिय और संवेदनशील बुजुर्ग कलाकार के रूप में श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिंद की उपलब्धियाँ और प्रतिष्ठा बहुमान्य है।

—अशोकवाजपेयी, सचिव,

सितंबर, १९८१ मध्यप्रदेश कला परिषद्, भोपाल (मध्यप्रदेश)

सम्मान्य श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द

मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य सम्मेलन
के पंचम प्रादेशिक अधिवेशन के
अवसर पर आपकी ऐतिहासिक
साहित्यिक सेवाओं की सराहना करते
हुए हम आपका सादर अभिनंदन
करते हैं।

ग्वालियर
३० दिसम्वर, १९६९

सदस्य, स्वागतकारिणी समिति

जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर

द्वारा विशेष दीक्षांत समारोह में
श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द को डॉक्टर ऑफ लैटर्स
(सम्मानार्थ) की उपाधि से अलंकृत किए जाने
के सुअवसर पर कला संकाय के
संकायाध्यक्ष द्वारा पठित

प्रशस्ति-पत्र

माननीय कुलपति महोदय,

मैं आपके समक्ष हिन्दी के प्रख्यात साहित्यकार तथा कुशल पत्रकार श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिंद को प्रस्तुत करता हूँ।

श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिंद का जन्म ग्वालियर जिले के मुरार नगर में दिनांक १९ नवंबर १९०७ ई. को हुआ। श्री मिलिंद की प्रारंभिक शिक्षा मुरार हाईस्कूल में हुई। महात्मा गाँधी जी के असहयोग आंदोलन से प्रेरित होकर इन्होंने सरकारी विद्यालय छोड़कर सन् १९२० में राष्ट्रीय विद्यालय में प्रवेश प्राप्त किया। मैट्रिक तक इनकी शिक्षा तिलक राष्ट्रीय विद्यालय, अकोला में संपन्न हुई। सन् १९२५ में पुणे से इन्होंने मेट्रीकुलेशन परीक्षा उत्तीर्ण की। तदुपरांत काशी-विद्यापीठ, वाराणसी में आपने उच्च शिक्षा प्राप्त की। श्री मिलिंद हिंदी के अतिरिक्त संस्कृत, अँग्रेजी, उर्दू, मराठी, गुजराती तथा बँगला आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता हैं।

श्री मिलिंद हिंदी के एक जागरूक एवं जीवंत कृतिकार रहे हैं। उनका रचनाकाल सन् १९२९ से आज तक फैला हुआ है। विगत ५० वर्षों की सतत साहित्यसाधना के क्रम में उन्होंने हिंदी को अनेक श्रेष्ठ ग्रंथरत्न दिए हैं। 'प्रताप-प्रतिज्ञा', 'समर्पण', 'गौतम नंद', 'अशोक की आशा', 'वीर चंद्रशेखर' तथा 'जय जनतंत्र' उनके प्रसिद्ध नाटक हैं।

'जीवन-संगीत', 'नवयुग के गान', 'वलिपथ के गीत', 'भूमि की अनुभूति', 'मुक्तिका' तथा 'पूर्णा' आदि उनके सशक्त काव्य-संग्रह हैं। 'स्वतंत्रता की बलिवेदी' एवं 'मृत्युंजय मानव' उनके प्रसिद्ध खण्ड-काव्य हैं। 'चिंतनकण' और सांस्कृतिक प्रश्न' उनके निबंध-संग्रह हैं। 'दिल्लो का नकछेदन' उनकी व्यंग्य-विनोद-प्रधान कृति है। 'वीरांगना का बलिदान' उनका प्रकाश्य खंड-काव्य है। इनमें से उनकी अनेक कृतियाँ मध्यप्रदेश तथा उत्तरप्रदेश की राज्य-सरकारों तथा भारत सरकार द्वारा पुरस्कृत हुई हैं। उनकी कुछ कृतियाँ माध्यमिक शिक्षा-मंडलों तथा विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में भी निर्धारित हैं। मिलिंद जी का साहित्य राष्ट्रीयता, मानवता तथा संस्कृति के उच्च मूल्यों की प्रतिष्ठा करता हुआ समाज तथा राष्ट्र को शक्ति और प्रेरणा प्रदान करता है।

श्री मिलिंद बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के अनेक आयाम हैं। वे समाजसेवा, राजनीति और पत्रकारिता के क्षेत्र में भी महत्त्वपूर्ण कार्य करते रहे हैं। जुलाई १९२० से जून १९७० तक वे राजनीति में सक्रियतापूर्वक भाग लेते रहे हैं। सन् १९४२, १९४८, १९५०, १९६४, १९६६ तथा १९६८ में उन्होंने विविध आंदोलनों के क्रम में जेल-यात्राएँ की हैं। राष्ट्रकर्मी के रूप में श्री मिलिंद का योगदान उल्लेखनीय रहा है। वे स्वतंत्रतासंग्राम के सेनानी के रूप में राष्ट्रीय स्तर पर संमान प्राप्त कर चुके हैं। वे मध्यप्रदेश राज्य स्वतंत्रता-संग्राम सैनिक परामर्शदात्री समिति के सदस्य भी रहे हैं। वे ग्वालियर स्टेट कांग्रेस के प्रधानमंत्री, मध्यभारत प्रांतीय स्टेट कांग्रेस की कार्यसमिति के सदस्य, मध्यभारत समाजवादी दल के प्रांतीय-प्रमुख तथा उसकी प्रांतीय संसदीय समिति के अध्यक्ष भी रह चुके हैं।

पत्रकारिता के क्षेत्र में भी श्री मिलिंद की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय रही हैं। वे हिंदी, उर्दू, अँग्रेजी, गुजराती, मराठी तथा बँगला आदि अनेक भाषाओं के दैनिक पत्रों के प्रतिनिधि रहे हैं। पंजाब तथा ग्वालियर से प्रकाशित 'भारती' पत्रिका तथा ग्वालियर से प्रकाशित अर्द्ध साप्ताहिक तथा

साप्ताहिक 'जीवन' के वे यशस्वी संपादक रहे हैं। मध्यप्रदेश शासन के साप्ताहिक पत्र 'मध्यप्रदेश-संदेश' के साहित्यिक विशेष अंश के वे अशासकीय परामर्शदाता रहे हैं। डॉ. राममनोहर लोहिया द्वारा मासिक पत्र 'जन' के संपादकमंडल में उन्हें सादर नियुक्त किया गया था।

श्री मिलिंद 'आकाशवाणी' के इंदौर और भोपाल केन्द्रों की परामर्श-दात्री समितियों में भी रहे हैं। मध्यप्रदेश शासन के भाषा-विभाग की ओर से अभावग्रस्त साहित्यकारों को वित्तीय सहायता दिलानेवाली समिति के भी वे अध्यक्ष रह चुके हैं। 'आकाशवाणी' की केन्द्रीय हिंदी कार्यक्रम परामर्शदात्री समिति, म. प्र. शासन की प्रेस सलाहकार समिति तथा राज्य साहित्य अकादमी तथा राष्ट्रीय साहित्य अकादमी के भी वे सदस्य रहे हैं। मध्य-भारत श्रमजीवी पत्रकार-संघ, मध्यभारत हिंदी साहित्य सम्मेलन, नव-संस्कृति संघ, ग्वालियर संभाग साहित्य परिषद्, साहित्य-साधना संसद् तथा सोशलिस्ट मजदूर यूनियन, ग्वालियर के वे अध्यक्ष रह चुके हैं। ग्वालियर नगर निगम के वे प्रभावशाली पार्षद भी रहे हैं।

सन् १९६५ में मध्यप्रदेश हिन्दी साहित्य के जबलपुर संमेलन में, सन् १९६९ में म. प्र. हिंदी साहित्य संमेलन के ग्वालियर अधिवेशन में तथा सन् १९६९ में ही मध्यभारतीय हिंदी साहित्य सभा ग्वालियर में उनकी उल्लेख-नीय और प्रशंसनीय साहित्यसेवा के लिए उन्हें अभिनंदित किया गया। श्री मिलिंद ने अपने प्रारंभिक जीवन में शांति-निकेतन और महिला-आश्रम वर्धा जैसी गौरवमयी शैक्षणिक संस्थाओं में अध्यापनकार्य भी किया है। इस प्रकार विगत पाँच दशकों में वे साहित्य, संस्कृति, शिक्षा, राजनीति और समाज-सेवा के क्षेत्रों में अथक सेवाएँ करते रहे हैं। वे सत्ता की अपेक्षा सेवा में अधिक आस्था रखते रहे हैं। जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर आज उन्हें सम्मानित करके गौरव का अनुभव कर रहा है। उन्होंने डॉक्टर ऑफ लैटर्स (संमानार्थ) उपाधि को ग्रहण करना स्वीकार करके हमें उपकृत किया है।

ग्वालियर —पन्द्रह मार्च, १९८०

अभिनंदन-पत्र

श्री जगन्नाथप्रसाद मिलिंद

मान्यवर,

मध्यप्रदेश की ग्वालियर-नगरी के उपनगर मुरार में जन्म पाकर अपनी साहित्य-साधना से आपने भारत का मुख उज्ज्वल किया है। लगातार चालीस वर्षों से आप लगन के साथ साहित्य का सृजन कर हिंदी भाषा का भंडार भर रहे हैं। मध्यप्रदेश इस बात पर गर्व किये बिना नहीं रह सकता कि उसने आपके जैसा साहित्य का साधक पाया, जिसे काल और स्थान की सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। आज प्रत्येक हिंदी-भाषी को आप पर गर्व है।

जब आपने चालीस वर्ष पूर्व कवि के रूप में साहित्य की सेवा प्रारंभ की थी, तब वर्तमान हिंदी का रूप अपनी किशोरावस्था में था। आपकी कविताओं ने खड़ी बोली को निखारा। आपकी रचनाओं में जहां भावों, विचारों, अनुभूतियों और कल्पनाओं की उत्कृष्टता है, वहीं परिमार्जित भाषा का लालित्य भी है। वर्तमान खड़ी बोली के निर्माताओं में आपको भी सदा याद किया जायगा। आपकी 'जीवन-संगीत', 'बलिपथ के गीत', 'नवयुग के गान' और 'भूमि की अनुभूति' आदि काव्य-कृतियाँ हिंदीसाहित्य की अमर रचनाएँ बन गयी हैं। आपने अपनी कविताओं में जहां मानव-हृदय की चिरंतन अनुभूतियों को अंकित किया है, वहीं राष्ट्र और समाज की अपनी युग की वेदना और समस्याओं को भी चित्रित किया है तथा भारतीय युवकों को स्फूर्ति प्रदान की है। आपकी 'मेरे किशोर, मेरे कुमार' जैसी रचनाओं ने युवकों में जो उत्साह उभारा, वह सर्वविदित है।

एक प्रतिभाशाली कवि के साथ ही आप सफल नाटककार भी हैं, यह भी हमारे लिए कम गर्व करने की बात नहीं है। आपके 'प्रताप-प्रतिज्ञा' नाटक ने हिंदी के नाटक-साहित्य में नया कीर्तिमान स्थापित किया था और हिंदी-भाषा के आनेवाले नाटककारों को पथ प्रदर्शित किया था। आपकी नवीन कृतियाँ 'समर्पण' और 'गौतम नंद' आपकी साहित्य-साधना के

विकसित पुष्प हैं। हमें विश्वास है कि आप हिंदी के नाटक-साहित्य-भंडार को अपनी अमर कृतियों से भरते रहेंगे।

आपके साहित्य में भावनाओं के लालित्य के साथ ज्ञान की गरिमा का अद्भुत संमिश्रण है। आपकी 'चिंतनकण' निबंध-पुस्तक में एक उत्कृष्ट विचारक के दर्शन होते हैं।

पत्रकार के रूप में भी आपने हिंदी भाषा और अपने देश की स्तुत्य सेवा की है। लाहौर से प्रकाशित 'भारती' पत्रिका ने, जिसके आप संपादक थे, आपकी संपादन-प्रतिभा को उजागर किया था। ललितसाहित्य के साथ ही उस पत्रिका में भारतीय संस्कृति और दर्शन संबंधी विचारधाराएँ पाठकों के संमुख आई थीं। ग्वालियर से प्रकाशित अर्द्धसाप्ताहिक पत्र 'जीवन' में भी आपकी संपादन-कुशलता स्पष्ट प्रकट थी।

आज आपका अभिनंदन कर मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य संमेलन गौरवान्वित है।

विनीत

द्वारकाप्रसाद मिश्र

अध्यक्ष

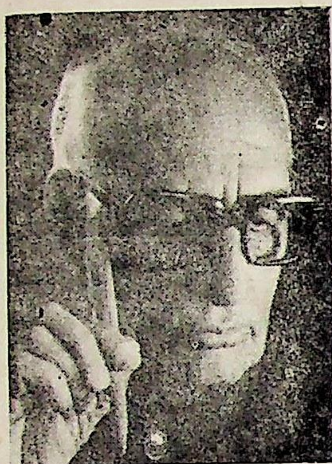
जबलपुर
२०-१-६५

तथा म. प्र. हिंदी साहित्य-संमेलन
के समस्त सदस्यगण

मध्यप्रदेश-श्रमजीवी-पत्रकार-संघ ने अपने वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर मिलिंदजी की दीर्घकालीन मूल्यवान् सेवाओं के लिए मिलिंदजी का अभिनंदन करने का निश्चय किया है। यह अधिवेशन रतलाम में २० एवं २१ जनवरी १९७३ को आयोजित किया गया है। देश में पत्रकारिता के क्षेत्र में मिलिंद जी के श्लाघनीय एवं वंदनीय योगदान के प्रति नई पीढ़ी पूर्णतया नमन की भावना से यह अभिनंदन-समारोह आयोजित कर रही है।

—महामंत्री, मध्यप्रदेश-श्रमजीवी-पत्रकार-संघ, भोपाल

दूरभाष : २१९९१



साहित्यवाचस्पति डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद-शोध-संस्थान तथा पुस्तकालय

दाल बाजार, ग्वालियर (म. प्र.)

१. 'जगन्नाथप्रसाद मिलिंद : व्यक्तित्व और कृतित्व' विषय पर कुमारी वीना शर्मा शोधार्थिनी को डॉक्टर सुरेशचंद्र शर्मा, मसूरी के निर्देशन में मेरठ-विश्वविद्यालय द्वारा सन् १९७७ में विद्यावाचस्पति की उपाधि दी गई।

२. 'जगन्नाथप्रसाद मिलिंद के साहित्य में व्यक्त राष्ट्रीय भावना' विषय पर श्री जयगोपाल सेठी शोधकर्ता को श्री देवीचरण रस्तोगी, मेरठ के निर्देशन में मेरठ-विश्वविद्यालय द्वारा विद्यावाचस्पति की उपाधि दी गई।

३. 'मिलिंदजी का नाट्यसाहित्य'— विषय पर सुश्री शांति अग्रवाल शोधार्थिनी ने डॉक्टर भगवत्व्रत मिश्र, ग्वालियर के निर्देशन में विक्रमविश्वविद्यालय, उज्जैन में सन् १९६४ में एम. ए. हिंदी उत्तरार्द्ध में शोधप्रबंध प्रस्तुत किया।

४. 'जगन्नाथप्रसाद मिलिंद के नाटक'-- विषय पर श्री रामप्रताप द्विवेदी शोधार्थी ने डॉक्टर कृष्णचंद वर्मा, भोपाल के निर्देशन में विक्रमविश्वविद्यालय, उज्जैन में सन् १९६८ में एम. ए. हिंदी उत्तरार्द्ध में शोधप्रबंध प्रस्तुत किया।

भारतवर्ष के अनेक विश्वविद्यालयों में साहित्यवाचस्पति डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद के साहित्य पर शोध-कार्य चल रहे हैं।

अभिमत तथा समीक्षाएँ

डॉक्टर प्राध्यापक हरवंशलाल शर्मा,

कुलपति, बुन्देलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी (उत्तरप्रदेश) तथा
सभापति, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग (उत्तरप्रदेश)

डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद हिंदीजगत् के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार हैं। साहित्य की अनेक विधाओं में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। नाटकों एवं काव्यों में उन्होंने एक कीर्तिमान स्थापित किया है। ऐतिहासिक नाटकों की रचना में वह सिद्धहस्त हैं। अब तक वह छह ऐतिहासिक नाटक लिख चुके हैं। उपन्यास के क्षेत्र में भी उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है।

डॉक्टर कृष्णकान्त तिवारी, एम. एस-सी., पी-एच. डी.

कुलपति, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (मध्यप्रदेश)

साहित्यवाचस्पति डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद ने अपने साहित्य-पुष्पहार में नाटक, उपन्यास, काव्य आदि के बाईस पुष्प पिरोये हैं।

सरल भाषा और सीधी शैली में लिखी गई सभी रचनाओं में एक सर्वव्यापी तत्त्व है, मिलिंद जी का अगाध देशप्रेम। स्वतंत्रतासेनानी मिलिंदजी की साहित्यिक कृतियाँ भारत के इतिहास के स्वातंत्र्यसंग्रामों द्वारा प्रेरित हों, यह स्वाभाविक ही है। इसीलिये, इनकी लोकप्रिय रचनाओं में 'प्रताप-प्रतिज्ञा' का प्रथम स्थान है, जो राणा प्रताप के शौर्य एवं अद्वितीय देशप्रेम को चित्रित करती है, जो भयानक यातनाओं और दुस्तर कठिनाइयों में भी अडिग रहा। तात्याटोपे की १८५७ के स्वतंत्रतासंग्राम में भूमिका सर्वविदित है, लेकिन, उसकी पार्श्वभूमि उतनी नहीं। अपने ऐतिहासिक उपन्यास 'क्रांतिवीर तात्याटोपे' में मिलिंद जी ने उस समय की सामाजिक एवं राजनैतिक स्थिति की भूमिका में तात्या टोपे के व्यक्तित्व का जिस खूबी से विकास किया है, वह आप-जैसा एक स्वतंत्रतासेनानी ही कर सकता है। यही बात 'क्रांतिवीर चन्द्रशेखर' नाटक में भी है। पक्के गाँधी-वादी होते हुए भी मिलिंद जी ने आधुनिक भारत के अमर स्वतंत्रता-

सेनानियों में ऐसे व्यक्तियों को अपनी इस नाट्य रचना के लिये चुना, जो अहिंसा के सिद्धांत को नहीं मानते थे, जो सशस्त्र क्राँति में विश्वास रखते थे।

'जय स्वतंत्र जनतंत्र' नाटक सहित मिलिंद जी की रचनाओं को अखिलभारतीय मान्यता मिली है। उनका साहित्य ठेठ भारतीय साहित्य है, जिसकी पार्श्वभूमि भारत के इतिहास की महत्त्वपूर्ण घटनाएँ हैं।

स्वतंत्रता के बाद के भारत में, जब हम अपनी भारतीयता एवं संस्कृति को 'पाश्चात्य' मूल्यों की चपेट में भूले जा रहे हैं, मिलिंद जी जैसे साहित्यकारों की बहुत ही महत्त्वपूर्ण भूमिका है, जो देश के इतिहास को नई पीढ़ी के सामने आकर्षक एवं ग्राह्य ढंग से चित्रित कर रहे हैं। मुझे आशा है कि श्रद्धेय मिलिंद जी की लेखनी सदा सक्रिय रहेगी और आने वाली पीढ़ियों के लिए ऐसे साहित्य का सर्जन करती रहेगी, जो हमें भारतीय बनाए रखे।

श्री प्रभात शास्त्री,
प्रधानमंत्री, हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग (उत्तरप्रदेश)

आदरणीय मिलिन्द जी,

मुझे आपको यह सूचित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि हिंदी साहित्य संमेलन, प्रयाग ने आपकी महनीय साहित्य-सेवाओं को दृष्टिगत रखते हुए आपको हिंदी जगत् की सर्वोच्च मानद उपाधि "साहित्यवाचस्पति" से विभूषित करने का निश्चय किया है।

आपसे अनुरोध है कृपया एतदर्थ अपनी स्वीकृति प्रेषित करने का कष्ट करें जिससे एतद्निमित्त प्रशस्तिपत्र एवं ताम्रपत्र आदि का निर्माण कराया जा सके।

संमेलन के आगामी दीक्षांत समारोह में इस उपाधि से आपको अलंकृत करने का सर्वसंमत निर्णय संमेलन की स्थायी समिति ने किया है। आपकी

स्वीकृति के अनन्तर उपाधि वितरण समारोह की तिथि का निश्चय कर आपको विस्तृत कार्यक्रम की अग्रिम सूचना प्रेषित की जायेगी।

विश्वास है संमेलन की इस अर्चना को आप स्वीकार कर अनुगृहीत करेंगे।

डॉक्टर वासुदेव नन्दन प्रसाद,
विश्वविद्यालय-प्राध्यापक तथा अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया (बिहार)

डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद मध्यप्रदेश के ही नहीं, सारे हिंदी-संसार के विख्यात मान्य साहित्यकार हैं। उनकी साहित्यिक सेवाएँ अप्रतिम हैं। उनमें उनका राष्ट्र-प्रेम, युग-बोध और जीवन्त इतिहासपरकता बड़ी प्रेरक और प्रभावप्रद है। आज जबकि देश में चतुर्दिक् नैतिक ह्रास और राष्ट्रीयता का विखंडन बड़ी तेजी से होता जा रहा है, उनकी ओजस्विनी कृतियों की बड़ी आवश्यकता महसूस होती है। निस्संदेह, वह आज की निष्प्राणता में नई जान फूँक सकते हैं।

साहित्याचार्य डॉक्टर प्रेमस्वरूप गुप्त, एम. ए., पी-एच. डी., डी. लिट्.
प्राध्यापक, हिंदी विभाग, अलीगढ़ विश्वविद्यालय, अलीगढ़ (उत्तरप्रदेश)

डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद अपने युग में प्रतिष्ठित साहित्यकार रहे हैं। उनका मूल स्वर भारतीय संस्कृति के उन्नयन के लिए आस्था से अनुप्लावित रहा है। यदि सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों के संप्रेषण की कभी अपेक्षा हो, यदि जातीय स्वाभिमान और आत्म-गौरव की प्रेरणा अभीष्ट हो तो उनकी कृतियाँ कभी भी पुरानी नहीं है।

डॉक्टर बनारसीदास चतुर्वेदी,
फीरोजाबाद (उत्तरप्रदेश)

डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद सच्चे अर्थों में श्रमजीवी हैं और डॉक्टर मिलिंद की साधना हम सबके लिए अनुकरणीय है।

साहू रमेशचन्द्र जैन,
अध्यक्ष, प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया लिमिटेड,
अध्यक्ष, इंडियन एण्ड ईस्टर्न न्यूजपेपर्स सोसायटी तथा
कार्यकारी निदेशक, टाइम्स ऑफ इंडिया समाचार-पत्र समूह

डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद जी स्वतंत्रता-सेनानी हैं। उनकी कृति में स्वातंत्र्य-प्रेम मुखरित नहीं हो, ऐसा हो नहीं सकता।

मिलिंद जी वास्तव में बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं। वह कवि हैं, नाटकार हैं, निबंधकार हैं, कहानीकार हैं और हैं उपन्यासकार। डॉक्टर मिलिंद हिंदी के बहुविधा वाले शीर्षस्थ साहित्यकारों में हैं।

डॉक्टर कान्तिकुमार जैन,
प्राध्यापक, माखनलाल चतुर्वेदी पीठ,
हिंदी विभाग, सागर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

जगन्नाथप्रसाद मिलिंद हिंदी की राष्ट्रीय काव्य-धारा के अग्रगण्य कवियों में है। एक सफल और सार्थक नाटककार के रूप में वह अप्रतिम हैं। यही नहीं, एक गंभीर चिंतक और प्रेरणाप्रद संस्मरण-लेखक के रूप में उनका स्थान महत्त्वपूर्ण है।

डॉक्टर प्रेमशंकर, डी. लिट्.,
आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
सागर विश्वविद्यालय, सागर (मध्यप्रदेश)

डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद ने रचनाकारों की नई पीढ़ियों को प्रेरणा दी है। उनकी रचनाएँ स्वयं उनके गौरव का प्रमाण हैं।

प्राध्यापक प्रभात,
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, बम्बई विश्वविद्यालय, बम्बई (महाराष्ट्र)

मिलिंदजी के नाम से शोध-संस्थान तथा पुस्तकालय खोलकर उनकी साधना का समुचित संमान किया गया है। इसके लिए बधाई।

डॉक्टर प्राध्यापक महेन्द्रप्रसाद, एम. एस.,
अधिष्ठाता, चिकित्सा संकाय, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर तथा आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, शल्य चिकित्सा विभाग, गजराराजा शासकीय चिकित्सा महाविद्यालय, ग्वालियर

डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद जी मिलिंद ने हिंदी-साहित्य-जगत् में समाज तथा देश के लिए जो सेवाएँ अर्जित की हैं, वे निस्संदेह ही अविस्मरणीय हैं। नाटकों एवं काव्यों में उनका योगदान चिरकाल तक साहित्य के पृष्ठों में प्रदीप्त रहेगा। इसके वावजूद भी राष्ट्र और समाज से उतना संमान नहीं मिला, जितना कि उन्हें मिलना चाहिए।

मेरी ईश्वर से सदैव यही प्रार्थना है कि श्री मिलिंद जी की रचनाएँ सदैव पाठकों को देश-प्रेम, त्याग आदि भावनाओं की ओर अग्रसर करती रहें, जिससे साहित्य और समाज में त्याग और प्रेम की सरिता प्रवाहित हो सके।

जगन्नाथप्रसाद गुप्त, एम. ए., एल-एल. एम.
अधिवक्ता, मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय, ग्वालियर

हमारे देश के लेखकों की यह शिकायत रही है कि प्रकाशक उनका अनुचित शोषण करते हैं। समता प्रकाशन ग्वालियर ने लेखक को मुद्रित मूल्य पर पच्चीस प्रतिशत रॉयल्टी देने का तय करके एक बड़ा स्वागत-योग्य कदम उठाया है। अन्य प्रकाशक भी यदि इस कदम का अनुसरण करें, तो, लेखकों के साथ वर्षों से चला आ रहा अन्याय समाप्त हो जावेगा।

डॉक्टर हरिमोहन, डी. फिल्.,
हिंदी तथा आधुनिक भारतीय भाषा-विभाग, गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल (उत्तरप्रदेश)

डॉक्टर मिलिंद शोध संस्थान तथा पुस्तकालय की योजना निश्चित ही स्तुत्य है।

राकेश अचल

(दैनिक भास्कर, ग्वालियर दिनांक तीन जुलाई, सन् १९८३)

समता और क्रांति के सेनानी

डॉ. जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द



हिंदी साहित्य संमेलन प्रयाग के सभापति तथा बुन्देलखंड विश्व-विद्यालय के कुलपति डॉक्टर हरवंशलाल शर्मा (दाएँ) हिंदी जगत् की सर्वोच्च मानद उपाधि से विभूषित डॉक्टर जगन्नाथप्रसादजी मिलिंद (बाएँ) के साथ।

साहित्य के क्षेत्र में जीवन के मामले में चिरायु और कृतित्व के मामले में कालजयी होने का सौभाग्य जिन लोगों को प्राप्त है, उनमें डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद का नाम एक विशिष्ट स्थान रखता है।

समझौतों की जमीन से परे जीवन जीने वाले डॉक्टर मिलिंद जी की यह अपनी उपलब्धि ही मानी जायेगी कि उनके ७६वें वर्ष में उनके द्वारा लिखित प्रत्येक शब्द पाठकों के सामने मुद्रित होकर आ गया है। यह सौभाग्य बहुत कम रचनाकारों को प्राप्त हो पाता है। मिलिंदजी की यह उप-लब्धि किसी जोड़-तोड़ का परिणाम नहीं है, बल्कि इसके पीछे उनके द्वारा

लिखित शब्दों का वह आलोक है, जिसे जन-जन तक पहुंचाने का दायित्व कोई भी प्रकाशक सहज ही ढोने के लिए तैयार हो सकता है ।

एक मनुष्य के नाते डॉक्टर मिलिंदजो ने नैतिकता का वरण करते हुए देश में स्वाधीनता और समता के लिए हुई दो महान् जनक्रांतियों में न केवल खुलकर भाग लिया, वरन् जेल-यातनाएं भी सहीं । इस सबके परिणामस्वरूप उन्हें स्वाभिमानी आत्मसंतोष का वह नवनीत मिला, जिससे कि वह अपनी कलम के पैनेपन को निरंतर कायम रख सके ।

डॉक्टर मिलिंद जी की लम्बी जीवन यात्रा का आंकलन कर हम पाते हैं कि उनकी छवि कलम के धनी विद्रोही साधक के रूप में हमारे सामने स्पष्ट होकर आती है । उनकी प्रथम कृति ऐतिहासिक नाटक 'प्रताप-प्रतिज्ञा' ने सन् १९२९ में उनके भीतर बैठी उन तमाम संभावनाओं को तब उजागर कर दिया था, जबकि 'प्रताप-प्रतिज्ञा' का हिंदी जगत् में हाथों हाथ स्वागत हुआ था । 'प्रताप-प्रतिज्ञा' से लेकर 'क्रांतिवीर तात्या टोपे' सन् १९८१ तक के पचास वर्षों की लम्बी अवधि में मिलिंद जी ने हिंदी साहित्य को लगभग दो दर्जन अमूल्य कृतियां दी ।

डॉक्टर मिलिंद जी की सभी रचनाओं एवं उनके शब्दों ने जहां एक ओर रूढ़िवादिता पर पूरी तरह से प्रहार किए हैं, वहीं दूसरी ओर भावों, विचारों, अनुभूतियों और कल्पनाओं के धरातल पर अपनी रचनाओं को परिमार्जित एवं लालित्यपूर्ण भाषा से अलंकृत भी किया है । उनकी सहज प्रवाहमान और प्रहारक भाषा शैली को देखते हुए उन्हें हिंदी की सृजनात्मक भाषा के शिल्पियों में हम सम्मिलित करते हैं । उनकी सभी रचनाओं में चाहे वे कवितायें हों या नाटक, उपन्यास हो या कहानियां, समता और क्रांति का स्वर मुखरित होता है । विभिन्न देशकालों में बोलने वाले उनके पात्र इसी अलख को जगाए रखने वाले हैं ।

आज जबकि देश में चतुर्दिक नैतिक पतन और राष्ट्रीयता का विखंडन हो रहा है, मिलिंदजी की ओजस्विनी कृतियों की बड़ी आवश्यकता है ।

साहित्यवाचस्पति डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद साहित्य माला की लोकहितकर तथा लोकप्रिय पुस्तकें

ऐतिहासिक उपन्यास

१. क्रांतिवीर तात्या टोपे

ऐतिहासिक नाटक

२. प्रताप-प्रतिज्ञा
३. जय स्वतंत्र जनतंत्र
४. क्रांतिवीर चंद्रशेखर
५. अशोक की अमर आशा
६. शहीद को समर्पण
७. त्यागवीर गौतम नंद

ऐतिहासिक खंडकाव्य

८. वीरांगना लक्ष्मीबाई का बलिदान
९. मृत्युंजय मानव गणेश
१०. स्वतंत्रता की बलिवेदी पर

संस्मरण

११. महापुरुषों के संस्मरण

कवितासंग्रह

१२. अंतिमा
१३. नई किरण
१४. बलिपथ के गीत
१५. नवयुग के गान
१६. भूमि की अनुभूति
१७. पूर्णा
१८. मुक्ति के स्वर
१९. जीवनसंगीत

कथासंग्रह

२०. बिल्लो का नकछेदन

निबंधसंग्रह

२१. चिंतनकण
२२. सांस्कृतिक प्रश्न

साहित्यवाचस्पति डॉक्टर जगन्नाथप्रसाद मिलिंद साहित्य माला के अधिकृत प्रकाशक—

समता प्रकाशन,
मुख्यालय— नवीन भवन, दाल बाजार, ग्वालियर। दूरभाष : २१९९१, २१७६७

क्रांति प्रकाशन,
डॉक्टर मिलिंद भवन, पश्चिम सदर बाजार, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)

शाखाएँ : श्री देवकीनंदन कंचन भवन, २७ गुसांईंपुरा, खत्रियाना मार्ग झाँसी (उत्तरप्रदेश) दूरभाष : १०२५

—सर्वश्री मन्नीलाल गोपालदास भवन, पुराना शहर बाजार, धौलपुर (राजस्थान).

इतिहासाधारित सर्जनात्मक साहित्य में भारत के प्राचीन राजतंत्रों के प्रति जितना आकर्षण दृष्टिगोचर होता है, उतना प्राचीन भारतीय जनतंत्रों के प्रति नहीं। इस एकांगिता का रूढ़िभंजन एक साहसपूर्ण कार्य था, जिसे मैंने नम्रतापूर्वक करने का प्रयास किया। मेरा यह 'जय स्वतंत्र जनतंत्र' नाटक इस दिशा में मेरा एक साहित्यिक चरण है। इसके अनेक संस्करणों का प्रकाशन मेरे इस प्रयास के प्रति पाठकों की सद्भावना व्यक्त करता है। उससे प्रोत्साहित होकर मैंने इस नाटक के नवीनतम संस्करण में प्रचुर संशोधन, परिवर्तन तथा परिवर्धन करके इसे अद्यतन स्वरूप देने का प्रयास किया है। आशा है, वर्तमान तथा भावी स्वतंत्र भारतीय जनतंत्र के रक्षक भारतीय इससे अपने अतीत के जनतांत्रिक गौरव का अनुभव करेंगे।

○

साहित्यसाधना को संपूर्ण जीवन समर्पित करने के कारण मेरी समस्त पुस्तकें लोकप्रिय हुईं। किंतु, मैं अनेक वर्षों तक कतिपय पुराने प्रकाशकों की शोषणवृत्ति का शिकार बना रहा। लेखन के अतिरिक्त अन्य जीवन-धारण-साधन नहीं होने के कारण मुझे आर्थिक कष्ट सहने पड़े। किंतु, वह स्थिति अब बदलने लगी है। अभिनव प्रकाशन-योजना का आरंभ हुआ है। इसके अन्तर्गत अल्प समय ही में समता प्रकाशन ग्वालियर तथा क्रांति प्रकाशन मुरार ग्वालियर ने पाठकों की अश्लीलता से तथा मेरी शोषण से रक्षा करने के अपने संकल्प की पूर्ति में सफलता प्राप्त की है। अतः, समता प्रकाशन ग्वालियर तथा क्रांति प्रकाशन मुरार ग्वालियर को मैंने अपनी समस्त पुस्तकों का अधिकृत प्रकाशक नियुक्त किया है।

○

समता प्रकाशन, ग्वालियर तथा क्रांति प्रकाशन, मुरार-ग्वालियर द्वारा प्रकाशित मेरी नवीनतम शोषणमुक्त पुस्तकों को प्रोत्साहन देने के लिए मैं केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लोकशिक्षण संचालनालय मध्यप्रदेश, रेल मन्त्रालय, शिक्षा निदेशालय दिल्ली प्रशासन, मध्यप्रदेश के जिला शिक्षा कार्यालयों तथा अन्य सभी सहयोगियों को भी धन्यवाद देता हूँ।

ग्वालियर,
१७ मई सन् १९८३

—जगन्नाथप्रसाद मिलिन्द